WWW.NAVPRADESH.COM

आदित्यवर्णं तमसः परस्तात्

दैनिक

नव प्रदेश

प्रदेश के साथ पूरा देश...

रायपुर, बुधवार, 1 अप्रैल 2026 | शुक्ल पक्ष- चतुर्थी | विक्रम संवत -2083 / वर्ष-15 | अंक- 52 | पृष्ठ-12 मूल्य-4 रुपए | रायपुर, बिलासपुर, भोपाल, जबलपुर व रांची से एक साथ प्रकाशित

अमित शाह की डेडलाइन पर डेड हुआ नक्सलवाद

रायपुर/नवप्रदेश। राज्य में तैनात छत्तीसगढ़ पुलिस एवं केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बलों द्वारा समन्वय के साथ कार्य करते हुए माओवादी गतिविधियों पर प्रभावी अंकुश लगाया गया है। शासन की योजनाओं के बेहतर क्रियान्वयन, क्षेत्र में शांति व्यवस्था स्थापित करने तथा विकास कार्यों को गति प्रदान करने के लिए सुरक्षा बलों द्वारा लगातार प्रयास किए जा रहे हैं। सुरक्षा का माहौल निर्मित होने के कारण माओवादी एवं उनके समर्थक समाज की मुख्यधारा से जुड़ रहे हैं। नई सरकार के गठन के बाद माओवादी समस्या के समूल उन्मूलन के लिए संयुक्त कार्ययोजना के अंतर्गत आक्रमक कार्रवाई की जा रही है।

माओवादी घटनाओं में कमी

- 2018: 359
- 2019: 211
- 2020: 221
- 2021: 172
- 2022: 174
- 2023: 202
- 2024: 314
- 2025: 343
- 2026 (21 जनवरी तक)
- 2024-25 में आक्रमक अभियानों के कारण अस्थायी वृद्धि, परंतु 2026 में तेज गिरावट

नवीन सुरक्षा कैम्प

कुल 110 कैम्प स्थापित

प्रमुख जिले

- सुकमाः 24
- बीजापुरः 38
- नारायणपुरः 32

अन्य जिले शामिल

सड़क एवं पुल निर्माण

- 73 सड़कें (462 किमी)
- 28 पुल पूर्ण
- अंदरूनी क्षेत्रों में कार्य प्रगति पर

मोबाइल टॉवर

- कुल 783 मोबाइल टॉवर स्थापित
- 2जी से 4जी उन्नयनः 489 टॉवर

नियद नेल्ला नार योजना

- 494 गांवों में विकास कार्य
- 86 कैम्प क्षेत्रों में सुविधाएं
- 18 सामुदायिक एवं 25 व्यक्तिगत योजनाओं का लाभ

जांच एवं निगरानी

- 27 प्रकरण एनआईए को सौंपे गए
- एसआईए द्वारा 18 मामलों की जांच जारी
- उच्चस्तरीय साप्ताहिक एवं पाक्षिक समीक्षा

नियद नेल्लानार योजनाः बस्तर के विकास का नया रोडमैप

➡ **योजना का उद्देश्यः** छत्तीसगढ़ शासन द्वारा 28.02.2024 को लागू इस कार्ययोजना का मुख्य लक्ष्य नक्सल प्रभावित अंदरूनी क्षेत्रों में बुनियादी सुविधाएँ और सरकारी योजनाओं का लाभ पहुँचाना है।

➡ **सुरक्षा कैंपों से विकासः** बस्तर रेंज के सुकमा, बीजापुर, दंतेवाड़ा, नारायणपुर और कांकेर जिलों में अब तक स्थापित 86 नवीन कैंपों को विकास के केंद्र के रूप में विकसित किया गया है।

➡ **व्यापक कवरेजः** इन कैंपों के 10 किमी के दायरे में आने वाले 494 ग्रामों को प्राथमिकता के आधार पर मूलभूत सुविधाओं से जोड़ा जा रहा है।

➡ **विभागों का समन्वयः** 09 विभागों के माध्यम से 18 सामुदायिक सुविधाओं (जैसे स्कूल, स्वास्थ्य केंद्र, सड़क और बिजली) का विस्तार। 11 विभागों के माध्यम से 25 व्यक्तिमूलक योजनाओं (जैसे राशन कार्ड, आयुष्मान कार्ड, और पेंशन) का सीधा लाभ।

नवीन विस्तार (अक्टूबर 2025 से 20.01.2026): नारायणपुर, बीजापुर और सुकमा जिलों में 14 नए सुरक्षा कैंप स्थापित किए गए हैं। इनमें नारायणपुर के सितरम, कोड़ेनार-1, कोड़ेनार-2, अडिंगपार, मनडोडा, जटावर और बड़ापेंडा जैसे दुर्गम क्षेत्र शामिल हैं। बीजापुर के कस्तुरीपाड़, डोडीतुमनार और ताड़पालाघाटी तथा सुकमा के वंजलवाही, गोरगुण्डाहिल्स, पेद्दाबोड़केल और उरसांगल क्षेत्रों को योजना में जोड़ा गया है।

➡ **पंचायत विभाग की भूमिकाः** इन 14 नए कैंपों के 10 किमी दायरे में आने वाले गाँवों के चयन और सर्वे की कार्यवाही वर्तमान में पंचायत विभाग द्वारा की जा रही है।

नक्सल कलंक से मुक्ति; एक स्वर्णिम उपलब्धि

यशवंत धोटे
समूह संपादक

सही कहा है किसी शायर ने कि कौन कहता है आसमां में सुराख नहीं हो सकता एक पत्थर तो तबियत से उछालो यारो। नव प्रदेश छत्तीसगढ़ को अविभाजित मध्यप्रदेश से विरासत में मिली नक्सली समस्या का समाधान करने के लिए संकल्पित केन्द्र सरकार और छत्तीसगढ़ की विष्णदेव साय सरकार ने अंततः समाधान कर दिखाया। निर्धारित समय सीमा के भीतर 31 मार्च को छत्तीसगढ़ के माथे पर चस्पा नक्सलवाद का काला टीका मिट गया। अब हमारा छत्तीसगढ़ नक्सली हिंसा मुक्त हो गया। निश्चित रूप से यह एक स्वर्णिम उपलब्धि है जो प्रदेश और देश के इतिहास में स्वर्णक्षरों में दर्ज हो गया है। निश्चित रूप से इसके लिए प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी, केन्द्रीय गृहमंत्री अमित शाह, छत्तीसगढ़ के मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय और गृहमंत्री विजय शर्मा साधुवाद के पात्र है, जिन्होंने नक्सलमुक्त छत्तीसगढ़ बनाने के चिर प्रतीक्षित स्वप्न को साकार करके ऐसा चमत्कार कर दिखाया है कि आज सभी इस चमत्कार को नमस्कार कर रहे हैं। नक्सलियों के खिलाफ लड़ाई में अपने प्राणों की आहुति देने वाले केन्द्रीय सुरक्षा बल तथा छत्तीसगढ़ पुलिस के वीर शहीदों को भी नमन जिनके लहू का एक कतरा भी व्यर्थ नहीं जाने दिया गया और दुर्दांत नक्सलियों का पूरी तरह सफाया हो गया। पृथक राज्य के रूप में जब नव प्रदेश छत्तीसगढ़ अस्तित्व में आया था तब सरगुजा और बस्तर जैसे आदिवासी बहुल संभाग नक्सली हिंसा की आग में झुलस रहे थे। वहां नक्सलियों की एक तरह से समानांतर सरकार चलती थी। उनकी मर्जी के बिना एक पत्ता भी नहीं खड़कता था। नतीजतन सरकार के तमाम प्रयासों के बाद भी सुदूर आदिवासी गांवों में गरीब आदिवासी की कुटिया तक विकास की रौशनी नहीं पहुंची थी। नक्सली खौफ के साए में जी रहे इन आदिवासियों ने गंदी गाली लगने वाली जिदंगी को अपनी नियति मान लिया था। वे लंबे समय तक दो पाटों के बीच पीसते रहे, लेकिन उफ भी नहीं कर पाते थे।

जब 2005 में डॉ. रमन सिंह के नेतृत्व में नव प्रदेश छत्तीसगढ़ में पहली निर्वाचित सरकार बनीं तब लाल आतंक के खिलाफ अभियान का सूत्रपात हुआ। नतीजतन सरगुजा क्षेत्र नक्सली आतंक से मुक्त हो गया। बस्तर की भौगोलिक स्थिति ऐसी है कि वहां यह काम कठिन सिद्ध हुआ। इस बीच प्रदेश में कांग्रेस की सरकार बनने के बाद तो यह अभियान ठप ही पड़ गया। रस्म अदायगी के रूप में जो कार्रवाई हुई भी तो उसमें इन पंक्तियों को चरितार्थ किया कि मर्ज बढ़ता ही गया ज्यों-ज्यों दवा की..।

फिर सत्ता बदली और विष्णुदेव साय के नेतृत्व में नई सरकार बनीं तो फिर नये सिरे से नक्सली आतंक मुक्त छत्तीसगढ़ बनाने की कार्ययोजना बनी। 31 मार्च 2026 की डेडलाइन तय की गई। केन्द्रीय गृहमंत्री अमित शाह के दिशा-निर्देश पर माओवादियों के खिलाफ अंदर की लड़ाई शुरू हुई। आत्मसमर्पण करने वाले नक्सलियों के लिए नई नीति बनाई गई। जिसका सुपरिणाम यह निकला कि 1 दिसंबर 2023 से अब तक 2898 नक्सलियों ने आत्मसमर्पण किया। 2038 नक्सली गिरफ्तार किए गए। वहीं मुठभेड़ में 535 नक्सली ढेर किए गए। इन नक्सलियों के पास से 1350 हथियार और 1501 माइंस जब्त किए गए। यह सब संभव हुआ राज्य और केन्द्र सरकार के ज्वाइंट एक्शन प्लान से... पहली बार साय सरकार के कार्यकाल के दौरान नक्सली उन्मूलन के लिए आक्रामक अभियान चलाया गया। जिससे नक्सलियों के पैर उखड़ने लगे। बस्तर में कायम अंधेरा छटने लगा और अब वहां नक्सली हिंसा का पूरी तरह से सफाया हो गया। बस्तर के कांकेर जिले में ही उंगलियों पर गिने जाने वाले नक्सली बचे हुए हैं। वे भी हिंसा से दूर है। उनकी सरकार ने पहचान कर ली है। छत्तीसगढ़ के गृहमंत्री विजय शर्मा के मुताबिक इनकी संख्या बीस-पच्चीस है। यदि वे अपने पुनर्वास के लिए आगे नहीं आएंगे तो जल्द ही गिरफ्तार किए जाएंगे। वास्तव में नक्सलियों के इतने बड़े पैमाने पर आत्मसमर्पण की सबसे बड़ी वजह साय सरकार की नई पुनर्वास नीति रही है। जिसने सरेंडर शब्द से परहेज कर उसे पुनर्वास कराया। अब वे समाज की मुख्यधारा में वापस लौट आएं है। साय सरकार के सामने अब बड़ी चुनौती बस्तर का तेजी के साथ चहुंमुखी विकास करना है जो कालांतर में नक्सली हिंसा के चलते पिछड़ेपन का पर्याय बना हुआ था। कभी बारूद की ढेर पर बैठे रहने वाला बस्तर अब शांति का उपवन बनेगा और वहां विकास के फूल खिलेंगे। नक्सली आतंक के खात्मे का सपना साकार करने के लिए छत्तीसगढ़ की साय सरकार और केन्द्र सरकार के हौसले पर सटीक बैठता है ये शेर-

वाकिफ कहां है जमाना हमारी उड़ान से,
वो कोई और थे जो हार गए आसमान से।।

1960 में बंगाल के नक्सलवाड़ी से चलकर 2026 में बस्तर में खत्म हुआ नक्सलवाद

न्यूज गैलरी

समाज सेवा के लिए अरूण छाबड़ा बंटी हुए सम्मानित

भाटापारा / नवप्रदेश। छत्तीसगढ़ जनलिस्ट यूनियन प्रादेशिक पत्रकार महा सम्मेलन एवं सम्मान समारोह में अरूण छाबड़ा बंटी को समाज सेवा में उत्कृष्ट कार्य करने पर राज्यपाल श्री रमेन डेका अध्यक्षता डॉ राजाराम त्रिपाठी, विशिष्ट अतिथि गिरीश पंकज साहित्यकार, वरिष्ठ पत्रकार,प्रो संजय द्विवेदी दिल्ली प्रदेश अध्यक्ष ईश्वर दुबे प्रदेश महामंत्री सरदार कुलवंत सलुजा द्वारा सम्मानित किया गया। वर्तमान में उन्हें मानद उपाधि, डाक्टरेड से सम्मानित किया गया। भाटापारा नगर सिख समाज के सम्मानित सदस्य और नगर में बहुत सारी अत्यावश्यक सेवाओं को उपलब्ध कराने वाले अरुण छाबड़ा (बंटी) ने अपने स्वर्गवासी पिता स्व. चैतराम छाबड़ा की पुण्य स्मृति में एक स्वर्ग रथ नामक वाहन शहर को विगत आठ वर्ष से निशुल्क संचालित कर रहे हैं। यह सेवा निश्चित रूप से बहुत ही पुण्यता का कार्य है। इसकी सभी नगरवासी तहेदिल से आभार मानते हैं। उनके द्वारा नारीशक्ति शिखर सम्मान, संमर क्लास, सेल्फडिफेंस, व्यक्तिव का विकास,खेलकूद का क्षेत्र हो या सांस्कृतिक साहित्यिक क्षेत्र में अपना बहुमूल्य समय प्रोत्साहन और आयोजन भी द्वारा निरन्तर किया जाता है। यह नगर के लोगों के लिए बहुत ही गौरव, सम्मान और प्रतिष्ठा की बात है। 2196 फीट लम्बा तिरंगा जिसे 1378 छात्र छात्राओं द्वारा लहराकर गोल्डन बुक आफवर्ल्ड रिकॉर्ड में भाटापारा का नाम दर्ज करा कर नाम रोशन किया है,उन्हें सम्मान मिलने पर नगर वासियों ने उन्हें बधाई और शुभकामना दी है।

जनगणना की तैयारी तेज, 1 से 30 मई तक होगा प्रथम चरण

महासमुंद / नवप्रदेश। । जिले में जनगणना कार्य का प्रथम चरण 1 मई से 30 मई तक आयोजित किया जाएगा। इस दौरान प्रगणक घर-घर जाकर मोबाइल एप के माध्यम से कुल 34 प्रश्नों की जानकारी एकत्रित करेंगे। खास बात यह है कि इस बार जनगणना पूरी तरह डिजिटल माध्यम से की जाएगी, जिसके लिए प्रगणकों को विशेष प्रशिक्षण दिया जा रहा है।कलेक्टर एवं प्रमुख जनगणना अधिकारी विनय कुमार लंगेह के निर्देशानुसार तथा डिप्टी कलेक्टर एवं जिला जनगणना अधिकारी मनोज कुमार खांडे की उपस्थिति में जनपद पंचायत बसना में फील्ड ट्रेनर्स का तीन दिवसीय प्रशिक्षण आयोजित किया गया। इस प्रशिक्षण में सरायपाली, बसना और पिथौरा क्षेत्र के कुल 23 फील्ड ट्रेनर्स शामिल हुए।प्रशिक्षण के प्रथम दिवस एसडीएम बसना हरिशंकर पैकरा ने फील्ड ट्रेनर्स को संबोधित करते हुए प्रशिक्षण को गंभीरता से लेने और अपनी सभी शंकाओं का समाधान मास्टर ट्रेनर्स से प्राप्त करने की बात कही।

प्रशिक्षण के अंतिम दिन जिला मास्टर ट्रेनर तोषण गिरि गोस्वामी और नसीब खान द्वारा फील्ड ट्रेनर्स को बसना नगर के वार्ड क्रमांक-1 तथा ग्राम खेमड़ा में व्यवहारिक प्रशिक्षण दिया गया। इस दौरान ट्रेनर्स ने 10 से 15 घरों में जाकर मोबाइल एप के माध्यम से जानकारी दर्ज करने का अभ्यास किया। साथ ही आवास, दुकान, कार्यालय, खाली मकान सहित विभिन्न इकाइयों के मकान सूचीकरण की प्रक्रिया की विस्तृत जानकारी मौके पर दी गई। इस अवसर पर तहसीलदार कृष्ण कुमार साहू, सीएमओ नगर पंचायत बसना सूरज कुमार सिदार एवं संबंधित स्टाफभी मौजूद रहे। प्रशिक्षण प्राप्त फील्ड ट्रेनर्स अब अप्रैल माह में अपने-अपने क्षेत्रों में प्रगणकों एवं सुपरवाइजरों को प्रशिक्षण प्रदान करेंगे, जिससे आगामी जनगणना कार्य को सफलतापूर्वक संपन्न किया जा सके।

बूथ कमेटियों के गठन के लिए कांग्रेस भवन में बैठक संपन्न

भाटापारा / नवप्रदेश। कांग्रेस भवन में प्रदेश कांग्रेस कमेटी एवं जिला कांग्रेस कमेटी के निर्देश पर संगठन सृजन के अंतर्गत बूथ कमेटी के गठन एवं बी एल ए नियुक्ति हेतु आवश्यक बैठक रखी गई थी। बैठक में जिला कांग्रेस अध्यक्ष सुश्री सुमित्रा घृतलहरे शहर प्रभारी प्रवीण धुरंधर ,विधायक इन्द्र साव कांग्रेस नेता सतीश अग्रवाल दिवाकर मिश्रा ने कार्यकर्ताओं को संबोधित किया। सभी वक्ताओं ने संगठन की मजबूती के लिए और संगठन सृजन के अंतर्गत बूथ कमेटियों के गठन के लिए आवश्यक दिशा निर्देश दिए। कार्यक्रम का संचालन पूर्व एल्डरमेन मुकेश साहू ने किया। बैठक में राजकुमार शर्मा गौरी भृगु नानू सोनी चंद्रशेखर चक्रधारी नरेंद्र यदु धनंजय तिवारी शेख गुलाम प्रमेन्द्र तिवारी संजय बघेल विमलेश्वरी ध्रुव प्रेमलता दुबे पप्पू चौहान नवीन बख्श ओमप्रकाश यदु अय्यूब बांठिया पुनीत मानिकपुरी शेषनारायण यदु मनमोहन कुर्रे मोहन निषाद राजा तिवारी वैभव केशरवानी दिनेश यदु राजेश जगवानी विक्रम लिलवानी आशीष वर्मा हिरमत साहू शतरूपा वर्मा गोविंदा देवदास मनीराम ध्रुव गुड्डा मानिकपुरी विजय महिलांगे कुंज बिहारी साहू पूर्णिमा श्रीवास हीरा नामदेव भूपेश जांगड़े रामू ठाकुर दिलीप वर्मा पिंटू रजक सीता साहू सतीश गेंड्रे गिरिराज चावड़ा सहित सभी कांग्रेस जन उपस्थित रहे।

नेशनल हाईवे पर सफर करने वाले वाहन चालकों पर टैक्स बढ़ाना चिंतनीय: युवराज

फिंगेश्वर /गरियाबंद/ नवप्रदेश।1 अप्रैल 2026 से भारत नेशनल हाईवे और एक्सप्रेसवे पर सफर करना महंगा होते जा रहा है।। युवा नेता जिला उपाध्यक्ष युका व्यापारी संघ के अध्यक्ष युवराज सिंहा ने कहा कि छत्तीसगढ़ में नेशनल हाईवे पर सफर करने वाले वाहन चालकों पर टैक्स बढ़ाना चिंतनीय है उन्होंने बताया कि नेशनल हाईवे अथॉरिटी ऑफइंडिया ने वित्तीय वर्ष 2026-27 के लिए टोल टैक्स की नई दरें 1 अप्रैल से लागू की है नई दरों के तहत प्रदेश के अलग-अलग टोल प्लाजा पर पांच प्रतिशत से 10त्न तक की बढ़ोतरी की गई है जिसमें ?5 से ?20 तक की राशि निश्चित है जिसमें आम यात्रियों की जेब पर सीधा असर पड़ेगा।। उन्होंने कहा कि कार,जीप जैसे निजी वाहनों के साथ-साथ व्यावसायिक वाहनों के लिए टोल महंगा हो जाएगा ।।साथ ही 1 अप्रैल से फास्ट ट्रैक एनुअल पास भी महंगा हो रहा है जो ?3000 से बढ़कर 3075 हो जाएगा ।।टोल दरो में वृद्धि से बस,ट्रकों और व्यावसायिक वाहनों का परिचालन खर्च बढ़ेगा ।।जिससे वस्तुओं की कीमतों में वृद्धि हो जाएगा और आगे महंगाई बढ़ेगी केंद्र की सरकार देश की जनता को सिर्फलूटने में लगी है आम जनता की तकलीफसे उसे कुछ लेना देना नहीं है।।

जहां थी कभी दहशत और गूंजती थी गोलियों की आवाज, अब फैल रही महुए की महक

■ दहशत गर्दी खत्म होने के बाद जंगलों में महुआ बीनने पहुंच रहे ग्रामीण, बंपर फसल से बढ़ा उत्साह

खैरागढ़ / नवप्रदेश। । जिले के बीहड़ वनाचंल क्षेत्र मे अब गोलियों की दहशत की बजाय महुए की महक फैल रही है । गातापार जंगल के अंदरूनी इलाके जहां कभी नक्सलियों का ठिकाना हुआ करता था। वहां ग्रामीण बेधड़क आवाजाही कर महुआ बटोर रहे है।

गातापार जंगल इलाके के मलैदा,भावे जुरलाखार, कटेमा क्षेत्र के बाबाजी, भदरीखोल, बिसपूर, चुहरी, चिया डहरा जैसे घने जंगलो मे इस बार भी महुए की जोरदार फसल हुई है। मलैदा , भावे जुरलाखार के रहवासी बड़ी संख्या मे जंगल पहुँच महुआ बीन रहे है । जंगल से गांव की आवाजाही करने की बजाय जंगल मे ही महुए को धूप मे सुखाया जा रहा है। सूखे महुए निजी व्यापारी बढ़िया कीमत मे इन वनवासियों से खरीदते है। इस बार बेहतर फसल होने से महुए की महक पूरे अंचल मे बह रही है। महुआ बीनने ग्रामीणो के साथ महिलाए और बच्चे भी जंगल पहुँच रहे है । दहशत के चलते नही घुस पाते थे - भावे, जुरलाखार, मलैदा इलाके के भदरीखोल, बाबाजी, बिसपूर चूहरी और चियाडहरा जंगल घने वनक्षेत्र है जो 90 के दशक मे नक्सलियो का मांद कहलाता था । ग्रामीण दहशत के चलते इन इलाको मे नही घुसते थे।

नक्सलियों की जन अदालत सहित कई महत्वपूर्ण बैठके, पंचायतें इन जंगलो के भीतर लगती थी । साल भर से जारी नक्सल विरोधी अभियान, हार्डकोर नक्सलियों की धरपकड़ और सरेंडर जैसे मामलो के बाद इलाके से नक्सलियों का डर खत्म हो गया।

जंगल में ही रूक कर कर रहे निगरानी

लिमऊटोला के मानिक यदु, मलैदा के मनीराम आदि ने बताया कि महुए की लंबे समय बाद बेहतर फसल के चलते इस बार इन इलाको के ग्रामीण उत्साहित है । गांव से जंगल तक बार बार आनाजाना करने की बजाय भदरीखोल जंगल मे ही कई परिवारो ने तंबू लगाकर डेरा डाला है । वहाँ महुआ बीन कर उसे सूखाया जा रहा है । इन तंबू मे बीस से अधिक ग्रामीण रूके रहे है । महुआ बीनने के साथ साथ जंगलो को आग से बचाने की जिम्मेदारी भी यही ग्रामीण निभा रहे है । ये जंगल पूरी तरह बांस से भरे है ऐसे मे आगजनी की सूचना इन ग्रामीणो द्वारा त्वरित रूप से वनविभाग को दी जा रही है । जंगल मे सौर ऊर्जा और सुरक्षा तथा जानवरो से बचाव के उपायो के साथ कई ग्रामीणो ने जंगल के भीतर तंबू तैयार किया है ।

50 लाख रुपए के विभिन्न विकास कार्यों की रखी नींव

विष्णु के सुशासन में गांवों का हो रहा चहुमुखी विकास: संजय सिन्हा

छुरिया : / नवप्रदेश। विकासखंड के ग्राम पंचायत गेरुघाट, किडकाड़ीटोला, मोरकुटंब, पांडेटोला में ग्रामीणों की मांग को दृष्टिगत रखते हुए जनपद अध्यक्ष संजय कुमार सिन्हा ने स्कूल शिक्षा विभाग एवं महिला एवं बाल विकास विभाग द्वारा शिक्षा से जुड़े मूलभूत विभिन्न निर्माण कार्यों की स्वीकृति दिलाई है । उपरोक्त निर्माण कार्य को शुरू करने से पहले श्री सिन्हा ने भूमिपूजन किया,इस अवसर पर मुख्यरूप से उभे राम मंडावी जनपद सदस्य,ललेश्वरी धावड़े सरपंच गेरूघाट मौजूद रहे । एक संक्षिप्त कार्यक्रम को संबोधित करते हुए श्री सिन्हा ने कहा कि मेरे जनपद क्षेत्र के ग्राम मंगिया टोला में आंगनबाड़ी भवन निर्माण हेतु 11.89 ग्यारह लाख,पूर्व माध्यमिक शाला भवन निर्माण हेतु 11.48 लाख,किडकाड़ीटोला में आंगनवाड़ी भवन हेतु 11.89 लाख, पांडेटोला मे पूर्व माध्यमिक शाला में अतिरिक्त कक्ष निर्माण हेतु 11.48 लाख रुपए स्वीकृति होने के पश्चात भूमिपूजन संपन्न हुवा है,आज हम सबके के लिए शुभ अवसर है,हम सभी के लिए गर्व और खुशी का क्षण है। आंगनबाड़ी भवन और स्कूल भवन के निर्माण कार्य का भूमि पूजन केवल एक निर्माण की शुरुआत नहीं है, बल्कि यह हमारे गांव के उज्ज्वल भविष्य की मजबूत नींव रखने का दिन है। आंगनबाड़ी केंद्र हमारे नन्हे-मुन्ने बच्चों के लिए पहला शिक्षा और संस्कार का स्थान होता है। यहीं से बच्चों के शारीरिक, मानसिक और बौद्धिक विकास की शुरुआत होती है। जब एक सशक्त और सुरक्षित आंगनबाड़ी भवन बनेगा, तो हमारे बच्चों को बेहतर पोषण, शिक्षा और देखभाल मिल सकेगी। इसी प्रकार, स्कूल भवन का निर्माण हमारे बच्चों के सपनों को साकार करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है। एक अच्छा स्कूल भवन न केवल पढ़ाई के लिए बेहतर वातावरण देता है, बल्कि बच्चों के आत्मविश्वास को भी बढ़ाता है। यहां से निकलकर हमारे बच्चे डॉक्टर, इंजीनियर, शिक्षक और अधिकारी बनकर देश और समाज का नाम रोशन करेंगे। किसी भी समाज का विकास तभी संभव है जब उसकी शिक्षा व्यवस्था मजबूत हो। आज जो कार्य हम शुरू कर रहे हैं, वह आने वाली पीढ़ियों के लिए अमूल्य धरोहर साबित होगा। यह भवन केवल ईंट और सीमेंट से नहीं बनेगा, बल्कि इसमें हमारे सपने, हमारी आशाएं और हमारे बच्चों का भविष्य जुड़ा हुआ है । ग्रामवासियों से अपील करते हुए कहा कि इस निर्माण कार्य में सहयोग करें, इसकी गुणवत्ता का ध्यान रखें और इसे समय पर पूरा कराने में अपना योगदान दें। जब समाज और शासन मिलकर काम करते हैं, तब विकास की गति कई गुना बढ़ जाती है। इस अवसर पर बड़ी संख्या ग्रामीणजन उपस्थित रहे ।

जिले में पशु चिकित्सा व्यवस्था ध्वस्त, डॉक्टरों की कमी: ऋषि

■ मोबाइल मेडिकल यूनिट लापता

राजनांदगांव /नव प्रदेश। डॉ. रमन सिंह के विधानसभा क्षेत्र राजनांदगांव में पशु चिकित्सा सेवाओं की बदहाल स्थिति को लेकर युवा नेता एवं पूर्व पार्षद ऋषि शास्त्री ने भाजपा सरकार पर तीखा हमला बोला है। उन्होंने कहा कि डबल-ट्रिपल इंजन सरकार के बड़े-बड़े दावे केवल प्रचार तक सीमित हैं, जबकि जमीनी हकीकत पूरी तरह विपरीत और चिंताजनक है। ऋषि शास्त्री ने आरोप लगाया कि जिले के पशु चिकित्सालयों में बुनियादी सुविधाओं का गंभीर अभाव है। अस्पतालों में न तो पर्याप्त डॉक्टर हैं और न ही विशेषज्ञ सेवाएं उपलब्ध हैं। विशेष रूप से गाइनोलॉजिस्ट की कमी के चलते गर्भवती गायों का समय पर और समुचित इलाज नहीं हो पा रहा है, जिससे पशुधन पर सीधा खतरा मंडरा रहा है। यह स्थिति सरकार की ÷गौ-सेवा÷ की कथनी और करनी के बीच के अंतर को उजागर करती है। उन्होंने कहा कि ग्रामीण क्षेत्रों में पशु उपचार की रीढ़ मानी जाने वाली मोबाइल मेडिकल यूनिट या तो पूरी तरह गायब हो चुकी है या केवल कागजों में संचालित हो रही है। इससे दूरस्थ क्षेत्रों के पशुपालकों को भारी दिक्कतों का सामना करना पड़ रहा है और कई बार समय पर इलाज न मिलने से पशुओं की स्थिति गंभीर हो जाती है। यह सीधे तौर पर प्रशासनिक विफलता और योजनाओं के क्रियान्वयन में लापरवाही को दर्शाता है। शास्त्री ने शासकीय दवाखानों में दवाइयों की कमी को लेकर भी गंभीर सवाल उठाए। उन्होंने कहा कि आवश्यक दवाइयां उपलब्ध नहीं होने के कारण पशुपालकों को मजबूरी में निजी दुकानों से महंगी दवाइयां खरीदनी पड़ रही हैं। उन्होंने आशंका जताई कि यह स्थिति केवल अव्यवस्था नहीं, बल्कि संभावित भ्रष्टाचार की ओर भी इशारा करती है। यह सवाल आज आम जनता के बीच चर्चा का विषय बन चुका है। ऋषि शास्त्री ने कहा कि गौ-भक्ति के नाम पर केवल राजनीतिक लाभ लिया जा रहा है।

नया ढाबा में पानी की समस्या, महापौर ने किया मुआयना

■ वैकल्पिक व्यवस्था के तहत सिंटेक्स टंकी लगाने तथा प्रभावित क्षेत्र में टैंकर से पानी सप्लाई के दिये निर्देश

राजनांदगांव / नव प्रदेश। वार्ड नं. 4 के नया ढाबा में पानी की समस्या पर महापौर श्री मधुसूदन यादव, निगम अध्यक्ष श्री टोपेन्द्र सिंह पारस वर्मा सहित तकनीकि अधिकारियो के साथ पेयजल प्रभावित स्थल में जाकर नागरिको से रूबरू हो उनसे पेयजल समस्या के संबंध में चर्चा कर निराकरण हेतु अधिकारियो को वैकल्पिक व्यवस्था करने निर्देशित किए। महापौर श्री मधुसूदन यादव से नया ढाबा वासियो ने कहा कि नल में पर्याप्त पानी नही आता है, टैंकर से पानी सप्लाई की जाती है, कुछ दिनो से नियमित टैकर भी नही आ रहा है। महापौर ने तकनीकि अधिकारियो से कहा कि पानी समस्या निवारण हेतु प्रभावित क्षेत्र में सिंटेक्स टंकी लगावे तथा उसमें टैंकर के माध्यम से नियमित रूप से पानी भरे, जिससे प्रभावित क्षेत्रवासियो को पर्याप्त पानी मिल सके। उन्होंने पंचायत भवन के पास बोर खनन के निर्देश दिए तथा बरबट्टी कुँआ से पंप के माध्यम से नया ढाबावासियो को जल प्रदाय करने कहा। इसके अलावा प्रभावित क्षेत्र में टैंकर से भी पेयजल आपूर्ति करने कहा। उन्होनें कहा कि इस प्रकार की वैकल्पिक व्यवस्था से पानी समस्या का निराकरण हो सकेगा।

पंडित दीनदयाल उपाध्याय प्रशिक्षण महाभियान का आयोजन, चंद्रहास चंद्राकर हुए शामिल

महासमुंद /नवप्रदेश। छत्तीसगढ़ राज्य बीज एवं कृषि विकास निगम के अध्यक्ष एवं राज्यमंत्री दर्जा प्राप्त चंद्रहास चन्द्राकर ने आज अपने प्रभार जिला बिलाईगढ़-सारंगढ़ में आयोजित पंडित दीनदयाल उपाध्याय प्रशिक्षण महाभियान में भाग लिया। कार्यक्रम का शुभारंभ स्थल प्रांगण में पार्टी का ध्वज फहराकर एवं दीप प्रज्वलित कर किया गया।

इस अवसर पर चन्द्राकर ने प्रशिक्षण प्राप्त करने पहुंचे कार्यकर्ताओं को संबोधित करते हुए कहा कि इस महाभियान का मुख्य उद्देश्य कार्यकर्ताओं में एकात्म मानववाद और अंत्योदय की भावना को जागृत करना है, ताकि समाज के अंतिम व्यक्ति तक विकास की किरण पहुंच सके। उन्होंने कहा कि संगठन को मजबूत बनाने, राष्ट्रवादी विचारधारा को जन-जन तक फैलाने तथा युवाओं में सेवा भाव और नई ऊर्जा का संचार करने के लिए इस तरह के प्रशिक्षण कार्यक्रम अत्यंत आवश्यक हैं।

उन्होंने आगे कहा कि पंडित दीनदयाल उपाध्याय का जीवन राष्ट्र सेवा और समर्पण का उत्कृष्ट उदाहरण है।

महापौर ने जैन समुदाय को महावीर जयंती की दी बधाई

राजनांदगांव / नव प्रदेश। महापौर श्री मधुसूदन यादव आज प्रातः जैन समाज द्वारा महावीर जयंती के उपलक्ष्य में आयोजित जुलूस में शामिल होकर जैन समुदाय के लोगों को जयंती की शुभकामनाएं दी। महापौर श्री यादव महावीर जयंती के अवसर पर आयोजित जन कल्याण रैली में शामिल हुई और जयंती की शुभकामनाएं देते हुये कहा कि जैन धर्म के 24वें तीर्थकर भगवान महावीर स्वामी ने जीवन भर लोगों को सत्य, और अहिंसा के मार्ग पर चलने की शिक्षा दी एवं आपस में प्रेम भाव से मिलजुल कर रहने की सलाह दी साथ ही पशुबलि, जातिगत भेदभाव आदि की कड़ी निंदा की। उन्होंने कहा कि महावीर स्वामी अहिंसा और त्याग की मूर्ति थे, हमें उनके द्वारा बताये सिद्धांतों को आत्मसात करना है ।

सात्विक भोजन से मनुष्य के मन-बुध्दि व संस्कार पर पढ़ता है प्रभाव: सविता बहन

■ समय का सार्थक उपयोग करने वालों का ।जीवन सफल होता है...बीके रश्मि बहन

भाटापारा / नवप्रदेश। नगर के भाग्यविधाता भवन में ब्रम्हा भोजन का आयोजन किया गया। इस दौरान सविता दीदी द्वारा उदबोधन व आशीर्वचन दिया गया कार्यक्रम के आरंभ मे रायपुर शांति सरोवर से पधारे बीके राज योग शिक्षिका सविता दीदी ने अन्न भोजन के महत्व को बताते हुये कहा कि जैसा अन्न वैसा मन व संस्कार होता ।सविता दीदी ने कार्यक्रम मे उपस्थित भाई बहिनों व बीके कुमारों को बताया कि ईश्वरीय स्मृति मे अर्पित किया गया पवित्र भोजन ही ब्रम्हा भोजन है जिसके लिये देवतायें भी तरसते थे सात्विक व ब्रम्हा भोजन परमात्मा के करीब ले जाने का साधन है उन्होंने कहा ब्रम्हा भोजन भोगनाओं को मिटाने वाला है ब्रम्हा भोजन विचारों व संस्कारों को शुध्द करने वाला है। सविता दीदी ने कहा कि ब्रम्हा भोजन जीवन मे दिव्यता लाने वाला है सविता दीदी ने उपस्थित ब्रम्हा कुमार व भाई बहनों को बताया कि राज योग धारणा सेवा चार मुख्य विषय है परंतु इन सबको पाने के लिये समय का खजाना अतिमहत्वपूर्ण है अगर 2मिनट भी व्यर्थ मे गवातें हैं तो वह 2 साल के बराबर है इसलिये हमें अपना मूल्यवान समय परमात्म ज्ञान योग्य को प्राप्त कर जो परमात्मा के द्वारा दिया जा रहा है उसे ग्रहण कर दिव्य गुणों व शक्तियों सुख व शांति से अपने जीवन को सफल बनावे। रायपुर शांति सरोवर से पधारे बीके महेश भाई ने भी अपने उदबोधन मे भाटापारा के भाग्य विधाता भवन के परमात्म संदेश का प्रारंभ ओमप्रकाश भाई के दिशा निर्देश व दृढ़ निश्चय के द्वारा हुआ बताया जिसका लाभ भाटापारा के समस्त आम जन ले रहे हैं । वहीं रायपुर शांति सरोवर के बीके रश्मि बहन ने कहा कि भाटापारा के सेन्टर मे परमात्मा प्रभु मिलन कि आत्माये उपलब्ध है वह निर्विघ्न ज्ञान में चलते रहें व पूरे भाटापारा का उद्धार अपनी सेवा भाव से करते रहें। चौबे कालोनी रायपुर की राजयोग संचालिका भावना बहन ने अपने दिव्य उदबोधन मे कहा कि इस संगम युग मे सबसे बडा खजाना समय का है इस समय को सफल कर परमात्म ज्ञान मे रहकर सभी आत्माओं को ज्ञान का दान देना आवश्यक है ।

पालकी में निकले भगवान महावीर: सादगी और संस्कारों को प्राथमिकता देना ही सच्चा धर्म

महावीर के सिद्धांत अब लेखन और भाषण तक सीमित: रजतमणि

छुईखदान / नवप्रदेश। स्थित स्थानक जैन भवन में विराजमान मुनि श्री रजतमणि जी महाराज एवं उनके संघ ने सकल जैन समाज को संबोधित करते हुए कहा कि यह अत्यंत दुखद विषय है कि भगवान महावीर के सिद्धांत आज केवल लेखन और भाषण तक सीमित रह गए हैं। उन्हें अपने जीवन में आत्मसात करने वाले लोग बहुत कम रह गए हैं।

उन्होंने कहा कि लोग भगवान महावीर के उपदेशों को भूलते जा रहे हैं और भोग-विलास में अधिक डूबते जा रहे हैं। उदाहरण देते हुए मुनि श्री ने बताया कि एक व्यक्ति प्रदर्शनी में एक महिला की तस्वीर 50,000 रुपये में खरीद लेता है, लेकिन जब वही व्यक्ति बाहर निकलता है तो एक गरीब भिखारी महिला उसके सामने 5 रुपये की मदद मांगती है, जिसे वह अनदेखा कर आगे बढ़ जाता है। भिखारी महिला कहती है कि ÷बाबूजी, यह मेरी ही पुरानी तस्वीर है।÷ यह उदाहरण समाज में बढ़ती संवेदनहीनता को दर्शाता है।

मुनि श्री ने जैन समाज में शादियों के दौरान होने वाले अनावश्यक दिखावे और खर्च पर भी चिंता व्यक्त करते हुए कहा कि इसे रोकना अत्यंत आवश्यक है। सादगी और संस्कारों को प्राथमिकता देना ही सच्चा धर्म है। बच्चों में मोबाइल के बढ़ते प्रभाव पर उन्होंने कहा कि जब तक माता-पिता स्वयं में परिवर्तन नहीं लाएंगे और दिनभर मोबाइल में व्यस्त रहेंगे, तब तक बच्चे भी उसी मार्ग पर चलेंगे और उनके संस्कार प्रभावित होंगे। 30 मार्च (तेरस) को दिगंबर जैन समाज द्वारा चंद्रप्रभु दिगंबर जैन मंदिर में अभिषेक, पूजन एवं धार्मिक कार्यक्रमों के साथ महावीर जयंती मनाई गई। वहीं 31 मार्च को नगर में सकल जैन समाज द्वारा भव्य शोभायात्रा निकाली गई।

इस शोभायात्रा का मुख्य आकर्षण पूर्व नगर पंचायत अध्यक्ष श्रीमती दीपाली जैन की भोपाल निवासी माता श्रीमती शशिकिरण जैन द्वारा दान की गई भव्य पालकी रही, जिसमें भगवान महावीर स्वामी को विराजित कर नगर भ्रमण कराया गया।

1 अप्रैल को प्रेस क्लब में पुस्तक विमोचन और कवि गोष्ठी

राजनांदगांव /नव प्रदेश। साकेत साहित्य परिषद के 27वें वर्ष पूर्ण होने के अवसर 1 अप्रैल को प्रेस क्लब भवन राजनांदगांव में दोपहर 2:00 बजे से साहित्यिक संगोष्ठी ,पुस्तक विमोचन, एवं काव्य पाठ आयोजित किया गया है। साकेत साहित्य परिषद सुरगी के उपाध्यक्ष पवन यादव पहुना ने बताया उक्त आयोजन में कार्यक्रम दो सत्र में होगा। पहले सत्र में वरिष्ठ साहित्यकार कुबेर साहू एवं स्व. यशवंत मेश्राम की पुस्तकों का विमोचन होगा जिनके नाम है - लोक संगीत सम्राट खुमान साव पर केंद्रित स्मृतियों के सुवासित पुष्प, कुबेर की रचनाओं में समकालीनता एवं समकालीन समीक्षा दृष्टि , आलोचना के मापदंड- हत्या , मैक्सिम गोर्की की कहानियों का छत्तीसगढ़ी अनुवादबाज के कहानी दूसर कहानी संकलन का विमोचन होगा। विमोचित किताब पर अतिथियों का उद्बोधन होगा और द्वितीय सत्र में उपस्थित कवियों द्वारा कविता पाठ किया जायेगा। कार्यक्रम की अध्यक्षता डॉ दादूलाल जोशी वरिष्ठ साहित्यकार फरहद,मुख्य अतिथि सचिन अग्रहरि अध्यक्ष प्रेस क्लब राजनंदगांव, जितेंद्र मिश्रा कवि एवं ब्यूरो चीफ नवभारत राजनंदगांव , उपस्थित रहेंगे।

दैनिक नवप्रदेश
आदित्यवर्ण तमसः परस्तात्
प्रदेश के साथ पूरा देश...
अंदर के पृष्ठों पर ◆◆ 2 | छत्तीसगढ़ 4 | अभिव्यक्ति 11 | कारोबार/खेल
रायपुर, बुधवार, 01 अप्रैल 2026 | शुक्ल पक्ष-चतुर्थदशी, | विक्रम संवत -2083 / वर्ष-15 अंक- 52 | पृष्ठ-12 मूल्य-4 रुपए | रायपुर, बिलासपुर, भोपाल, जबलपुर व रांची से एक साथ प्रकाशित

आज बेबाक

फिल्म शोले में गब्बर सिंह का एक डायलॉग है कि - गांव वालों तुम्हें गब्बर से एक ही आदमी बचा सकता है और वो है खुद गब्बर। ऐसा ही अमेरिकियों के साथ हो रहा है। वे सनकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप की मूर्खता से त्रस्त हो गये हैं जो ट्रंप की जिद के कारण बेतहाशा बढ़ती महंगाई की मार झेल रहे हैं। नतीजतन ट्रंप अब अपने ही घर में बेगाने हो रहे हैं। अमेरिका में जगह जगह उनके खिलाफ प्रदर्शन हो रहे हैं और ट्रंप हटाओं अमेरिका बचाओ के नारे लगाये जा रहे हैं। इसे ही कहते हैं विनाशकाले विपरीत बुद्धि।

खून से लिखी गई शांति की कहानी, बस्तर में 1058 जवानों ने दी कुर्बानी

प्रसाद नायडू/जगदलपुर

नवप्रदेश। छत्तीसगढ़ में साल 1990 से वर्तमान तक बीते 36 सालों में नक्सलियों ने बस्तर सभांग के सुकमा, दंतेवाड़ा व बीजापुर जिले में कई बड़ी घटनाओं को अंजाम दिया। इन हमलों में 1058 वीर जवानों ने नक्सलवाद के खात्मे के लिए अपने प्राणों की आहुति दे दी। इन्हीं वीर जवानों की शहादत से आज नक्सलवाद अंतिम सांसे गिन रहा है और देश को नक्सलदंश से मुक्ति मिल रही है।

बस्तर रेंज के अंतर्गत आने वाले सुकमा, दंतेवाड़ा व बीजापुर जिले में शांति और सुरक्षा स्थापित करने के लिए अब तक कुल 1058 वीर जवानों ने अपना बलिदान दिया है। इनमें सुकमा जिले में सीजी पुलिस के 78 तथा सीआरपीएफ के 108, दंतेवाड़ा जिले में सीजी पुलिस के 208 व सीआरपीएफ के 215 तथा बीजापुर में सर्वाधिक सीजी पुलिस के 329 तथा अर्धसैनिक बलों के 120 कुल 449 जवानों की शहादत इस संघर्ष की गंभीरता और सुरक्षा बलों के ■ शेष पृष्ठ 8 पर

नवप्रदेश विशेष

■ नक्सलमुक्त बस्तर में सुकमा, दंतेवाड़ा व बीजापुर जिले में वीरों ने दी शहादत

■ शहीद होने वाले सभी छत्तीसगढ़ पुलिस और अर्धसैनिक बलों के जवान थे

ताड़मेटला में शहीद हुए थे 76 जवान

सुकमा जिले के ताड़मेटला में ही नक्सलियों ने देश का सबसे बड़ा हमला 6 अप्रेल 2010 को किया था। टीसीओसी के दौरान ताड़मेटला की पहाड़ी जंगल में माओवादियों की मौजूदगी की सूचना पर सीआरपीएफ 62 वीं वाहिनी की कंपनी डिप्टी कमाण्डेट सत्यवान के नेतृत्व में 4 से 7 अप्रैल तक एरिया डोमिनेशन अभियान चलाया था। 6 तारीख को नक्सलियों द्वारा पुलिस बल पर अंधाधुंध फायरिंग एवं विस्फोट किया गया। इस हमले में सीआरपीएफ के 76 जवान शहीद हुए और 7 जवान घायल हुए थे।

मिनपा-बुरकापाल में 17 जवान शहीद हुए

सुकमा जिले में ग्राम मिनपा एवं बुरकापाल के मध्य जंगल पहाड़ी में 21 मार्च 2020 को हुआ था। कैम्प बुरकापाल, चिंतागुफा, दोरनापाल व कोंटा से डीआरजी, एसटीएफ एवं 206 कोबरा की संयुक्त टीम ऑपरेशन के लिए रवाना हुई। घात लगाए नक्सलियों ने फायरिंग शुरू कर दी। लगभग 7 घंटे तक जवाबी कार्रवाई कर नक्सलियों को पीछे हटने पर मजबूर किया। घटना में कुल 17 जवान शहीद हुए। मुठभेड़ में 15 जवान घायल हुए थे।

सुकमा में एएसपी गिरपुंजे ने दी शहादत

सुकमा जिले को नक्सलमुक्त करने में सैकड़ों अधिकारियों व जवानों ने अपनी शहादत दी। 9 जून 2025 को पत्थर खदान में पोकलेन जलाने की सूचना पर एएसपी कोंटा आकाश राव गिरपुंजे के नेतृत्व में पुलिस बल मौके पर पहुंची। जली हुई पोकलेन की तस्दीक के दौरान नक्सलियों द्वारा लगाए गए प्रेशर आईईडी में विस्फोट हुआ। इस विस्फोट में एएसपी आकाश राव गिरपुंजे शहीद हो गए। एसडीओपी कोंटा भानुप्रताप चन्द्राकर एवं चाना प्रभारी कोटा सोनल भी घायल हुए।

न्यूज गैलरी

बेंगलुरु में इंजीनियर कपल ने सुसाइड किया

बेंगलुरु/ए.। बेंगलुरु के कोथनूर इलाके के अपार्टमेंट में एक इंजीनियर कपल के सुसाइड का मामला सामने आया है। पहले पति का शव फ्लैट के बंद कमरे में मिला। कई बार दरवाजा खटखटाने के बावजूद कोई जवाब नहीं मिला तो पत्नी ने सिक्योरिटी और पड़ोसियों को बुलाया। दरवाजा तोड़ने पर पति का शव फंदे से लटका मिला। इसके कुछ ही मिनट बाद पत्नी फ्लैट से बाहर निकलीं और उसी अपार्टमेंट की 17वीं मंजिल से कूदकर जान दे दी।

पिता से विवाद पर बच्चे को पैर पकड़कर पटका

मुंबई/ए.। महाराष्ट्र के मुंबई से सटे वसई इलाके में एक व्यक्ति ने पिता से मामूली विवाद का गुस्सा उसके 4 साल के बच्चे पर उतार दिया। आरोपी ने बच्चे को ऑटो-रिक्शा से बाहर खींचकर सड़क पर पटक दिया और उसका सिर लोहे की रॉड पर भी मारा। पुलिस के मुताबिक यह घटना वसई की एक हाउसिंग सोसायटी में हुई। पूरी घटना सोसायटी में लगे सीसीटीवी कैमरे में रिकॉर्ड हो गई, जिसका वीडियो मंगलवार को सामने आया है।

सूरत की बिल्डिंग में आग, पांच की मौत

सूरत/ए.। गुजरात के सूरत में एक मकान में मंगलवार दोपहर को आग लगने से 5 लोगों की मौत हो गई। मरने वालों में 4 महिलाएं और एक बच्चा शामिल है। सूचना मिलते ही फायर ब्रिगेड की टीमें मौके पर पहुंची और आग पर काबू पाया। मिली जानकारी के मुताबिक, शहर के लिंबायत इलाके का यह मकान एक व्यापारी का है, जिसमें करीब 8 टन साड़ियों का स्टॉक रखा हुआ था। इससे घर में पैदल चलने तक की जगह नहीं बची थी। इसी के चलते आग इतनी तेजी से भड़की।

नक्सलवाद का अंत: डेडलाइन के आखिरी दिन बीजापुर में 14 करोड़ का नक्सली डंप मिला

34 नक्सलियों का सरेंडर, 7 किलो सोना और तीन करोड़ कैश बरामद

बीजापुर/दंतेवाड़ा/सुकमा/नार नारायणपुर/कांकेर (नवप्रदेश) छत्तीसगढ़ में नक्सली खात्मे के डेडलाइन (31 मार्च) के आखिरी दिन 14 करोड़ का नक्सली डंप बरामद हुआ है। इसके साथ ही 4 जिलों में 34 नक्सलियों ने सरेंडर किया है। बीजापुर में 25 नक्सलियों ने पुलिस को हथियार सौंपे। इनसे मिले इनपुट के बाद यहीं 14 करोड़ का डंप मिला। जिसमें 3 करोड़ कैश और 7 किलो गोल्ड शामिल है। दंतेवाड़ा में 5, सुकमा में 2 और कांकेर में 2 और नारायणपुर में 1 नक्सली ने आत्मसमर्पण किया हैं।

पुलिस ने दावा किया है कि दंतेवाड़ा में अब एक भी नक्सली नहीं बचे हैं। जिले में सक्रिय अंतिम 5 नक्सलियों ने हथियार डाल दिए हैं। इन पर 9 लाख रुपए का इनाम घोषित था। सुकमा में दो अंतिम नक्सली ने सरेंडर किया है। वहीं, कांकेर में 14 नक्सली अब भी एक्टिव है।

कांकेर में 6 दिन में 11 नक्सलियों का सरेंडर :कांकेर जिले में पिछले 6 दिन में 11 नक्सली मुख्यधारा में लौट चुके हैं। जिले में अभी भी करीब 14 नक्सली सक्रिय हैं। इनमें डीवीसीएम ■ शेष पृष्ठ 8 पर

" 31 मार्च को महत्वपूर्ण आत्मसमर्पण एवं पुनर्वास कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस अवसर पर दंडकारण्य स्पेशल जोनल कमेटी से जुड़े कुल 25 माओवादी कैडरों ने हिंसा का मार्ग त्यागकर समाज की मुख्यधारा में शामिल होने का निर्णय लिया।
- **डॉ. जितेन्द्र कुमार यादव**, एसपी, बीजापुर

बीजापुर में 25 नक्सलियों का सरेंडर

बीजापुर में 25 नक्सलियों ने 93 हथियार के साथ सरेंडर किया है। इन पर 1.47 करोड़ का इनाम था। इनके कब्जे से मिली 14 करोड़ की डंप सामाग्री में 2.90 करोड़ कैश और 11.16 करोड़ का 7 किलो सोना शामिल है।

2 महिला नक्सली ने डाले हथियार

सुकमा में 2 महिला नक्सलियों ने सरेंडर किया है। इन पर 8-8 लाख का इनाम था। वे माओवादी कैडर के रैंक कंपनी के सदस्य है, सुकमा के ही रहने वाली है। सरेंडर के बाद इनसे मिले इनपुट के बाद हथियारों और 10 लाख कैश का बड़ा डंप भी मिला है। सुकमा में जनिला उर्फ मड़कम हिंडमे (30), इनाम - 8 लाख और सोनी उर्फ माड़वी कोसी (24) इनाम - 8 लाख ने सरेंडर किया है।

दंतेवाड़ा हुआ नक्सलवाद मुक्त

दंतेवाड़ा पुलिस में (31 मार्च) को 'पूना मारगेम' अभियान के तहत सरेंडर कार्यक्रम हुआ। इसमें दंडकारण्य स्पेशल जोनल कमेटी से जुड़े 5 नक्सली मुख्यधारा में लौटे हैं। इनमें 4 महिला कैडर शामिल हैं। पुलिस ने ऑपरेशन के दौरान इंसास, कार्बाइन, लॉन्चर समेत हथियार भी बरामद किए हैं।

" अब दंतेवाड़ा जिला भी नक्सल मुक्त हो चुका है। यहां की आबो हवाओं में अब हिंसा नहीं बल्कि अमन, चैन और शांति महसूस की जा सकती है।
- **गौरव राय, एसपी**, दंतेवाड़ा

" माओवादी गतिविधियां अब अंतिम चरण में हैं और लगातार विकास कार्यों के चलते दूरस्थ इलाकों तक शासन की योजनाओं का लाभ पहुंच रहा है। सरकार की आत्मसमर्पण एवं पुनर्वास नीति के तहत लौटने वाले नक्सलियों को आर्थिक सहायता, सुरक्षा और कौशल प्रशिक्षण उपलब्ध कराया जा रहा है।
- **किरण चव्हाण**, पुलिस अधीक्षक

" आज की कार्रवाई के बाद वर्ष 2025-26 में जिले में कुल 302 माओवादी कैडर हिंसा त्यागकर मुख्यधारा में शामिल हो चुके हैं। इस अवधि में 270 हथियारों की रिकवरी हुई है। यह आँकड़ा बताता है कि क्षेत्र में विश्वास, शांति और विकास की प्रक्रिया लगातार गति पकड़ रही है।
-**रोबिनसन गुड़िया**, एसपी, नारायणपुर

" कांकेर अब नक्सल मुक्त होने जा रहा है। जवानों की ताबड़तोड़ कार्यवाहीं और सरकार की पुनर्वास योजना से प्रभावित होकर हथियार बंद नक्सली सरेंडर कर मुख्यधारा में लौट नई जीवन की शुरुआत कर रहे हैं।
- **निखिल राखेचा**, एसपी, कांकेर

31 मार्च नक्सलवाद के खिलाफ लड़ाई में ऐतिहासिक दिनः साय

■ **डबल इंजन सरकार की ताकत से टूटा नक्सलवाद, मुख्यमंत्री ने प्रधानमंत्री और केंद्रीय गृह को दिया श्रेय**

रायपुर/नवप्रदेश। मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय ने 31 मार्च को छत्तीसगढ़ में नक्सलवाद के खिलाफ लड़ाई में ऐतिहासिक दिन बताया है। उन्होंने कहा कि छत्तीसगढ़ अब नक्सलवाद जैसे गहरे नासूर से बाहर निकलकर विकास, विश्वास और सुशासन के नए युग की शुरुआत कर रहा है।

मुख्यमंत्री श्री साय ने इस उपलब्धि का सीधा श्रेय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी और केंद्रीय गृहमंत्री श्री अमित शाह के मजबूत नेतृत्व, स्पष्ट रणनीति और अडिग इच्छाशक्ति को देते हुए कहा कि छत्तीसगढ़ की 3 करोड़ जनता उनके प्रति आभार व्यक्त करती है। उन्होंने कहा कि डबल इंजन सरकार के समन्वित प्रयासों ने नक्सलवाद के खिलाफ निर्णायक परिणाम दिए हैं और हमारे सुरक्षाबल के जवानों के अदम्य साहस से यह संभव हुआ है।

मुख्यमंत्री श्री साय ने इस विषय पर पूर्व मुख्यमंत्री भूपेश बघेल के बयान को लेकर भी तीखा पलटवार किया। उन्होंने कहा कि उनका बयान न केवल तथ्यहीन है, बल्कि अपनी विफलताओं को छिपाने का एक प्रयास भी है। मुख्यमंत्री ने कहा कि केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह द्वारा कांग्रेस सरकार के कार्यकाल में नक्सल विरोधी अभियान में अपेक्षित ■ शेष पृष्ठ 8 पर

नक्सलवाद पर राहुल गांधी की भूमिका संदिग्धः साय

सीएम विष्णुदेव साय ने कांग्रेस नेता राहुल गांधी पर तीखा हमला बोलते हुए कहा है कि नक्सलवाद जैसे गंभीर राष्ट्रीय मुद्दे पर उनका रुख न केवल भ्रम पैदा करने वाला है, बल्कि उनकी मंशा पर भी गंभीर सवाल खड़े करता है। 'भारत जोड़ो यात्रा' के दौरान नक्सल विचारधारा समर्थक तत्वों के साथ मंच साझा करने और संवाद की स्थिति बनी, उसने पूरे देश को सोचने पर मजबूर किया है।

विकास और विश्वास के नए दौर में बस्तर

विधानसभा अध्यक्ष और 15 सालों तक मुख्यमंत्री रहे डॉ. रमन सिंह ने भी कहा कि बस्तर अब भय और हिंसा के साए से निकलकर विकास और विश्वास के नए दौर में प्रवेश कर चुका है।

बस्तर में सुरक्षा और विश्वास बढ़ाः केदार

मंत्री केदार कश्यप ने कहा कि नक्सलवाद के खिलाफ निर्णायक लड़ाई अब अपने अंतिम चरण में है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और गृह मंत्री अमित शाह के नेतृत्व में समन्वित रणनीति से सफलता मिली है।

नक्सलवाद मुक्त बस्तरः विकास-पर्यटन को लेकर सरकार की बड़ी तैयारी, चित्रकोट के लिए 200 करोड़ का प्रस्ताव

रायपुर/नवप्रदेश। छत्तीसगढ़ के बस्तर क्षेत्र को नक्सलवाद से पूरी तरह मुक्त घोषित किए जाने के बाद अब सरकार यहां विकास की नई रूपरेखा पर तेजी से काम कर रही है। राज्य के पर्यटन एवं संस्कृति मंत्री राजेश अग्रवाल ने इस उपलब्धि पर मुख्यमंत्री, प्रधानमंत्री और केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह का आभार जताया है। उन्होंने कहा कि केंद्र सरकार के सहयोग से बस्तर को पर्यटन के बड़े हब के रूप में विकसित किया जाएगा। सरकार बस्तर के अन्य प्रमुख स्थलों जैसे माता दंतेश्वरी मंदिर, कलीमसर गुफा और धूड़मारास गांव के विकास पर भी काम कर रही है। इन परियोजनाओं के जरिए ■ शेष पृष्ठ 8 पर

चित्रकोट जलप्रपात बनेगा पर्यटन का बड़ा केंद्र

मंत्री ने बताया कि बस्तर के प्रसिद्ध चित्रकोट जलप्रपात के समग्र विकास के लिए केंद्र सरकार को 200 करोड़ रुपये का प्रस्ताव भेजा गया है, जिसे जल्द मंजूरी मिलने की उम्मीद है। योजना के तहत ऐसा इंफ्रास्ट्रक्चर विकसित किया जाएगा, जिससे पर्यटक यहां कम से कम दो दिन तक ठहर सकें। जलप्रपात के दोनों किनारों को आकर्षक तरीके से विकसित करने की भी योजना है।

सरगुजा में नक्सलवादः बलरामपुर जिले में हुए कई बड़े एनकाउंटर

विक्रम सिंह ठाकुर

बिलासपुर/नवप्रदेश। आज छत्तीसगढ़ नक्सल मुक्त होने की स्थित में है। दक्षिण छत्तीसगढ़ से भी नक्सलवाद पूरी तरह समाप्त होने के करीब है। छत्तीसगढ़ के राज्य बनने के बाद नक्सलवाद अपने चरम पर आ गया। उत्तर छत्तीसगढ़ यानी की अविभाजित सरगुजा जिला इससे भी प्रभावित रहा। जानकारों की मानें तो छत्तीसगढ़ गठन के साथ ही राज्य को नक्सलवाद की बड़ी चुनौती का सामना करना पड़ा। 1990 ■ शेष पृष्ठ 8 पर

2002 से 2004 तक खौफ का दौर, दहशत में होता था सफर

सरगुजा में नक्सलवाद का सबसे खतरनाक दौर 2002 से 2004 के बीच रहा। शाम 6 बजे के बाद लोगों का घर से निकलना बंद हो जाता था। घरों के बाहर लाइट जलाना तक मना था। गांव से शहर का सफर सिर्फ दिन में ही होता था। बसों की आवाजाही सीमित थी, रात में सुरक्षा बलों की निगरानी जरूरी थी। इस दौरान कई घटनाओं में नक्सलियों ने यात्रियों से लूटपाट भी की। पूरा इलाका भय के साए में जी रहा था।

कल्लुरी के एसपी बनने के बाद कड़ा प्रहार

नक्सलवाद के खिलाफ बड़ी कार्रवाई तब शुरू हुई जब एएन उपाध्याय सरगुजा के आईजी बने वहीं शिवराम प्रसाद कल्लूरी बलरामपुर के एसपी बने। बलरामपुर को अलग पुलिस जिला बनाया गया, जिससे ऑपरेशन तेज हुए, जिसके बाद करीब 20 बड़े नक्सलियों ने सरेंडर किया। कई बड़े ऑपरेशन हुए और 4 एरिया कमांडर मारे गए। मुठभेड़ में भीम कोड़ाकू (मिलिट्री कमिटी हेड), श्याम बिहारी (सब-जोनल कमांडर), रंजीत खैरवार और नारायण चेरवा मारे गए।इसके अलावा कई एरिया कमांडर, मिलिशिया और दस्ता लीडर अलग-अलग मुठभेड़ों में मारे गए। कुसमी, चांदो, बलरामपुर, रामानुजगंज, शंकरगढ़ और सूरजपुर जैसे इलाकों में लगातार ऑपरेशन चलते रहे।

गरमा-गरम

इतिहास : सांकरा जंगल में 16 साल पहले हुई थी मुठभेड़, 7 नक्सली ढेर, 2 निर्दोष ग्रामीणों मारे गए थे

खौफ के जंगल से विकास के रास्ते तक महासमुंद

जयदेव सिंह/महासमुंद

31 मार्च 2026 को छत्तीसगढ़ को नक्सलवाद से पूर्ण मुक्ति मिल गई। दशकों से चले आ रहे नक्सलवाद के इस नासूर का अंत हो गया। बस्तर के दूरस्थ गांवों में सड़कें बन रही हैं, स्वास्थ्य सुविधाएं बढ़ रही हैं और युवा रोजगार के नए अवसरों से जुड़ रहे हैं। भय का माहौल अब उम्मीद और आत्मविश्वास में बदल गया है। कुछ वर्ष पहले महासमुंद नक्सलवाद की चपेट में आया था, लेकिन डॉ. रमन सरकार के कार्यकाल में महासमुंद नक्सलमुक्त हो गया।

महासमुंद के लोगों के जेहन में थाना सांकरा क्षेत्र के छोटे लोरम, नया टुकड़ा और झरन डोंगरी के घने जंगलों में 9 अक्टूबर 2010 को हुई मुठभेड़ की यादें आज भी ताजा है। सुबह साढ़े 11 बजे पुलिस और नक्सलियों के बीच जोरदार मुठभेड़ हुई थी। नक्सलियों की मौजूदगी की सूचना मिलने पर पुलिस और एसटीएफ की संयुक्त टीम सर्चिंग अभियान पर निकली थी। सर्चिंग के दौरान करीब 35-40 हथियारबंद नक्सलियों ने अचानक पुलिस बल पर फायरिंग शुरू कर दी। जवाब में पुलिस ने भी मोर्चा संभालते हुए जवाबी कार्रवाई की। करीब ■ शेष पृष्ठ 8 पर

नवप्रदेश खास

घटना के बाद बढ़ाई गई थी सुरक्षा

घटना के बाद पूरे इलाके में सुरक्षा कड़ी कर दी गई है और एसटीएफ पुलिस लगातार सर्चिंग अभियान चला रही है। यह मुठभेड़ नक्सल विरोधी अभियान की बड़ी कार्रवाई मानी जा रही थी, लेकिन ग्रामीणों की मौत ने कई सवाल भी खड़े कर दिए हैं। 9 अक्टूबर 2010 को हुई नक्सली मुठभेड़ में 6 शव बरामद कर लिए गए थे। इसके ठीक तीन दिन यानी 12 अक्टूबर 2010 को एक और नक्सली का शव सड़ी गली हालत में मिली थी। इसके 15-20 दिन बाद क्षेत्र में नक्सली की मूवमेंट और ज्यादा होने लगी थी। युवा नक्सली के सक्रिय होने की सूचना इधर पुलिस कप्तान को मिल चुकी थी। इसी बीच बारनवापारा अभ्यारण के जंगल में नक्सली की मौजूदगी का पता चला था।

बस्तरवासियों, टेक्नोलॉजी बेस्ड इंटेलिजेंस और पत्रकारों ने निभाई बड़ी भूमिकाः शर्मा

रायपुर/नव्रपेदश। छत्तीसगढ़ की राजधानी रायपुर स्थित प्रेस क्लब में आयोजित 'प्रेस से मिलिए' कार्यक्रम में डिप्टी सीएम और गृह मंत्री विजय शर्मा ने 31 मार्च 2026 की डेडलाइन के आखिरी दिन बड़ा दावा किया। उन्होंने कहा कि पांच दशकों पुरानी नक्सल समस्या दो साल में अब पूरी तरह खत्म हो चुकी है। यह राज्य के लिए यह स्मरणीय और वंदनीय है, जिसे सुरक्षा बलों, सरकार और बस्तर की जनता के संयुक्त प्रयासों से संभव बनाया गया।

डिप्टी सीएम विजय शर्मा ने आगे कहा कि, दिसम्बर 2023 में सरकार बदल गई थी। केंद्रीय गृह मंत्री अमित ■ शेष पृष्ठ 8 पर

बस्तर की जनता ने लाल आतंक को खत्म करने का बनाया था मन

डिप्टी सीएम विजय शर्मा ने कहा कि बस्तर की जनता ने लाल आतंक को स्वीकार करने का मन छोड़ दिया था। जिसमें उन्होंने यह ठान लिया था कि, नक्सलवाद खत्म होना चाहिए और बस्तर में स्कूल, रोड, अस्पताल, उन्नत किस्म के बीज और पानी समेत कई सुविधाएं पहुंचनी चाहिए।

सुविचार

रिश्ते उन्ही लोगों से बनाकर रखना चाहिए जो समय आने पर सहयोग और स्नेह दिखाएं औकात नहीं - अज्ञात

अफीम माफियों की जाल में फंसता छत्तीसगढ़

विजय मिश्रा

छत्तीसगढ़ रजत महोत्सव वर्ष मना रहा है। सरकार ताल ठोंक ठोंक कर हरेक क्षेत्र में हुई प्रगति को जनमन के हृदय में उतारने को आतुर है। सबका साथ- सबका विकास- सबका विश्वास को विज्ञापनों के माध्यम से अनवरत प्रदर्शित भी किया जा रहा है।सुशासन के साथ गावं शहरों में हो रही उन्नति के लिए आए दिन राष्ट्रीय पुरस्कारों से भी छत्तीसगढ़ की धरा गौरवान्वित हो रही है। सिर उठाकर, छप्पन इंची छाती फूलाकर चलने लायक ऐसे दौर में छत्तीसगढ़ की पावन धरा पर बड़ी मात्रा में हो रही अफीम की अवैध खेती ने सब गुड़ गोबर एक कर दिया है।छत्तीसगढ़िया सबले बढ़िया के नारा में गोता लगाता छत्तीसगढ़ आज नक्सलियों से मुक्त होने की दहलीज पर खड़ा है, किंतु पिछले एक पखवाड़ा में अफीम की अवैध खेती के परत दर परत खुलते राज ने सांप के फन की तरह अनगिनत सवालों को खड़ा कर दिया है। प्रभु श्री राम के ननिहाल की पावन भूमि कोदो ,कुटकी, चना, धान, सहित छत्तीस किस्मों की भाझियों के लिए प्रसिद्ध है।जल- जंगल -जमीन खनिज सम्पदाओं से परिपूर्ण ऐसे छत्तीसगढ़ की मिट्टी में अफीम की अवैध खेती करने वालों ने जघन्य अपराध किया है। हरा भरा धान कि कटोरा छत्तीसगढ़ को अफीम का कटोरा के नाम से कलंकित कर दिया है।भोला भाला छत्तीसगढ़िया अफीम माफियों की जाल में फंसता हुआ दिखाई दे रहा है। दुर्ग, रायगढ़, बलरामपुर में हो रही अफीम की अवैध खेती पुख्ता प्रमाण है कि छत्तीसगढ़ की उपजाऊ जमीन और सीधे साधे छत्तीसगढ़वासियों पर दीगर प्रांत के अपराधिक तत्वों की कुदृष्टि पड़ चुकी है।भारत के मानचित्र पर तेजी से उभरते नवोदित राज्य छत्तीसगढ़ के माथे अफीम की खेती एक अमिट कलंक के रूप में दर्ज हुई है। इस कलंक ने एक बार पुनः छत्तीसगढ़ वासियों को झकझोरते हुए आंख खोल कर जीने के लिए प्रेरित किया है। यद्यपि अफीम की अवैध खेती की जानकारी मिलने के उपरांत अविलंब सरकार ने कड़े कदम उठाए हैं। गांव गांव में खोजी दस्ते सक्रिय हो गए हैं। जिलों के अधिकारियों से यह सुनिश्चित करते हुए प्रमाण पत्र मांगा गया है कि उनके क्षेत्र में कहीं भी अफीम की खेती नहीं हो रही है। बलरामपुर में अन्ठावन पटवारियों का तबादला और दुर्ग की कृषि विस्तार अधिकारी को सस्पेंड कर दिया गया है।हालांकि यह तो आग लगने पर ही कुआं खोदें वाली बात है। छत्तीसगढ़ी में ऐसी ही नीति को ही कहते हैं गुड़ खाए गंगू पिटान खाए टूकना अर्थात करे कोई भरे कोई।पुलिस प्रशासन क्षेत्रीय पंचायत,ग्रामीण जनों के नाक के नीचे अफीम की खेती बड़े पैमाने पर हो रही थी,फिर भी सब के सब बेखबर चैन की नींद कैसे सो रहे थे? इस घोर लापरवाही के लिए प्रशासन जितना जिम्मेदार है उससे कहीं ज्यादा नागरिक जिम्मेदार हैं। कई एकड़ क्षेत्र में अफीम की अवैध खेती रातों-रात चोरी छिपे नहीं हो सकती। खेतों से अन्यत्र स्थानों पर अफीम का परिवहन कोई अदृश्य मानव नहीं करता है। बीज बोने से लेकर काटने में महीनों का समय लगता है। इसके बावजूद अफीम की खेती होने वाले क्षेत्र के रहवासियों ,कानून के रक्षकों को भनक तक नहीं लगी।जाहिर कि वे सबके सब सोते रहे या फिर स्वहित के चक्कर में नैतिकता बेचकर जागते हुए भी सोने का नाटक करते रहे।ऐसे ही लोगों को जागरूक रहने के लिए धनपाल भाटिया लिखते हैं- कभी चबा लिया करो एक दो पत्ते नीम के,नहीं तो शौकीन हो जाओगे किसी दिन अफीम के।

खैर,कहते हैं जब जागे तभी सबेरा,जो होता है अच्छे के लिए होता है।अभी पानी सर के उपर से गुजरा नहीं है।अफीम उत्पादक माफियों का पैर छत्तीसगढ़ में अंगद के पैर की तरह जमने के पहले ही उजागर हो गया है,अर्थात बुराई पर अच्छाई की जीत होती ही है।अब जब मामला उजागर हो गया है तो सरकार को चाहिए कि प्रदेश की और खुद की गिरती हुई साख को बचाने के लिए पूर्ण पारदर्शिता के साथ युद्धगति से इसकी जांच करे। दोषियों के आकाओं की परवाह किए बिना उन्हें कड़ी से कड़ी सजा देकर छत्तीसगढ़ में सुशासन होने का प्रमाण दे। यह भी विचारणीय है कि आम जनता जो कि जरा जरा सी बात पर अपने अधिकारों के लिए लड़ पड़ती है। उसी तरह अपने आसपास हो रहे अवैध कार्यों को रोकने लिए भी जागरुक होना चाहिए। छत्तीसगढ़ में कहावत प्रचलित है कि ÷कुत्ते की आंख इक्कीस दिन में खुलती है किन्तु आदमी की आंख खुलने में इक्कीस वर्ष लग जाते है।÷छत्तीसगढ तो अब पच्चीस वर्ष का गबरू गोल्लर हो गया है।अब तो छत्तीसगढ़ वासियों को हर अवैध कार्यों को रोकने के लिए जागना ही चाहिए। रामेश्वर वैष्णव जी के शब्दों में कहना होगा। मन ल तें पोठ करके भीड़बे त कइसनो परबत उतान हो जाही।घर के सियान सुते रही त बाहिर के पहुना घर के सियान हो जाही।

पाक को मध्यस्थ बनाकर फंसे ट्रंप

कहते हैं न कि खुद को चतुर समझने वाला कौआ ही गंदगी में चोंच मारता है। अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप का भी यही हाल है। पहले तो उन्होंने वेनेजुएला पर कब्जा किया और उसके बाद ईरान पर हमले के लिए उनका जोश जाग गया। बिना सोचे विचारे उन्होंने इजराइल के सहयोग ईरान पर हमला कर दिया। अब जबकि ईरान इजराइल और अमेरिका दोनों पर ही भारी पड़ रहा है तो डोनाल्ड ट्रंप ईरान के साथ समझौता वार्ता करने के लिए हर हथकंडा अपना रहे हैं किन्तु उन्हें न तो नाटों का समर्थन मिल रहा है और न ही खाड़ी देश भी उनकी इस मामले में कोई मदद कर पा रहे हैं। आखिरकार डोनाल्ड ट्रंप को अपने पिठ्ठू पाकिस्तान से सहयोग लेना पड़ा है और उन्होंने पाकिस्तान को अमेरिका व ईरान के बीच मध्यस्थता करने के लिए आदेश जारी किया। पाकिस्तान अमेरिका के हुक्म की अंदेखी कर ही नहीं सकता और उसने ईरान के सामने अमेरिका का 15 सूत्रिय प्रस्ताव पेश भी किया जिसे ईराने ने ठुकरा दिया इसके बावजूद अमेरिका के इशारे पर पाकिस्तान अपने मिशन पर लगा रहा इसी के तहत इसने तुर्की मिश्र और सउदी अरब के विदेश मंत्रियों की इस्लामाबाद में दो द्विवसीय बैठक बुलाई। पाकिस्तान के विदेश मंत्री इशहाक डार इस बैठक में अपनी बात इन तीनों देशों के विदेश मंत्रियों को समझाने में विफल रहे नतीजतन ये तीनों ही विदेश मंत्री बैठक छोड़कर वापस अपने देश चले गये। दो दिनों की बैठक दो तीन घंटो में ही बेनतीजा खत्म हो गई। इससे स्पष्ट है कि पाकिस्तान की यह कुटनीतिक पहल विफल हो गई। दरअसल पाकिस्तान के सामने दिक्कत यह है कि वह न तो अमेरिका की बात मानने से इंकार कर सकता है और न ही खाड़ी देशों पर किसी तरह का दबाव बना सकता है। खासतौर पर तो सउदी अरब के सामने उसकी जुबान ही नहीं खुल सकती जिससे उसने लाखों करोड़ रूपये का कर्ज ले रखा है। यही नहीं बल्कि पाकिस्तान ने सउदी अरब से रक्षा समझौता भी कर रखा है जिसके तहत यदि सउदी अरब पर कोई आक्रमण करता है तो उसे पाकिस्तान पर आक्रमण माना जाएगा और पाकिस्तान सउदी अरब के साथ मिलकर उस देश से जंग करेगा। मौजूदा हालात यह है कि ईरान सउदी अरब में भी बमबारी कर रहा है और पाकिस्तान समझौते के मुताबिक सउदी अरब का साथ नहीं दे पा रहा है क्योंकि वह ईरान के भी कहर से बचना चाहता है। यदि पाकिस्तान ने सउदी अरब या अन्य खाड़ी देशों के पक्ष में कदम आगे बढ़ाया तो निश्चित रूप से उसे ईरान के प्रकोप का सामना करना पड़ेगा। दरअसल अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने ही पाकिस्तान को समझौते की सुपारी देकर बड़ी भूल की है और अब वे खुद अपनी चाल में फंस गये हैं। इधर पाकिस्तान भी इस मौके का फायदा लेने के चक्कर में अपने लिए मुसीबत खड़ी कर रहा है। पाकिस्तान एक ऐसा देश है जो पैसों के लिए कुछ भी कर सकता है। होर्मज में विभिन्न देशों के जो जहाज फंसे हुए हैं उनकी निकासी कराने के लिए भी पाकिस्तान ने पैसे लेकर दलाली शुरू कर दी है। होर्मूज में पाकिस्तान ने अपने 20 जहाज फंसे होने का दावा किया है और उसने पाकिस्तानी झंडे लगाकर उसे वहां से निकालने की कवायद कर रहा है। जबकि वे जहाज अमेरिका के हैं गौरतलब है कि डोनाल्ड ट्रंप ने ही बात बात में पाकिस्तान को बेनकाब कर दिया है। डोनाल्ड ट्रंप ने बयान दिया है कि ईरान होर्मूज से अमेरिका के 20 जहाजों को जाने की इजाजत देने जा रहा है। ये वही जहाज हैं जिन्हें पाकिस्तान अपना बता रहा है। ऐसे में अब ईरान भी पाकिस्तान की मंशा को समझ गया है और अब वह उसके जहाज भी नहीं छोडेगा। कुल मिलाकर स्थिति यह है कि अब अमेरिका और ईरान के बीच वार्ता के सभी दरवाजे और खिड़कियां बंद होने जा रही हों और यह युद्ध अब और तेज होगा कोई बड़ी बात नहीं कि डोनाल्ड ट्रंप की सनक के कारण यह युद्ध विश्व युद्ध के रूप में तब्दिल न हो जाये यदि ऐसा हुआ तो इसका गंभीर दुष्परिणाम मिडिल ईस्ट के देशों को भुगतना पड़ेगा जो तेल और गैस के भरोसे ही चलते हैं। यदि उनका तेल और गैस नहीं बिकेगा तो वहां भूखमरी के हालात पैदा हो जाएंगे। इसका विपरीत प्रभाव दुनिया के तमाम देशों पर भी पड़ेगा जहां तेल और गैस के संकट की वजह से वहां की अर्थव्यवस्था चौपट हो जाएगी और इसकी पूरी जिम्मेदारी अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप के ऊपर आएगी। देखना होगा कि वैश्विक दबाव बढ़ने पर डोनाल्ड ट्रंप अपनी शर्तों से पीछे हटते हैं या पूरी दुनिया की तबाही का कारण बनते हैं।

स्वतंत्रता संग्राम सेनानी क्रांतिकारी परसराम सोनी की कहानी

लक्ष्मीनारायण लहरे

पुण्यतिथि पर विशेष

देश भक्ति के लिए मन में गहरी भावना ने जीवन को नई दिशा दी क्रांतिकारी सोच और क्रांतिकारियों से प्रेरणा ने परसराम को क्रांतिकारी बना दिया। रायपुर शहर का ईदगाहभाठा , शीतला मंदिर आस पास कभी जंगल और सुनसान रहा वहीं बम बनाने के परीक्षण करते थे और दुश्मनों से लड़ने अपने अंदर जुनून पैदा करते थे । देश भक्ति की जंग में जेल में भी रहे उनका पूरा जीवन समाज के लिए समर्पित रहा । परसराम सोनी छत्तीसगढ़ के उन वीर सपूतों में से एक थे, जिन्होंने देश की आजादी के लिए अपना सब कुछ दांव पर लगा दिया। उनका जन्म 3 अगस्त, 1920 को रायपुर के कंकालीपारा में हुआ था। बचपन से ही उनमें देशभक्ति की भावना इतनी गहरी थी कि उन्होंने अपनी शिक्षा और बुद्धि का उपयोग क्रांति की आग को फिर से जलाने के लिए किया। जब महात्मा गांधी के 'भारत छोड़ो आंदोलन' के बाद आजादी की लड़ाई थोड़ी धीमी पड़ गई तो परसराम जी ने महसूस किया कि सिर्फ अहिंसक तरीके से आजादी नहीं मिलेगी। उन्होंने चंद्रशेखर आजाद और भगत सिंह जैसे क्रांतिकारियों से प्रेरणा ली और अंग्रेजों को उन्हीं की भाषा में जवाब देने का फैसला किया। उन्होंने एक गुप्त क्रांतिकारी संगठन बनाया और अपने वैज्ञानिक ज्ञान का इस्तेमाल करते हुए वे घर पर ही एक गुप्त प्रयोगशाला में बम और हथियार बनाने लगे। उनके दोस्त गिरीलाल मिस्त्री, जिनका चटगांव के क्रांतिकारी सूर्यसेन से संबंध था, ने उन्हें एक पिस्तौल बनाकर दी , केमिस्ट्री की किताबों से टाइम बम और पोजीशन बम बनाना सीखा और ईदगाहभाठा , शीतला मंदिर के पीछे सुनसान स्थानों में उन दिनों जंगल हुआ करता था बम का परीक्षण किया करते थे । 1942 में अपने साथियों के साथ मिलकर सरकार के विरुद्ध बगावत की योजना बना रहे थे, जिससे अंग्रेजों में खलबली मच जाए, यह घटना पूरे छत्तीसगढ़ में क्रांति की एक नई लहर लेकर आती, अंग्रेज परसराम जी को पकड़ने के लिए पूरी ताकत लगा चुके थे। लेकिन परसराम जी की गिरफ्तारी एक दोस्त की गद्दारी के कारण हुई। 15 जुलाई, 1942 को जब वे गोलबाजार परभूलाल पतीराम बाड़े से गिरीलाल मिस्त्री से रिवॉल्वर और कारतूस लेकर साइकिल से लौट रहे थे तो उनके साथ उनका एक गद्दार मित्र एडवर्ड रोड जहां सदर रोड से मिलती है उसी तिग्गडे में, इस मित्र ने पहले से पुलिस को सूचना दे दी थी। सदर के पास पहुंचते ही उसने साइकिल की घंटी बजा कर पुलिस को संकेत दिया था। पुलिस ने परसराम को रिवाल्वर सहित गिरफ्तार कर लिया। उसके बाद गिरफ़्तारी और तलाशी का सिलसिला चल पड़ा सुधीर मुखर्जी, गिरिलाल मिस्त्री, विपिन बिहारी सूर, निखिल भूषण सूर ,कृष्णा राव थिटे, रणवीर सिंह शास्त्री, भूपेन्द्र नाथ मुखर्जी, दशरथ चौबे, कुंजबिहारी चौबे, क्रांतिकुमार, होरीलाल सोनी आदि लोगों की गिरफ्तारियां हुई। उस समय परसराम जी की उम्र केवल 22 साल के थे।मुकदमे शुरू हुई पूरा बार रूम के वकीलों की हमदर्दी क्रांतिकारियों के साथ थी सरकार को पैरवी करने के लिए वकील नहीं मिल रहे थे, क्रांतिकारियों के तरफ़ से श्री पी भादुरी, श्री एम भादुरी श्री एहमद अली,श्री चांदोरकर , श्री पेन्डारकर, श्री इरशाद अली व चुन्नीलाल जी अग्रवाल आदि वकीलों ने पैरवी की । परसराम जी को 7 साल की सजा सुनाई गई, गिरीलाल जी को 8 साल की सज़ा सुनाई गई, लेकिन जेल में भी उनका हौसला नहीं टूटा। वे लगातार अपने साथियों को संघर्ष जारी रखने के लिए प्रेरित करते रहे। 1946 में, 4 साल जेल में रहने के बाद, उन्हें एवं गिरीलाल जी को रिहा कर दिया गया, इससे पहले सभी लोग पहले रिहा हो चुके थे। जब परसराम जी गिरफ्तार हुए, तब उनकी पत्नी प्यारी सोनी को उनकी गतिविधियों के बारे में ज़्यादा कुछ भी पता नहीं था। अचानक हुई इस घटना से उन्हें बहुत गहरा आघात लगा। जब परसराम जी जेल में थे, उस दौरान बेटी शैलकुमारी, जिनका जन्म 1939 में हुआ था का निधन हो गया था।

हमारा मजाक न बने किसी की पीड़ा का कारण

योगेश कुमार गोयल

विश्वभर में 1 अप्रैल को मनाया जाने वाला 'मूर्ख दिवस' केवल एक साधारण दिन नहीं बल्कि हंसी, उल्लास और हल्के-फुल्के मजाक का ऐसा अवसर है, जो लोगों को रोजमर्रा की तनावपूर्ण जिंदगी से कुछ पल के लिए राहत प्रदान करता है। इस दिन छोटे-बड़े, बच्चे-बुजुर्ग, सभी एक-दूसरे के साथ मजाक करते हैं और बिना किसी दुर्भावना के हंसी-ठिठोली के माध्यम से माहौल को खुशनुमा बना देते हैं। इस दिवस की सबसे खास बात यह है कि इसमें किए जाने वाले मजाक आमतौर पर हानिरहित होते हैं। लोग ऐसी कल्पनात्मक या मनगढ़ंत बातें प्रस्तुत करते हैं, जिन पर सामने वाला आसानी से विश्वास कर ले और बाद में जब सच्चाई सामने आए तो दोनों पक्ष हंसी में डूब जाएं। कई बार तो बड़े-बड़े बुद्धिमान और चतुर लोग भी इस दिन मजाक का शिकार बन जाते हैं, जिससे वातावरण और भी मनोरंजक हो उठता है। यह परंपरा केवल आम लोगों तक सीमित नहीं रही है बल्कि बड़े मीडिया संस्थान, प्रतिष्ठित कंपनियां और नामी ब्रांड भी इस दिन अनोखे और रचनात्मक 'प्रैंक्स' के जरिए लोगों का मनोरंजन करते हैं। इतिहास में कई रोचक उदाहरण मिलते हैं। 1957 में बीबीसी ने 'स्पेगेटी ट्री' की खबर प्रसारित की, जिसमें बताया गया कि स्विट्जरलैंड में पेड़ों पर स्पेगेटी उगती है। हजारों लोगों ने इस पर विश्वास कर लिया। इसी तरह 1996 में बर्गर किंग ने 'लेफ्ट-हैंड व्हॉपर' बर्गर की घोषणा कर लोगों को चौंका दिया। डिजिटल युग में यह परंपरा और भी व्यापक हो गई है। सोशल मीडिया और ऑनलाइन प्लेटफॉर्म्स के जरिए ऐसे मजाक कुछ ही मिनटों में लाखों लोगों तक पहुंच जाते हैं। हालांकि, कभी-कभी लोग सच्ची खबरों को भी 'अप्रैल फूल' समझकर नजरअंदाज कर देते हैं और बाद में पछताते हैं। मूर्ख दिवस की उत्पत्ति को लेकर विभिन्न मत हैं। एक प्रचलित धारणा के अनुसार, प्राचीन समय में कई देशों में नया वर्ष 1 अप्रैल से शुरू होता था। जब कैलेंडर प्रणाली में बदलाव हुआ और नए साल की शुरुआत 1 जनवरी से होने लगी, तब भी कुछ लोग पुरानी परंपरा का पालन करते रहे। ऐसे लोगों का मजाक उड़ाने के लिए 1 अप्रैल को 'मूर्ख दिवस' के रूप में मनाया जाने लगा। धीरे-धीरे यह परंपरा मनोरंजन का माध्यम बन गई। भारतीय संस्कृति में भले ही यह परंपरा पश्चिम से आई हो लेकिन इसके मूल में निहित भावना (हंसी, आनंद और आपसी मेलजोल) भारतीय जीवन मूल्यों से भी मेल खाती है। आज की भागदौड़ और तनावपूर्ण जीवनशैली में जहां लोगों के पास हंसने का समय भी कम हो गया है, वहां यह दिन एक सुखद अवसर प्रदान करता है। हालांकि, यह ध्यान रखना आवश्यक है कि मजाक की सीमा शालीनता और संवेदनशीलता के भीतर ही होनी चाहिए। किसी की भावनाओं को ठेस पहुंचाने, अपमान करने या नुकसान पहुंचाने वाला मजाक इस दिवस की भावना के विपरीत है। मूर्ख दिवस का उद्देश्य किसी को नीचा दिखाना नहीं बल्कि सबको साथ लेकर हंसना और खुशियां बांटना है। वास्तव में, शुद्ध हास्य न केवल मानसिक तनाव को कम करता है बल्कि आपसी संबंधों को भी मजबूत बनाता है। यह मन में सकारात्मकता और भाईचारे की भावना का संचार करता है। ऐसे में मूर्ख दिवस आज के समय में और भी अधिक प्रासंगिक हो जाता है। अंततः कहा जा सकता है कि मूर्ख दिवस केवल मजाक का दिन नहीं बल्कि जीवन में खुशियों के छोटे-छोटे पल तलाशने और उन्हें साझा करने का उत्सव है। यदि इसे शालीनता और सद्भाव के साथ मनाया जाए तो यह दिन सचमुच हंसी के अनमोल पलों से जीवन को सराबोर कर सकता है।

सद्गुरू बोधामृतम्

सदगुरू ऋतेश्वर

◆ उनकी याद में, उनके स्मरण में, उनके प्रेम में, उनकी आज्ञा में, उनकी चरणों में प्रीति में जो भी क्षण व्यतीत हो रहे हैं तो बल्ले-बल्ले है। खूब आनंद लो उसमें !

◆ चाहे वो साधु, चाहे वो गशहस्थ हो, अगर उसके भीतर प्रेम और भक्ति है तो मैं उसके बस में रहता हूं, मैं उसके अधीन रहता हूं।

आज का इतिहास

नई दिल्ली वार्ता।1936 - भारत के उड़ीसा राज्य की स्थापना हुई, जो कि पहले कलिंग या उत्कल के नाम से जाना जाता था। 1973 - भारत के कार्बेट नेशनल पार्क में चीताओं को बचाने के लिए 'टाइगर बचाओं' अभियान चलाया गया। 1979 - ईरान मुस्लिम गणराज्य घोषित। 1996 - बैंक ऑफ़टोकियो और मित्सुबिशी बैंक के विलय से बना विश्व का सबसे बड़ा बैंक न्यू बैंक आफ़टोकियो-मित्सुबिशी ने अपना कार्य आरम्भ किया। 1997 - मार्टिना हिंगिस टेनिस इतिहास में सबसे कम उम्र की नंबर एक महिला खिलाड़ी बनीं। 1999 - मध्य पूर्व के विशेषज्ञ, चिन्तक और आलोचक प्रो. एडवर्ड डब्ल्यू. सेड को जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय ने न्यूयार्क में आयोजित एक समारोह में डि-लिट् की मानद उपाधि से सम्मानित किया। 2001 - यूगोस्लाविया के पूर्व राष्ट्रपति मिलोसेविच का आत्मसमर्पण। 2004 - मुल्तान में भारत ने पाक धरती पर पहली जीत दर्ज करते हुए पाकिस्तान को एक पारी और 52 रनों से हराया।

पाठकों की बात | पत्र, प्रतिक्रियाएं, सोशल मीडिया

ज़माने भर से बग़ावत पे उतर आता है जुनूने इश्क़ में वहशत पे उतर आता है कभी रस्मन ही सीने से लगा लूँ जो कभी वो तो कमबख्त मुहब्बत पे उतर आता है मैं तो हस हस के ही मिलता हूँ फ़ितरतन सब से वो मगर सबसे रक़ाबत पे उतर आता है ग़ैर का ज़िक्र भी कर दूँ जो भूले से कभी वो तो ताल्लुक की वज़ाहत पे उतर आता है हाँ मगर जब भी अह्सासे गुनाह हो जाये खुद ब खुद फ़िर वो नदामत पे उतर आता है।

- अनु मित्तल

सुध बेसुध मन धारे, तुमको देखें आसमान भक्त हाशिए पर हैं राघव बनें आप वितान सम्मुख दर्शन इच्छा जागी चले अयोध्या धाम इतिहासों में दर्ज स्वर्ण है पीतल को फाँके सत्य सनातन के रक्षक हम क्यों बगलें झाँकें सिसक रही है वसुधा तेरी अश्रु पोंछो राम देख हवा का बटमारीपन है तासीर गरम ठण्डी चादर हमें उढ़ा दो थोड़ी बचे शरम गेह दुआरे बैठ जपें हम सकुशल उत्तम नाम।

- अंजली यादव

पशु-पक्षियों से सीखा स्नेह इस धरा पर, जो सदा साथ रहते हैं हर विपत्तियों पर,, पौधे-वृक्ष फूल फल नदी झरने की कलकल- है सर्व रचना प्रभु की मनोरम धरा पर,, जो हरपल विलग है स्व और सर्वस्व से, है मानव रचना सर्वश्रेष्ठ इस पृथ्वी पर,, अब और क्या कहूं मैं स्व से ही ललित! क्या नहीं उपलब्ध मानव के स्व कर्म पर।

- ललित उपाध्याय

धर्म हिन्दू न मुसलमां है, सबको जनती तो एक सी माँ है मैं गाज़ा, ईरान ही नहीं इजरायल पर भी दुखी हूँ दोस्त जब भी मरे है कोई, इंसान ही धमाकों से मारा जाता है जीत और हार जहनी पागलपन, मसीहा को न सुहाता है।

- केदारनाथ शब्द मसीहा

कहते है गया वक़्त हाथ नहीं आता पर वक़्त को चुरा लेते है और कितना कम वक़्त अपने हिस्से रख पाते है पर मैंने समय को अपनी कलाई पर सजा लिया है। आप वस्तुएं चुरा सकते हैं, पर काबिलियत नहीं। पुनः स्थापित होने की शक्ति–जो कल को फिर से रच दे - वह ईश्वर बहुत कम लोगों को देता है। देखो मैंने वक्त को अपनी कलाई पर बांध लिया है।

- मेनका त्रिपाठी

ट्रंप रहें हुशियार बने वहि देत रहे धमकी इस्टाइल। काम तमाम ईरान करुं संग मा रखिकै अपने इजराइल।। सोचि बिचारि किये मनमा नहि दागि दिये इक साथ मिसाइल। ठोकिस खूब ईरान उन्है तब से वह भूलि गए इस्माइल ।।

- अजय मिश्रा अभिज्ञ

सीख नहीं पायी किसी के कंधे पर पैर रखकर ज़िंदगी में आगे बढ़ना... नहीं कर पायी किसी के एहसासो से फ़रेब कर दिशाहीन बन निकलना.... नहीं ले पायी किसी से बदला रौंदा गया एहसासों को ग़र मौन लगा जगह को छोड़ना... कि धरातल का अर्थ है..मिट्टी का शरीर और परमात्मा का अर्थ है प्रेम... और ईश्वर से मिल जाना!!

- नंदिता तनूजा

राशि फल

पं. देवव्रत शर्मा

मेषः आज दिन भागदौड़ वाला रहेगा। सुबह से ही काम की रफ्तार तेज रहेगी। एक काम खत्म नहीं होगा, दूसरा सामने आ जाएगा। ऑफिस में नई जिम्मेदारी मिल सकती है। शुरुआत में थोड़ा दबाव लगेगा, लेकिन आप संभाल लेंगे।

वृषः आज चीजें धीरे-धीरे आगे बढ़ेंगी। जल्दबाजी करेंगे तो काम बिगड़ सकता है। पुराने काम से फायदा मिलने के संकेत हैं। ऑफिस में अपना काम समय पर करें।

मिथुनः आज दिन आपके पक्ष में रहेगा। नए लोगों से संपर्क बनेगा। ये आगे काम आ सकता है। ऑफिस में आपकी मेहनत दिखेगी। कोई छोटी अच्छी खबर मिल सकती है।

कर्कः आज मन थोड़ा उलझा रह सकता है। एक साथ कई बातें दिमाग में चलेंगी। काम का दबाव रहेगा, लेकिन धीरे-धीरे सब ठीक होगा। घर के मामलों में ध्यान देना पड़ेगा। परिवार को समय दें।

सिंहः आज आपका आत्मविश्वास अच्छा रहेगा। जो काम अटका था, उसमें हलचल दिखेगी। ऑफिस में आपके काम की तारीफहो सकती है। लोग आपकी बात ध्यान से सुनेंगे।

कन्याः आज काम ज्यादा रहेगा। एक साथ कई जिम्मेदारियां आ सकती हैं। थकान महसूस होगी, लेकिन मेहनत रंग लाएगी। सीनियर्स का सपोर्ट मिलेगा।

तुलाः आज प्लानिंग के साथ काम करना जरूरी है। जल्दबाजी करेंगे तो नुकसान हो सकता है। ऑफिस में थोड़ा दबाव रहेगा, लेकिन आप संभाल लेंगे।

वृश्चिकः आज दिन अच्छा रहेगा। नई प्लानिंग पर काम शुरू कर सकते हैं। आपके आइडिया लोगों को पसंद आएंगे। दोस्तों और सहकर्मियों से सहयोग मिलेगा। मन खुश रहेगा।

धनुः आज दिन संतुलित रहेगा। काम और घर दोनों ठीक से चलेंगे। ऑफिस में सहयोग मिलेगा। कोई नया मौका मिल सकता है। मन शांत रहेगा और आप अपने काम पर फोकस कर पाएंगे।

मकरः आज थोड़ा संभलकर चलना होगा। छोटी बात भी विवाद में बदल सकती है। बोलते समय शब्दों का ध्यान रखें। काम में ध्यान बनाए रखें। फोकस टूट सकता है। पैसों को लेकर कोई रिस्क न लें।

कुंभः आज दिन अच्छा रहेगा। काम में प्रगति दिखेगी। नए मौके सामने आ सकते हैं। उन्हें पहचानना जरूरी है। आत्मविश्वास बना रहेगा। आप मुश्किल काम भी आसानी से पूरा कर लेंगे।

मीनः आज थोड़ा कंफ्यूजन रह सकता है। कोई फैसला लेने में जल्दबाजी न करें। काम में धैर्य रखना जरूरी है। पैसों के मामले में सावधानी रखें। अनावश्यक खर्च से बचें।

QUIZ TIME

Ramaquiz

1) तंबाकू उद्योग में भारत का स्थान क्या है?

2) डेजर्ट नाइट नामक त्रिपक्षीय वायु युद्ध अभ्यास में किन देशों ने भाग लिया?

3) प्रयागराज में 2025 के महाकुंभ के प्रबंधन के लिए उत्तर प्रदेश में नव घोषित जिले का नाम क्या है?

4) हाल ही में भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद ने बौद्ध भिक्षुओं और विद्वानों का सम्मेलन किस शहर में आयोजित किया?

5) रुशिकोंडा बीच, जो हाल ही में खबरों में था, किस राज्य में स्थित है?

उत्तरमाला- (1) दूसरा (2) भारत, ग्रीस और संयुक्त अरब अमीरात (3) महाकुंभ मेला (4) कोलंबो, श्रीलंका (5) आंध्र प्रदेश

पहेली

शब्द सामर्थ्य -359

शब्द सामर्थ्य क्रमांक 358 का हल

न्यूज गैलरी

प्रोफेसर जूही को मिली पीएचडी की उपाधि

दुर्ग। ब्राम्हणपारा दुर्गा मंदिर चौक निवासी जूही देवांगन को भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान, पवई (मुंबई) द्वारा पीएचडी की उपाधि प्रदान की गई है। उन्हें यह उपाधि एप्लाईड फिजिक्स विषय पर शोध के लिए मिली है। डॉ. जूही देवांगन वर्तमान में शासकीय महाविद्यालय पॉली कोरबा में असिस्टेंट प्रोफेसर के पद पर कार्यरत है। वे हाईकोर्ट अधिवक्ता शोभित कोष्ठा की पत्नि और दुर्ग के वरिष्ठ अधिवक्ता मुरली मनोहर देवांगन की पुत्री है। डॉ. जूही देवांगन को पीएचडी की उपाधि मिलने पर आईआईटी मुंबई के प्रोफेसरों के अलावा देवांगन परिवार द्वारा बधाई दी गई है।

सुसाइड केस में कांग्रेस नेता पाल गिरफ्तार

भिलाई। कोहका हाउसिंग बोर्ड निवासी मोहन रामटेके की आत्महत्या के मामले में पुलिस ने नामजद आरोपी कांग्रेस नेता राजू पाल को गिरफ्तार कर लिया है। मृतक मोहन ने आत्महत्या से पहले एक सुसाइड नोट छोड़ा था, जिसमें उसने राजू पाल और एक महिला पर मानसिक रूप से प्रताड़ित करने का गंभीर आरोप लगाया था। भिलाई नगर सीएसपी सत्यप्रकाश तिवारी ने बताया कि 28 मार्च को मोहन रामटेके ने अपने घर में फांसी लगाकर आत्महत्या कर ली थी। मौके से पुलिस को एक सुसाइड नोट मिला, जिससे घटना की असली वजह सामने आई। जांच में पता चला कि मोहन ने राजू पाल और एक अन्य महिला से कुछ पैसे उधार लिए थे। उधारी की रकम वापस मांगने को लेकर दोनों आरोपी उसे लगातार धमका रहे थे और मानसिक रूप से प्रताड़ित कर रहे थे।

आम नागरिकों को सस्ती, स्वच्छ और आत्मनिर्भर बिजली की सौगात

दुर्ग। केंद्र सरकार के नवीन एवं नवीकरणीय ऊर्जा मंत्रालय द्वारा संचालित प्रधानमंत्री सूर्य घर मुफ्त बिजली योजना के प्रभावी क्रियान्वयन हेतु नगर निगम दुर्ग द्वारा विशेष पहल की जा रही है। इस महत्वाकांक्षी योजना के माध्यम से शहर में सौर ऊर्जा को बढ़ावा देते हुए आम नागरिकों तक इसका लाभ पहुंचाने के प्रयास तेज़ कर दिए गए हैं। नगर निगम प्रशासन का लक्ष्य है कि अधिक से अधिक नागरिक इस जनकल्याणकारी योजना से जुड़ें और अपने घरों में सोलर रूफटॉप स्थापित कर आत्मनिर्भर ऊर्जा की दिशा में कदम बढ़ाएं। इससे न केवल बिजली बिल में राहत मिलेगी, बल्कि शहर स्वच्छ ऊर्जा की ओर अग्रसर होगा। प्रधानमंत्री सूर्य घर मुफ्त बिजली योजना का मुख्य उद्देश्य आम नागरिकों को सौर ऊर्जा के माध्यम से सस्ती, सुलभ एवं स्वच्छ बिजली उपलब्ध कराना है। साथ ही यह योजना पर्यावरण संरक्षण को प्रोत्साहित करते हुए कार्बन उत्सर्जन को कम करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगी।

जीवनदीप समिति कर्मियों की भविष्य निधि कटौती की मांग

भिलाई। जीवन दीप समिति में कार्यरत कर्मचारियों का भविष्य निधि कटौती करने की मांग की गई है। छत्तीसगढ़ प्रदेश स्वास्थ्य कर्मचारी संघ के प्रदेश महामंत्री सैय्यद असलम ने प्रदेश के मुख्य मंत्री विष्णुदेव साय और स्वास्थ्य मंत्री श्याम बिहारी जायसवाल से मांग करते हुए कहा कि प्रदेश के विभिन्न स्वास्थ्य केंद्रों में सभी जिलों के जिला अस्पताल, सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्रों और प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्रों में मानदेय पर काम करने वाले कर्मचारियों की भविष्य निधि राशि नहीं काटी जा रही है। ठेकेदार के अधीन काम करने वाले ठेका श्रमिकों और गार्ड की ड्यूटी करने वाले सुरक्षा कर्मी की भविष्य निधि कटौती होती है। स्वास्थ्य विभाग के जीवनदीप समिति के कर्मचारियों द्वारा कई वर्षों से काम करने के बावजूद उनका भविष्य आर्थिक रूप से सुरक्षित नहीं है। इन कर्मचारियों में वार्ड ब्वाय, आया, स्वीपर, सफाई कर्मचारी, अटेंडेंट, ओटी अटेंडेंट, कम्प्यूटर ऑपरेटर शामिल हैं। इनसे नियमित कर्मचारियों जैसा काम लिया जाता है। प्रदेश महामंत्री सैय्यद असलम ने कहा कि न्यूनतम मानदेय 3000 प्रति और अधिकतम 9000 तक मानदेय मिलता है। पीएफकटौती का कोई रास्ता सरकार ने नहीं निकाला है। सैय्यद असलम ने सभी प्रदेश के स्वास्थ्य सचिव, संचालक स्वास्थ्य सेवाओं और आयुक्त स्वास्थ्य सेवाएं से मांग की है कि प्रति माह इन कर्मचारियों के मानदेय से 300 रुपये प्रतिमाह कटौती की जाए और इन्हें नियमित नियुक्ति करने कदम उठाए जाएं।

ई-ऑफिस क्रियान्वयन में दुर्ग संभागीय कार्यालय का दबदबा

दुर्ग। सरकारी कामकाज में पारदर्शिता, गतिशीलता और पेपरलेस गवर्नेंस को बढ़ावा देने के उद्देश्य से लागू की गई ई-ऑफिस प्रणाली के संचालन में दुर्ग संभागीय कार्यालय ने पूरे छत्तीसगढ़ में अपनी विशिष्ट पहचान बनाई है। प्राप्त नवीनतम आंकड़ों के अनुसार, ई-फाइल काउण्ट के मामले में संभागीय कार्यालय दुर्ग 1373 फाइलों के साथ पूरे प्रदेश में प्रथम स्थान पर रहते हुए दबदबा कायम रखा है। यह उपलब्धि संभाग आयुक्त एसएन राठौर के कुशल मार्गदर्शन और उनके द्वारा दिये गए निर्देशन का प्रतिफल है। सभागीय कार्यालय में इस प्रणाली को प्रभावी बनाने के लिए अधिकारियों और कर्मचारियों को उच्च स्तरीय तकनीकी प्रशिक्षण प्रदान किया गया, जिससे कार्यालयीन फाइलों के निपटान में तेजी आई है। संभाग आयुक्त राठौर ने स्पष्ट किया है कि ई-ऑफिस केवल एक सॉफ्टवेयर मात्र नहीं, कार्य संस्कृति में एक क्रांतिकारी बदलाव है, जिससे आम जनता के कार्यों का समयबद्ध निराकरण सुनिश्चित हो रहा है। प्रदेश के संभागीय कार्यालय स्तर पर ई-ऑफिस की वर्तमान स्थिति के अनुसार दुर्ग संभागीय कार्यालय में 1373 ई-ऑफिस काउण्ट के साथ संभाग प्रथम स्थान पर है।

दामाद की हत्या करने वाली सास को आजीवन कारावास, पत्नी को 7 साल की सजा

■ **कुल्हाड़ी से किया था हमला**

दुर्ग/नवप्रदेश। कोर्ट ने दामाद की हत्या करने वाली सास भारती वर्मा को आजीवन कारावास की सजा सुनाई है। इस मामले में मृतक की पत्नी अनिता देशमुख को 7 साल की सजा सुनाई गई है। दरबार मोखली में पारिवारिक विवाद के बाद सास ने कुल्हाड़ी से हमला कर दामाद की हत्या कर दी थी। पत्नी ने लाश ठिकाने लगाने में मदद की थी। घटना के समय घर में मौजूद दो मासूम बेटियां इस घटना की चश्मदीद गवाह थीं। इस मामले में दोनों बेटियों की गवाही अहम साबित हुई। 29 अगस्त 2024 को ग्राम दरबार मोखली में सरपंच ने एक बंद घर से तेज दुर्गंध आने की सूचना पुलिस को दी थी। मौके पर पहुंचे कोटवार और ग्रामीणों ने ताला तोड़कर घर के भीतर प्रवेश किया। वहां एक सड़ी-गली लाश मिली। शव की पहचान 30 वर्षीय टिकेश्वर देशमुख के रूप में हुई। टिकेश्वर उसी घर में अपनी पत्नी अनिता और सास भारती वर्मा के साथ रहता था। सूचना मिलते ही रानीतराई पुलिस मौके पर पहुंची और जांच शुरू की। जांच में सामने आया कि घटना से एक दिन पहले 26 अगस्त को जन्माष्टमी उत्सव के बाद टिकेश्वर और सास भारती के बीच विवाद हुआ था। विवाद के दौरान टिकेश्वर ने अपनी सास को मारा था, जिससे वह आक्रोशित हो गई। रात में सभी लोगों के सोने के बाद गुस्साई सास भारती वर्मा ने कुल्हाड़ी से दामाद टिकेश्वर के सिर पर कई वार किये, जिससे उसकी मौके पर ही मौत हो गई। घटना के समय पास में सो रही पत्नी अनिता देशमुख ने पूरी वारदात देखने के बाद पति को बचाने की बजाय मां का साथ दिया। हत्या के बाद दोनों ने मिलकर शव को घर के पास एक खंडहरनुमा कमरे में छिपा दिया। अगले दिन दोनों ने घर में ताला लगाया और इलाज का बहाना बनाकर दुर्ग चले गए। भारती वर्मा ने अपने भाई को फोन कर बताया कि विवाद में वह घायल हो गई है और इलाज के लिए जा रही है। उसने दामाद के घायल होने की बात कही और उसे देखने के लिए भेजा। जब वह गांव पहुंचा तो घर बंद मिला। पुलिस ने जांच के दौरान संदेह होने पर दोनों आरोपियों को दुर्ग जिला अस्पताल से हिरासत में लिया। पूछताछ के दौरान सास ने हत्या करना स्वीकार कर लिया। इस मामले में अपर लोक अभियोजक शेखर वर्मा ने पैरवी की। सास भारती वर्मा को आजीवन कारावास और 1,000 रुपए जुर्माना और 7 साल का सश्रम कारावास और 1,000 रुपए जुर्माना, मृतक की पत्नी अनिता देशमुख को 7 साल का सश्रम कारावास और 1,000 रुपए जुर्माने की सजा सुनाई।

दीपक नगर स्कूल में बढ़ेंगी सुविधाएं बनेंगे नए कमरे : शिक्षा मंत्री गजेन्द्र

■ **अतिरिक्त कक्षों का निर्माण होगा, डोम शेड भी बनेगा**

दुर्ग/नवप्रदेश। शिक्षा मंत्री गजेन्द्र यादव ने दुर्ग के दीपक नगर स्थित स्वामी आत्मानंद स्कूल का विस्तृत निरीक्षण किया और स्कूल परिसर में प्रस्तावित विकास कार्यों का बारीकी से अवलोकन करते हुए अधिकारियों को आवश्यक दिशा-निर्देश दिए।

शिक्षा मंत्री गजेन्द्र यादव ने बताया कि विद्यार्थियों की बढ़ती संख्या और उनकी जरूरतों को ध्यान में रखते हुए स्कूल में अतिरिक्त कक्षों का निर्माण किया जाएगा। स्कूल परिसर में डोमशेड का निर्माण किया जाएगा, जिससे विद्यार्थियों को खेलकूद, प्रार्थना सभा, शैक्षणिक कार्यक्रम, सांस्कृतिक गतिविधियां और अन्य गतिविधियों के लिए सुरक्षित एवं मौसम के अनुकूल स्थान उपलब्ध होगा।

शिक्षा मंत्री गजेन्द्र यादव ने कहा कि इन निर्माण कार्यों से स्कूल का शैक्षणिक वातावरण और अधिक सुदृढ़ होगा और विद्यार्थियों को आधुनिक सुविधाओं के साथ पढ़ाई करने का अवसर मिलेगा। उन्होंने बताया कि दुर्ग विधानसभा क्षेत्र के 11 शासकीय स्कूलों को स्मार्ट स्कूल के रूप में विकसित किया जा रहा है, जबकि 10 स्कूलों में स्मार्ट क्लास की सुविधा शुरू की गई है। इन स्मार्ट कक्षाओं के माध्यम से विद्यार्थियों को डिजिटल बोर्ड, ऑडियो-वीडियो सामग्री और आधुनिक तकनीक के जरिए पढ़ाई का अवसर मिल रहा है, जिससे उनकी समझ और रुचि में वृद्धि हो रही है।

उन्होंने कहा कि सरकार का प्रयास है कि ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों के बीच शिक्षा के स्तर में किसी प्रकार का अंतर न रहे। हर बच्चे को समान अवसर मिले और वह आधुनिक शिक्षा से जुड़ सके, यही प्राथमिकता है।

निरीक्षण के दौरान शिक्षा मंत्री ने स्कूल प्रबंधन और शिक्षकों से चर्चा कर उनकी समस्याएं और सुझाव सुने। उन्होंने अधिकारियों को निर्देशित किया कि निर्माण कार्यों की गुणवत्ता का विशेष ध्यान रखा जाए और सभी कार्य निर्धारित समय-सीमा में पूर्ण किए जाएं। इस अवसर पर जिला उपाध्यक्ष शिवेंद्र परिहार, पार्षद लीलाधर पाल, मनोज सोनी, आरईएस के इंजीनियर, स्कूल के प्राचार्य, शिक्षकगण व अन्य स्टाफ सदस्य उपस्थित रहे।

सब्जी मंडी में नशीली दवाएं बेचते युवक गिरफ्तार, 72 कैप्सूल जब्त

दुर्ग/नवप्रदेश। धमधा रोड स्थित सब्जी मंडी में प्रतिबंधित नशीली दवाओं की बिक्री के लिये ग्राहक का इंतजार कर रहे दीपक ठाकुर (28 वर्ष) को मोहन नगर थाना पुलिस ने घेराबंदी कर गिरफ्तार किया। पुलिस ने दीपक के पास से 72 नशीले कैप्सूल बरामद किए हैं। पुलिस को मुखबिर से सूचना मिली थी कि धमधा रोड स्थित सब्जी मंडी के पास एक व्यक्ति संदिग्ध हालत में घूम रहा है और उसके पास नशीली दवाएं हैं।

सूचना मिलते ही पुलिस टीम ने मौके पर पहुंचकर इलाके की घेराबंदी की और संदेही को हिरासत में लेकर पूछताछ शुरू की। पुलिस टीम ने युवक की तलाशी ली। उसके लोवर की जेब से प्रतिबंधित नशीली दवाओं के 72 कैप्सूल बरामद किए गए। पूछताछ करने पर उसने स्वीकार किया कि लालच में वह इन दवाओं को अवैध रूप से बेचने का काम कर रहा था। पुलिस ने कार्रवाई के दौरान आरोपी के पास से नशीली दवाओं के अलावा नगद रकम भी बरामद की है। जब्त किए गए 72 कैप्सूल की कीमत लगभग 28,800 रुपए आंकी गई है। इसके अलावा आरोपी के पास से 960 रुपए कैश भी मिला है। आरोपी के खिलाफ मोहन नगर थाने में एनडीपीएस एक्ट की अलग-अलग धाराओं के तहत मामला दर्ज किया गया है। कागजी कार्रवाई पूरी करने के बाद आरोपी को कोर्ट में पेश किया। न्यायिक रिमांड पर जेल भेज दिया गया है।

सेवानिवृत्ति पर बीएसपी प्रबंधन ने दी विदाई

भिलाई/नवप्रदेश। सेल-बीएसपी की सेवा से मार्च माह 2026 में कुल 91 कर्मचारी सेवानिवृत्त हुए, जिसमें खदान बिरादरी के 3 सदस्यों सहित 11 कार्यपालक व 77 गैर-कार्यपालक शामिल हैं। कार्यपालकों हेतु विदाई समारोह का आयोजन इस्पात भवन स्थित निदेशक प्रभारी सभागार में किया गया। निदेशक प्रभारी चित्त रंजन महापात्र ने कार्यपालकों को सेवानिवृत्ति आदेश प्रदान किया और उनके कार्यकाल की सराहना करते हुए उन्हें स्वस्थ व सुखद भविष्य के लिए शुभकामनाएं दीं। इस अवसर पर भिलाई इस्पात संयंत्र के कार्यपालक निदेशक (सामग्री प्रबंधन) अजय कुमार चक्रवर्ती, कार्यपालक निदेशक (वित्त एवं लेखा) प्रवीण निगम, कार्यपालक निदेशक (मानव संसाधन) पवन कुमार, कार्यपालक निदेशक (परियोजनाएं) प्रबीर कुमार सरकार, कार्यपालक निदेशक (संकार्य) राकेश कुमार, मुख्य चिकित्सा अधिकारी प्रभारी (चिकित्सा एवं स्वास्थ्य सेवाएँ) डॉ विनीता द्विवेदी उपस्थित रहीं। सेवानिवृत्त हो रहे अधिकारियों ने अपने कार्यकाल की यात्रा साझा करते हुए अनुभवों और विचारों को व्यक्त किया। अंत में कार्यपालक निदेशकों ने सभी सेवानिवृत्त अधिकारियों को जीवन के नए पड़ाव के लिए अपनी शुभकामनाएँ दीं।

24 गांवों की उत्कृष्ट महिलाओं का सम्मान

■ **भाजपा जिला अध्यक्ष सुरेंद्र कौशिक ने नारी सशक्तिकरण एवं सम्मान कार्यक्रम में किया सम्मानित**

दुर्ग/नवप्रदेश। जनपद पंचायत दुर्ग के तत्वावधान में गत दिवस नगपुरा स्थित पीएम श्री स्वामी आत्मानंद स्कूल में नारी सशक्तिकरण एवं सम्मान कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम में रसोइया संघ, बिहान समूह, बैंक सखी, कृषि सखी, मितानिन,आंगनबाड़ी कार्यकर्ताओं सहित क्षेत्र की उत्कृष्ट महिलाओं का सम्मान किया गया। जिला पंचायत सभापति प्रिया साहू ने महिलाओं से अपील करते हुए कहा कि अपनी बेटियों को सुरक्षित रखें। उन्होंने दृष्टांत के माध्यम से आसपास संदिग्ध व्यक्तियों की पहचान करने और सतर्क रहने की आवश्यकता पर जोर दिया। जनपद अध्यक्ष कुलेश्वरी सुकदेव देवांगन ने कहा कि महिलाओं को सशक्त बनाना अत्यंत आवश्यक है। भाजपा जिला अध्यक्ष सुरेंद्र कौशिक ने क्षेत्र के 24 गांवों की महिलाओं को संबोधित करते हुए झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई, अवंति बाई लोधी, अहिल्या बाई होल्कर जैसी वीरांगनाओं का उल्लेख किया। उन्होंने कहा कि मोदी सरकार की अधिकांश योजनाएँ महिलाओं को केंद्र में रखकर बनाई जा रही हैं, जो उन्हें आर्थिक, सामाजिक और शैक्षणिक रूप से सशक्त बना रही हैं।

इस अवसर पर जिला भाजपा मंत्री गिरेश साहू, ओबीसी मोर्चा जिला अध्यक्ष तेखन सिन्हा, पूर्व जिला पंचायत सभापति मुकेश बेलचंदन, मंडल अध्यक्ष हेमंत सिन्हा, जिला संयोजक मछुवारा प्रकोष्ठ शिव निषाद, नगपुरा सरपंच सरोज रिगरी, सरपंच संघ अध्यक्ष ओमेश्वर यादव, विनोद साहू भाजयुमो अध्यक्ष, रामकली साहू महिला मोर्चा अध्यक्ष, दिव्या साहू उपाध्यक्ष महिला मोर्चा, चमन यादव महामंत्री भाजयुमो, सुकदेव देवांगन, बीजेपी सक्रिय कार्यकर्ता मनीष पठारी, भाना ठाकुर, शिवकुमारी वैष्णव उपस्थित थे।

हिंदू युवा मंच ने किया शोभायात्रा का स्वागत

दुर्ग/नवप्रदेश। श्री महावीर जन्म कल्याणक महोत्सव के अवसर पर राहुल जैन के नेतृत्व में हिन्दू युवा मंच ने शोभायात्रा का भव्य स्वागत किया और श्री महावीर जयंती की मंगलकामनाएँ दी। इस अवसर पर भाजपा जिला प्रवक्ता अरुण सिंह, हिन्दू युवा मंच के प्रदेश प्रमुख गोविन्दराज नायडू, महामंत्री राजेश शर्मा, अध्यक्ष श्रीकुमार नायर, भीम जैन, सुरेंद्र जैन, अरुण अग्रवाल, राजा देवांगन,शिबू सोनी, जय देवांगन, राज गुप्ता, नीरज देवांगन, हरि जगबेड़ा, अभिषेक प्रजापति उपस्थित थे।

महावीर जयंती पर जिला चिकित्सालय में फल वितरण

भगवान महावीर जन्म कल्याणक के शुभ अवसर पर जिला चिकित्सालय दुर्ग में फल वितरण सोमवार 30 मार्च को सुबह 8:30 बजे किया गया। वीरमाता शायर देवी और वीर भ्राता उत्तम चंद सार्थक भंडारी परिवार की ओर से फल वितरण के साथ ही मरीजों से संवाद करते हुए कुशल क्षेम पूछा गया। इस अवसर पर उत्तम सार्थक भंडारी, ऋषभ जैन, योगेश बरडिया, सूरज कांकरिया, उत्तम बरडिया, संभव जैन, सुनील कोठारी, प्रभात सांखला, सोहन काला, रजत लोढ़ा, प्रतीक कांकरिया, शुभम लोढ़ा, हरीश गोयल, दिनेश सुराना, धीरज, मनीष जैन, चंद्रशेखर पारख, अक्षय जैन, भावेश सांखला, विजय, पन्ना बाफना, महिला मंडल व अन्य लोगों की विशिष्ट भागीदारी रही।

भाजपा का स्थापना दिवस 6 अप्रैल को

भिलाई/नवप्रदेश। भारतीय जनता पार्टी का 46 वां स्थापना दिवस 6 अप्रैल को मनाया जाएगा। भाजपा जिला कार्यालय में आयोजन की तैयारी करने बैठक का आयोजन किया गया। जिला भाजपा अध्यक्ष पुरुषोत्तम देवांगन ने कहा कि जनसंघ की दो सीटों से शुरू हुई यात्रा आज प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में देश को नई ऊंचाइयों पर ले जा रही है। भाजपा का विस्तार पंच से लेकर पार्लियामेंट तक हो चुका है। 6 अप्रैल को भाजपा का 46 वां स्थापना दिवस हर्षोल्लास के साथ मनाया जाएगा। सभी कार्यकर्ता अपने घरों में भाजपा का ध्वज लगाएंगे और सुबह 6 बजे जिला कार्यालय में ध्वजारोहण कार्यक्रम आयोजित होगा। जिला प्रभारी रामजी भारती ने बताया कि 5 अप्रैल से 14 अप्रैल तक विभिन्न संगठनात्मक कार्यक्रम आयोजित किए जाएंगे, जिसमें 14 अप्रैल को डॉ. भीमराव अंबेडकर जयंती मनाई जाएगी और गांव चलो अभियान भी चलाया जाएगा। बैठक में मनीष अग्रवाल, सुषमा जेठानी, नटवर ताम्रकार, महेश वर्मा, वीरेन्द्र साहू, ईश्वर सिंह ठाकुर, उषा बारले, दिव्या रतन भसीन, स्थापना दिवस संयोजक स्थापना दिवस गोपाल कृष्ण वर्मा, राम खिलावन साहू, उपकार चंद्राकर, चिन्ना केश्वलु, शैलेन्द्र सिंह, मनोज तिवारी, तुलसी साहू प्रेमलाल साहू भाजपा महिला मोर्चा जिलाध्यक्ष स्वीटी कौशिक सहित समस्त मोर्चा एवं प्रकोष्ठों के पदाधिकारी उपस्थित रहे।

111 बैंक खातों के जरिए 86 लाख का ट्रांजेक्शन, 10 गिरफ्तार

■ **देश के अलग-अलग हिस्सों से आए ठगी के पैसे**

दुर्ग/नवप्रदेश। पुलिस ने साइबर ठगी के खिलाफ बड़ी कार्रवाई की है। आरोपियों ने 111 बैंक खातों के जरिए करीब 86 लाख रुपए का अवैध लेन-देन किया था। मोहन नगर थाना पुलिस ने बैंक खातों को किराए पर देकर ठगी का पैसा ट्रांसफर कराने वाले 10 आरोपियों को गिरफ्तार किया गया है।

भारत सरकार के गृह मंत्रालय के अधीन काम करने वाले भारतीय साइबर अपराध समन्वय केंद्र से कुछ संदिग्ध बैंक खातों की जानकारी मिली थी। इसके बाद पुलिस ने दुर्ग स्टेशन रोड स्थित कर्नाटक बैंक की शाखा में चल रहे 111 बैंक खातों की जांच शुरू की।

जांच में यह चौंकाने वाला खुलासा हुआ कि इन खातों का इस्तेमाल देश के अलग-अलग हिस्सों में लोगों से ठगी गई रकम को जमा करने और निकालने के लिए किया जा रहा था। जांच के दौरान पता चला कि इन खातों में अब तक कुल 86,33,247 रुपए का अवैध लेनदेन हुआ है। दुर्ग में पकड़े गए 10 आरोपियों ने आर्थिक लाभ के लालच में अपने खाते ठगों को उपलब्ध कराए थे।

पुलिस ने इस मामले में मधु साहू (45), ज्योति गौतम (28), फरहद खान (56), भूपेश गोहिल (51), अजय कुमार उर्फ मोनू (29), मसीर आलम (27), नवीन भागवत (24), भूपेंद्र कुमार टंडन (36), संतोष बिसाई (28) और हीरा सिंह (55) को गिरफ्तार किया है।

पुलिस ने इनके पास से बैंक खातों से जुड़े दस्तावेज, मोबाइल फोन और अन्य इलेक्ट्रॉनिक सबूत जब्त किए हैं। सभी 10 आरोपियों को कोर्ट में पेश कर न्यायिक रिमांड पर जेल भेज दिया गया है। पुलिस इस नेटवर्क से जुड़े अन्य लोगों की तलाश में जुटी है।

कुथरेल और कोनारी में दुर्ग ग्रामीण विधायक ललित चंद्राकर ने दी विकास कार्यों की सौगात

विधायक ने किया 86 लाख के विकास कार्यों का लोकार्पण

दुर्ग/नवप्रदेश। ग्रामीण विधानसभा क्षेत्र अंतर्गत ग्राम कुथरेल कोनारी में विभिन्न मदों से निर्मित विकास कार्यों बाउंड्रीवाल, सामुदायिक भवन, चबूतरा, ओपन जिम व मंच और कोनारी में 20 लाख की लागत से विभिन्न गलियों में सीसी रोड का लोकार्पण विधायक ललित चंद्राकर ने किया। ग्राम कुथरेल में स्वतंत्रता संग्राम सेनानी प्रांगण में बाउंड्रीवाल निर्माण 3.50 लाख, आबादीपारा सामुदायिक भवन 12 लाख, चबूतरा निर्माण 50 हजार ओपन जिम स्थापना 5 लाख, मंच निर्माण 1 लाख, ग्राम कोनारी विभिन्न गलियों में सीसी रोड निर्माण 20 लाख का लोकार्पण किया गया। इस अवसर पर कुथरेल में सरपंच गीता गजपाल, जनपद सभापति लोमश चंद्राकर, मंडल अध्यक्ष लिकेश्वर देशमुख, महामंत्री पुराण देशमुख, डीलेश साहू, वरिष्ठ कार्यकर्ता टीकाराम साहू, उपसरपंच लोकनाथ साहू, भानपुरी सरपंच उमेंदी राम ठाकुर, मंडल मंत्री राजेश चंद्राकर, सोसायटी अध्यक्ष महेन्द्र चंद्राकर, सांसद प्रतिनिधि मनोज चंद्राकर, किसान मोर्चा मंडल अध्यक्ष नोवेश्वर पिपरिया, ब्रह्मानंद चंद्राकर, आत्मानंद साहू, पारख साहू, डॉ. नरेंद्र चंद्राकर कोनारी सरपंच गूंजेश्वरी पारख साहू, जनपद सदस्य बेला यादव, पंचगण मणि ठाकुर, झूनिया साहू, हृदय यादव श्रवण कुमार बुधारू, किसान मोर्चा मंडल अध्यक्ष नोवेश्वर पिपरिया मंडल मंत्री राजेश चंद्राकर, भानपुरी सरपंच उमेंदी राम ठाकुर, सांसद प्रतिनिधि मनोज चंद्राकर सहित बड़ी संख्या में ग्रामवासी उपस्थित रहे।

इस अवसर पर दुर्ग ग्रामीण विधायक ललित चंद्राकर ने कहा प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के 'विकास भी, विरासत भी' के मंत्र और मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय के सुशासन में हमारी सरकार जन-आकांक्षाओं के अनुरूप तेज़ी से काम कर रही है। महतारी वंदन योजना से मातृशक्ति का सशक्तिकरण, कृषक उन्नति योजना से किसानों को संबल, तेन्दूपत्ता संग्राहकों के मानदेय में वृद्धि, आवास-स्वच्छता के लक्ष्यबद्ध कार्य और पारदर्शी सेवा वितरण जैसे जनकल्याणकारी कदम अब गांव-गली तक परिणाम दे रहे हैं। दुर्ग ग्रामीण में सड़क, नाली, पेयजल, स्ट्रीट लाइट, सामुदायिक भवन, ओपन जिम, मंच, चबूतरे व सीसी रोड जैसे कार्यों से लोगों का जीवन सुगम हुआ है। उन्होंने कहा कि सड़क, शिक्षा, स्वास्थ्य और सामुदायिक सुविधाएं किसी भी क्षेत्र के समग्र विकास की नींव होती हैं। दुर्ग ग्रामीण विधानसभा क्षेत्र में लगातार हो रहे विकास कार्य इस बात का प्रमाण हैं कि सरकार जनता की जरूरतों को समझते हुए योजनाओं को धरातल पर उतार रही है। उन्होंने आश्वस्त किया कि आने वाले समय में भी दुर्ग ग्रामीण क्षेत्र में विकास की गति निरंतर बनी रहेगी और जनकल्याणकारी योजनाओं का लाभ हर नागरिक तक पहुंचेगा।

द्रोणिका सक्रिय, छत्तीसगढ़ में अगले दो दिनों तक आंधी-बारिश की संभावना

बिलासपुर/नवप्रदेश। छत्तीसगढ़ में अगले दो दिन अंधड़ और बारिश का अलर्ट जारी किया गया है। मौसम विभाग के अनुसार कुछ जगहों पर गरज-चमक के साथ हल्की बारिश हो सकती है। 40-50 किमी प्रति घंटे की रफ्तार से हवाएं चलने और बिजली गिरने की भी आशंका है। कुछ इलाकों में ओले गिर सकते हैं, जिससे तापमान में 2-3 डिग्री की गिरावट आएगी। पश्चिम बंगाल से ओडिशा तक बने ट्रफ के असर से प्रदेश के मध्य और दक्षिणी हिस्सों में 4 अप्रैल तक आंधी-बारिश की स्थिति बनी रहेगी।

बिलासपुर सहित कई जिलों में बादल छाए हुए हैं और हवाएं चल रही हैं। इससे पहले मुंगेली और गौरेला-पेंड्रा-मरवाही में तेज हवाओं के साथ जोरदार बारिश हुई, वहीं दो जगह पेड़ गिरे और बिजली के तार टूटने से सप्लाई प्रभावित रही। प्रदेश में फिलहाल तापमान सामान्य से 2-3 डिग्री अधिक दर्ज किया जा रहा है। रायपुर में अधिकतम तापमान 40.5 डिसे. और अंबिकापुर में न्यूनतम 19.6 डिसे. रिकॉर्ड किया गया। एक पश्चिमी विक्षोभ ऊपरी हवा के चक्रीय चक्रवाती

परिसंचरण के रूप में उत्तर पाकिस्तान और उससे लगे जम्मू के ऊपर 3.1 किलोमीटर ऊंचाई तक विस्तारित है। इसके साथ एक द्रोणिका मध्य क्षोभमंडल में 5.8 किलोमीटर ऊंचाई पर 70 डिग्री पूर्व और 26 डिग्री उत्तर में स्थित है। एक ऊपरी हवा का चक्रीय चक्रवाती परिसंचरण पूर्वी उत्तर प्रदेश के ऊपर 0.9 किलोमीटर ऊंचाई तक विस्तारित है। एक पूर्व-पश्चिम द्रोणिका पूर्वी उत्तर प्रदेश में स्थित ऊपरी हवा के चक्रीय चक्रवाती परिसंचरण से मणिपुर तक बिहार, दक्षिण उप हिमालयीन पश्चिम बंगाल, उत्तर बांग्लादेश, मेघालय और दक्षिण पूर्वी असम होते हुए 0.9 किलोमीटर ऊंचाई तक विस्तारित है। एक हवा की अनियमित गति/ द्रोणिका पूर्वी उत्तर प्रदेश से दक्षिण तमिलनाडु तक पूर्वी मध्य प्रदेश, विदर्भ, मराठवाड़ा, अंदरूनी कर्नाटक होते हुए 0.9 किलोमीटर ऊंचाई तक विस्तारित है। एक ऊपरी हवा का चक्रीय चक्रवाती परिसंचरण तटीय आंध्र प्रदेश और उससे लगे तेलंगाना के ऊपर 0.9 किलोमीटर ऊंचाई तक विस्तारित है।

बिलासपुर-गौरेला में बारिश, गर्मी से मिली राहत

बिलासपुर और गौरेला-पेंड्रा-मरवाही जिले में मंगलवार को तेज हवाओं के साथ जोरदार बारिश हुई। मौसम में हुए बदलाव से भीषण गर्मी से राहत मिली, लेकिन जनजीवन प्रभावित हुआ। जीपीएम में तेज आंधी और तूफानी हवाओं के कारण जिले के कई हिस्सों में बिजली गुल हो गई। शहरी और ग्रामीण दोनों इलाकों में घंटों तक बिजली गुल रही, जिससे लोगों को असुविधा का सामना करना पड़ा। वहीं 2 अलग-अलग जगहों पर पेड़ भी गिरे हैं। गौरतलब है कि प्रदेश में अधिकतम तापमान सामान्य बना हुआ है। दिन में गर्मी महसूस की जा रही है। मौसम विभाग की माने तो अगले 3 दिनों तक तापमान में कोई विशेष बदलाव की संभावना नहीं है। लेकिन इसके बाद तापमान 2 से 3 डिग्री तक गिर सकता है। प्रदेश में कुछ जगहों पर हल्की बारिश, बिजली गिरने और आंधी की आशंका जताई गई थी। पश्चिम बंगाल से ओडिशा तक बने ट्रफ के असर से प्रदेश के सेंट्रल और साउथ के कुछ इलाकों में 4 अप्रैल तक आंधी-बारिश का अलर्ट जारी किया गया है।

न्यूज गैलरी

हाईकोर्ट के 5 एडिशनल जजों को स्थाई करने अनुशंसा

बिलासपुर/नवप्रदेश। सुप्रीम कोर्ट के कोलेजियम की 24 मार्च 2026 को हुई महत्वपूर्ण बैठक में छत्तीसगढ़ हाई कोर्ट में पदस्थ एडिशन जज जस्टिस सचिन सिंह राजपूत, जस्टिस राधाकिशन अग्रवाल, जस्टिस संजय कुमार जायसवाल, जस्टिस बिभू दत्त गुरु एवं जस्टिस ए के प्रसाद को परमानेंट जस्टिस के पद में नियुक्त करने के प्रस्ताव को मंजूरी दी है।

टीबी मुक्त भारत अभियान में एक्स-रे टेक्नीशियन की होगी भर्ती

बिलासपुर/नवप्रदेश। टीबी मुक्त भारत अभियान 100 दिवसीय अंतर्गत जीवनदीप समिति के तहत एक्स-रे टेक्नीशियन की भर्ती की जानी है। इच्छुक एवं पात्र अभ्यर्थियों से 7 दिवस के भीतर आवेदन मंगाए गए हैं। आवेदन सभी आवश्यक शैक्षणिक दस्तावेजों की छायाप्रति के साथ शहरी प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र, राजकिशोर नगर में जमा किए जा सकते हैं।

राज्यपाल डेका का आज कोरबा - रतनपुर दौरा

बिलासपुर/नवप्रदेश। राज्यपाल रमेन डेका कल 1 अप्रैल को कोरबा और बिलासपुर जिले के दौरे पर रहेंगे। निर्धारित कार्यक्रम के अनुसार श्री डेका रायपुर लोकभवन से सवेरे 7.30 बजे सड़क मार्ग द्वारा मुंगेली जिले के चंदखुरी विश्राम गृह के लिए प्रस्थान करेंगे। इसके बाद राज्यपाल सुबह 9 बजे कोरबा जिले के कटघोरा क्षेत्र अंतर्गत ग्राम धपधप, बांकीमोंगरा के लिए रवाना होंगे। यहां वे प्रात: 11 बजे आयोजित 'दिव्य श्री हनुमंत कथा एवं 108 दिव्यांग एवं निर्धन कन्याओं के सामूहिक विवाह' कार्यक्रम में शामिल होंगे। कार्यक्रम के पश्चात राज्यपाल श्री डेका दोपहर 12:30 बजे रतनपुर स्थित विश्राम गृह के लिए प्रस्थान करेंगे, जहां दोपहर 1:30 बजे आगमन निर्धारित है। इसके बाद वे दोपहर 2:30 बजे पुन: चंदखुरी के लिए रवाना होंगे। दोपहर 3:30 बजे चंदखुरी पहुंचने के बाद अल्प विश्राम करेंगे और शाम 3:45 बजे रायपुर स्थित लोक भवन के लिए प्रस्थान करेंगे।

जांजगीर में महिला थाना का आईजी बिलासपुर रेंज रामगोपाल गर्ग ने किया शुभारंभ

परिवार परामर्श से जुड़े काउंसलरों को दिया आईडी कार्ड, किया सम्मानित

बिलासपुर/नवप्रदेश। जांजगीर-चांपा जिले में महिला सुरक्षा और सशक्तिकरण की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम उठाते हुए आज 31 मार्च को महिला थाना जांजगीर का विधिवत शुभारंभ किया गया। इस अवसर पर बिलासपुर रेंज आईजी के द्वारा फीता काटकर नए महिला थाने का उद्घाटन किया गया।

आईजी बिलासपुर रेंज द्वारा आयोजित कार्यक्रम में परिवार परामर्श से जुड़े काउंसलरों को उनके उत्कृष्ट कार्य, समर्पण एवं समाज में पारिवारिक विवादों के समाधान हेतु किए जा रहे सराहनीय प्रयासों के लिए प्रशस्ति पत्र प्रदान कर सम्मानित किया गया। इस अवसर पर आईजी ने काउंसलरों की भूमिका की प्रशंसा करते हुए कहा कि उनका योगदान समाज में पारिवारिक समरसता बनाए रखने में अत्यंत महत्वपूर्ण है। इस अवसर पर जांजगीर चांपा जिले के कलेक्टर जन्मेजय महोबे, जांजगीर चांपा एसपी विजय कुमार पाण्डेय, सक्ती जिला के एसपी प्रफुल्ल कुमार ठाकुर, अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक यातायात जांजगीर उदयन बेहार, डीएसपी मुख्यालय विजय कुमार पैकरा, एसडीओपी अकलतरा प्रदीप कुमार सोरी, सीएसपी जांजगीर योगिताबाली खापर्डे, डीएसपी अजाक सतरूपा तारम, रक्षित निरीक्षक प्रदीप कुमार जोशी सहित क्षेत्र के जनप्रतिनिधि गणमान्य, नागरिकगण उपस्थित रहे।

महिला कमांडो टीम की प्रशंसा

कार्यक्रम के दौरान जिले महिला कमांडो टीम उपस्थित रहे जिनको 'आईजी बिलासपुर रेंज बिलासपुर के द्वारा जांजगीर-चांपा जिला की गठित महिला कमांडो टीम की सराहना करते हुए उनके सहयोग और उत्कृष्ट कार्य की प्रशंसा की गई। 'आईजी ने साइबर थाना जांजगीर का निरीक्षण किया, जहां उन्होंने उपस्थित नागरिकों को साइबर जागरूकता, साइबर धोखाधड़ी से बचाव एवं सोशल मीडिया के सुरक्षित उपयोग के संबंध में विस्तृत जानकारी दी। उन्होंने आमजन से अपील की कि वे डिजिटल माध्यमों का उपयोग करते समय सतर्कता बरतें और किसी भी संदिग्ध गतिविधि कीप तुरंत सूचना पुलिस को दें।

गणमान्य नागरिकगणों को किया सम्मानित

आईजी बिलासपुर ने जिले के गणमान्य नागरिकों को सम्मानित किया। इस अवसर पर आईजी ने नागरिकों द्वारा समाज के विभिन्न क्षेत्रों में किए जा रहे उत्कृष्ट कार्यों, सामाजिक सेवाओं और योगदान की सराहना की। उन्होंने बताया कि ऐसे नागरिक समाज में सकारात्मक बदलाव लाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं और उनकी सेवाएँ युवाओं के लिए प्रेरणा का स्रोत हैं। सम्मानित नागरिकों ने अपने अनुभव साझा किए और समाज में सुधार एवं सहयोग की दिशा में अपने प्रयासों को आगे बढ़ाने का संकल्प व्यक्त किया, आईजी ने इस अवसर पर कहा कि समाज के हर वर्ग का सहयोग और सक्रिय भागीदारी पुलिस एवं प्रशासनिक कार्यों को भी प्रभावी बनाने में सहायक होती है। कार्यक्रम के अंत में सम्मानित नागरिकों को प्रतीक चिन्ह और प्रशस्ति पत्र प्रदान किए गए, जिससे उनके योगदान को मान्यता और प्रोत्साहन मिला।

प्रेस प्रतिनिधियों से सौहार्दपूर्ण भेंट

आईजी बिलासपुर रेंज बिलासपुर ने जिले के प्रेस प्रतिनिधियों से सौहार्दपूर्ण भेंट कर पुलिस की प्राथमिकताओं और महिला सुरक्षा के प्रति प्रतिबद्धता को साझा किया। उन्होंने कहा कि महिला थाना न केवल महिलाओं की शिकायतों के त्वरित निराकरण में सहायक होगा, बल्कि उन्हें एक सुरक्षित और विश्वासपूर्ण वातावरण भी प्रदान करेगा।

'संचार साथी' मोबाइल एप के संबंध में दी गई विस्तृत जानकारी

आम नागरिकों को साइबर अपराधों से सुरक्षित रखने के उद्देश्य से भारत सरकार के दूरसंचार विभाग द्वारा 'संचार साथी' मोबाइल एप एवं पोर्टल शुरू किया गया है। इस प्लेटफॉर्म के माध्यम से उपयोगकर्ता संदिग्ध कॉल, एसएमएस व व्हाट्सएप मैसेज की शिकायत 'चक्षु' सुविधा से कर सकते हैं, वहीं सीईआईआर के जरिए खोए या चोरी हुए मोबाइल की रिपोर्ट दर्ज कर आईएमईआई ब्लॉक कराया जा सकता है। पोर्टल पर टैफकप सुविधा के माध्यम से आधार से जुड़े अनजान मोबाइल नंबरों की जानकारी लेकर उन्हें ब्लॉक किया जा सकता है। साथ ही जेन्यूननेस आफ मोबाइल हैंडसेट से सेकंड हैंड मोबाइल की सत्यता जांची जा सकती है। उपयोगकर्ता फर्जी इंटरनेशनल कॉल्स को ब्लॉक करने, अपने क्षेत्र के इंटरनेट सेवा प्रदाताओं की जानकारी प्राप्त करने तथा थर्डपार्टी कॉन्टेक्ट डिटेल्स के जरिए बैंक/वित्तीय संस्थाओं के सत्यापित संपर्क विवरण भी प्राप्त कर सकते हैं। यह एप एन्ड्रायड एवं आईओएस प्लेटफॉर्म पर उपलब्ध है, जिसका उद्देश्य आम नागरिकों को सुरक्षित डिजिटल वातावरण प्रदान करना है। सायबर थाना जांजगीर का निरीक्षण आईजी द्वारा प्रभावी एवं सुव्यवस्थित ढंग से किया गया। निरीक्षण के दौरान उन्होंने थाना परिसर की व्यवस्थाओं, उपलब्ध आधुनिक तकनीकी संसाधनों तथा सायबर अपराधों की जांच प्रक्रिया का गहनता से अवलोकन किया। आईजी ने दर्ज प्रकरणों की विस्तार से समीक्षा करते हुए शिकायतों के त्वरित एवं पारदर्शी निराकरण पर विशेष जोर दिया। उन्होंने डिजिटल साक्ष्यों के संकलन, विश्लेषण एवं सुरक्षित रख-रखाव की प्रक्रिया को और अधिक सुदृढ़ बनाने के निर्देश दिए। अधिकारियों एवं कर्मचारियों से संवाद करते हुए आईजी ने सायबर अपराधों की बढ़ती चुनौतियों के मद्देनजर तकनीकी दक्षता बढ़ाने, नवीनतम सॉफ्टवेयर एवं टूल्स का प्रभावी उपयोग करने तथा टीमवर्क को सुदृढ़ करने की आवश्यकता बताई। साथ ही, आम नागरिकों को सायबर सुरक्षा के प्रति जागरूक करने के लिए अभियान चलाने के निर्देश भी दिए, ताकि ऑनलाइन ठगी, फर्जी कॉल एवं सोशल मीडिया से जुड़े अपराधों पर प्रभावी नियंत्रण पाया जा सके।

सीपत भाजपा महाप्रशिक्षण अभियान में 120 कार्यकर्ताओं की रिकॉर्ड भागीदारी

सीपत/नवप्रदेश। भारतीय जनता पार्टी सीपत मंडल के तत्वावधान में सोमवार को आयोजित पंडित दीनदयाल उपाध्याय महाप्रशिक्षण अभियान 2026 के अंतर्गत मंडल परीक्षण वर्ग कार्यक्रम ने पूरे बिलासपुर जिला ग्रामीण में अपनी अलग पहचान बनाई। यह कार्यक्रम न केवल सबसे सफल रहा, बल्कि सर्वाधिक 120 कार्यकर्ताओं के पंजीयन के साथ अब तक के हुए कार्यक्रम में पूरे जिले में प्रथम स्थान पर रहा। कार्यक्रम का आयोजन सोमवार को ग्राम धनिया स्थित मंगल भवन में किया गया, जहां बड़ी संख्या में भाजपा कार्यकर्ताओं की सक्रिय भागीदारी देखने को मिली। सत्र का शुभारंभ ध्वजारोहण एवं राष्ट्रीय गीत के साथ गरिमामय वातावरण में किया गया। जिला भाजपा बिलासपुर ग्रामीण अध्यक्ष मोहित जायसवाल ने बूथ प्रबंधन विषय पर कार्यकर्ताओं को

संबोधित करते हुए कहा कि भाजपा की वास्तविक शक्ति बूथ स्तर पर सक्रिय कार्यकर्ताओं में निहित है। यदि हर बूथ मजबूत होगा, तो संगठन स्वत: ही सशक्त बनेगा और चुनाव में विजय सुनिश्चित होगी। कार्यकर्ताओं को चाहिए कि वे अपने-अपने बूथों पर सतत संपर्क, मतदाता सूची का गहन अध्ययन और सरकार की योजनाओं का प्रभावी प्रचार-प्रसार करें। उन्होंने आगे कहा कि बूथ स्तर पर टीम वर्क, अनुशासन और नियमित संवाद ही संगठन को नई ऊंचाइयों तक पहुंचा सकता है। इससे पहले कार्यक्रम के प्रथम सत्र में किसान मोर्चा के प्रदेश प्रवक्ता बीपी सिंह ने राज्य एवं केंद्र सरकार की उपलब्धियों पर विस्तार से प्रकाश डाला और कार्यकर्ताओं को सरकार की जनहितकारी योजनाओं को जन-जन तक पहुंचाने का आह्वान किया। इसके पश्चात जिला भाजपा मंत्री प्रणव शर्मा ने कार्य विस्तार और हमारी दृष्टि विषय पर मार्गदर्शन देते हुए संगठन को मजबूत बनाने के लिए कार्यकर्ताओं को सक्रिय भूमिका निभाने के लिए प्रेरित किया। अन्य विषय वक्ताओं ने भी संगठन की कार्यप्रणाली, विचारधारा, बूथ सशक्तिकरण, और जनसंपर्क जैसे महत्वपूर्ण विषयों पर अपने-अपने विचार रखे, जिससे कार्यकर्ताओं को संगठनात्मक कार्यों की गहराई से समझ मिली।

नागपुर मंडल के रेल कर्मचारी ने लौटाया खोया आभूषण

बिलासपुर/नवप्रदेश। दक्षिण पूर्व मध्य रेलवे, नागपुर मंडल में कार्यरत मुख्य टिकट निरीक्षक (सीटीआई) राज कुमार ने अपनी सतर्कता, ईमानदारी एवं कर्तव्यनिष्ठा का परिचय देते हुए ट्रेन में छूटी यात्री की बहुमूल्य सोने की बाली को सुरक्षित लौटाकर रेल सेवा की उत्कृष्ट परंपरा को और सुदृढ़ किया है।

प्राप्त जानकारी के अनुसार, दिनांक 30 मार्च 2026 को श्री राज कुमार गाड़ी संख्या 20846 (बीकानेर-बिलासपुर सुपरफास्ट) में ट्रेन कैप्टन के रूप में ड्यूटी पर कार्यरत थे। नागपुर स्टेशन से ट्रेन के प्रस्थान के पश्चात नियमित कोच निरीक्षण के दौरान वे एसी प्रथम श्रेणी (॥1) कोच के एफ केबिन में पहुंचे। निरीक्षण के दौरान उन्होंने देखा कि प्रयुक्त बेडशीट पर एक सोने की बाली पड़ी हुई है, जो संभवत: किसी यात्री की छूट गई थी। स्थिति की गंभीरता को समझते हुए राज कुमार ने तत्काल कोच अटेंडेंट को बुलाकर संबंधित बेडशीट

को सुरक्षित रूप से हटवाया तथा उक्त बाली को अपने संरक्षण में लिया। इसके उपरांत उन्होंने हैंड हेल्ड टर्मिनल के माध्यम से संबंधित केबिन के यात्रियों का विवरण जांचा, जिससे ज्ञात हुआ कि संबंधित यात्री नागपुर स्टेशन पर ही उतर चुके थे। राज कुमार ने तत्परता दिखाते हुए एचएचटी में उपलब्ध संपर्क विवरण के आधार पर यात्री से संपर्क स्थापित किया। बातचीत के दौरान यात्री के पति ने पुष्टि की उनकी पत्नी की सोने की बाली वास्तव में खो गई थी। यात्री के अनुरोध पर राज कुमार ने बाली का फोटो व्हाट्सएप के माध्यम से साझा किया, जिसे देखकर यात्री ने उसकी पहचान की पुष्टि की। यात्री को आश्वस्त करते हुए राज कुमार ने बताया कि उनकी वापसी ड्यूटी 31 मार्च 2026 को गाड़ी संख्या 12860 (गीतांजलि एक्सप्रेस) से नागपुर तक है तथा वे वहां आकर उक्त बाली प्राप्त कर सकते हैं। 31 मार्च 2026 को गीतांजलि एक्सप्रेस के नागपुर आगमन के पश्चात उक्त बाली को संबंधित यात्री डॉ. सयाली (डीएमओ, मध्य रेलवे) द्वारा भेजे गए प्रतिनिधि को विधिवत सुपुर्द कर दिया गया। मंडल रेल प्रबंधक, नागपुर दीपक कुमार गुप्ता एवं वरिष्ठ मंडल वाणिज्य प्रबंधक दिलीप सिंह ने राज कुमार के इस सराहनीय कार्य की भूरी-भूरी प्रशंसा की। उन्होंने कहा कि इस प्रकार के कार्य न केवल भारतीय रेल की उच्च सेवा गुणवत्ता को प्रदर्शित करते हैं, बल्कि यात्रियों के बीच विश्वास और सुरक्षा की भावना को भी सुदृढ़ करते हैं। उन्होंने मंडल के अन्य कर्मचारियों को भी इसी प्रकार कर्तव्यनिष्ठा, सजगता एवं ईमानदारी के साथ अपने दायित्वों का निर्वहन करने हेतु प्रेरित किया। यह उल्लेखनीय कार्य भारतीय रेल की 'यात्री सेवा सर्वोपरि' की भावना को चरितार्थ करता है तथा यह दर्शाता है कि रेलवे कर्मचारी न केवल अपने दायित्वों के प्रति सजग हैं, बल्कि यात्रियों की सुविधा, सुरक्षा एवं संतुष्टि के लिए भी पूर्णत: प्रतिबद्ध हैं।

सेवानिवृत्तः एसईसीएल मुख्यालय के 4 कर्मियों को सेवानिवृत्ति पर दी गई विदाई

'सेवानिवृत्त कर्मियों का योगदान महत्वपूर्ण'

बिलासपुर/नवप्रदेश। आज 31 मार्च को एसईसीएल मुख्यालय बिलासपुर से सेवानिवृत्त होने वाले कर्मियों को 30 मार्च को निदेशक (मानव संसाधन) बिरंची दास, निदेशक (वित्त) डी सुनील कुमार, निदेशक तकनीकी (योजना/परियोजना) रमेश चन्द्र महापात्र एवं विभिन्न विभागाध्यक्षों, श्रम संघ प्रतिनिधियों, अधिकारियों और कर्मचारियों की उपस्थिति में मुख्यालय बिलासपुर स्थित सीएमडी कक्ष में शाल, श्रीफल, पुष्पहार से सम्मानित कर समस्त भुगतान का चेक प्रदान कर भावभीनी विदाई दी गयी।

सेवानिवृत्त होने वालों में सी.डी.एन सिंह महाप्रबंधक (वित्त) वित्त विभाग, जी श्यामला राव महाप्रबंधक (मा.सं) कल्याण विभाग, राम विनय कुमार, महाप्रबंधक (उत्खनन) उत्खनन विभाग, श्री राज, सुरक्षा उप निरीक्षक- सुरक्षा विभाग शामिल रहे। शीर्ष प्रबंधन ने अपने उद्बोधनों में कहा कि सेवानिवृत्त होने वाले अधिकारी-कर्मचारी अपनी कार्यकुशलता और समर्पण से एसईसीएल को सफलता की नई ऊँचाइयों तक लेकर गए हैं। उनके योगदान को सदैव स्मरण किया जाएगा। प्रबंधन ने सभी के उज्ज्वल भविष्य और सुखद पारिवारिक जीवन की कामना की। सेवानिवृत्त अधिकारियों और कर्मचारियों ने भी कम्पनी के प्रति आभार प्रकट करते हुए कहा कि एसईसीएल में कार्य करना गौरव का विषय रहा। उन्होंने कहा कि यहाँ के अधिकारी और कर्मचारी कंधे से कंधा मिलाकर कार्य करते हैं और किसी भी जिम्मेदारी को पूर्ण निष्ठा से निभाते हैं। कार्यक्रम का चालन एवं सेवानिवृत्त कर्मियों का परिचय प्रबंधक (राजभाषा) सविता निर्मलकर ने सफलतापूर्वक किया।

वेयरहाउस से सोसायटी तक पहुंचने वाले पीडीएस चावल की तौल में गड़बड़ी का आरोप

करगीरोड (कोटा)/नवप्रदेश। शासन द्वारा पीडीएस चांवल को वेयर हाउस व नागरिक आपूर्ति निगम के माध्यम से शासकीय उचित मूल्य की दुकान तक सही तौल के साथ सुरक्षित ट्रांस्पोर्ट के माध्यम से पहुंचाने की बडी जिम्मेदारी होती है, लेकिन कोटा के करगीकला स्थित एसडब्ल्यूसी और नॉन के द्वारा आमानत में खयानत की मंशा को राशन वितरण करने वाले विक्रेताओं नें उजागर कर दिया है और वहां लगे धर्मकांटा में हो रहे तौल के खेल का पर्दा फाश हो गया है। अब आगे इस खेल में पूर्व की और भी परतें जल्द खुलते जाएंगी। कोटा ब्लाक के अंतर्गत लगभग 100 राशन दुकाने है जहां प्रतिमाह हितग्राही को बांटने के लिए राशन धरम कांटा से तौल कर दिया जाता है। पिछले लगभग दो वर्षों से राशन दुकानदार चावल, व अन्य सामग्री के कम होने की समस्या से परेशान थे। तीन से चार क्विंटल की शार्टेजी विक्रेताओं की सहन करनी पड रही थी। राशन विक्रेताओं ने इसका कारण समझने के लिए नापतौल अधिकारी से लिखित शिकायत की क्योकि बेयरहाउस के धरम कांटा का रहस्य पता चलने लगा था और धरम कांटा के सत्यापन में नापतौल इंस्पेक्टर ने बारीकी से जांच किया तो धरम कांटा में बड़ी गड़बड़ी मिली इस आसय का पंचनामा बनाकर सील लगाकर नापतौल इंस्पेक्टर ने दुकानदारों के दे दिया और उधर धरम कांटा को माप तौल अधिकारी द्वारा सील कर दिया गया। कोटा ब्लाक में लगभ 400 कुंटल का हर माह तौल घोटाला वेयरहाउस के धरम कांटा से होता था। इस अनियमितता का खुलासा होते ही संबंधित अधिकारी लीपापोती करने में लग गए राशन दुकानदारों ने कोटा एसडीएम सहायक कलेक्टर को ज्ञापन देकर कार्यवाई और इस धोखाधड़ी से दिए गए कम राशन की भरपाई की मांग की तो एसडीएम ने कार्यवाई का आश्वासन दिया है।

गैंदाटोला शराब दुकान मामले में पूर्व विधायक छन्नी साहू व महिलाओं के संघर्ष की जीत

■ **प्रशासन ने नई जगह के लिए शराब दुकान की निविदा की जारी**

छुरिया/नवप्रदेश। राजनीति में अक्सर देखा जाता है कि नेता चुनाव जीतने से पहले जनहित में बड़े-बड़े वादे करते हैं, लेकिन सत्ता में आते ही वे स्वयं के हित में लग जाते हैं–गैस एजेंसी, पेट्रोल पंप, फैक्ट्री, लग्जरी गाड़ियां और करोड़ों के बंगले खड़े कर अपना भविष्य संवार लेते हैं।लेकिन छत्तीसगढ़ के राजनांदगांव जिले की खुज्जी विधानसभा की पूर्व विधायक छन्नी साहू ने इस धारणा को गलत साबित किया है। वे स्वयं के हित से ऊपर उठकर जनता के मुद्दों पर लगातार आवाज उठाने वाली तेजतर्रार महिला नेत्री के रूप में जानी जाती हैं।

विगत दिनों ग्राम पंचायत गैंदाटोला में संचालित सरकारी शराब दुकान, ग्राम नून्हाटोला सहित कई गांवों के मुख्य आवागमन मार्ग पर स्थित थी। नियमों को दरकिनार कर संचालित इस दुकान के कारण आसपास के लोगों, खासकर

स्कूली बच्चों और महिलाओं को आवाजाही के दौरान शराबियों से भय और असुविधा का सामना करना पड़ रहा था। इस समस्या को लेकर क्षेत्र की महिलाओं ने पूर्व विधायक छन्नी साहू से मुलाकात कर शराब दुकान हटाने की मांग की। उन्होंने तुरंत इस मुद्दे को गंभीरता से लेते हुए महिलाओं के साथ रणनीति बनाई और शासन-प्रशासन के सामने मामला उठाने का निर्णय लिया। महिलाओं ने भी एकजुट होकर आंदोलन में पूरा सहयोग देने का संकल्प लिया।

नई निविदा जारी होने से क्षेत्र में खुशी की लहरः

पूर्व विधायक छन्नी साहू और क्षेत्र की महिलाओं द्वारा उठाए गए मुद्दों को शासन-प्रशासन ने सही माना और शराब दुकान के लिए नए स्थान की निविदा जारी कर दी। इस खबर के मिलते ही क्षेत्र में खुशी की लहर दौड़ गई। विभिन्न गांवों के लोग पूर्व विधायक छन्नी साहू के निवास पहुंचकर उनका आभार व्यक्त कर रहे हैं। यह मुद्दा पूरे क्षेत्र में चर्चा का विषय बना हुआ है।

ग्रामीणों की मांग पर छन्नी साहू ने खोला मोर्चा

ग्रामीणों और महिलाओं की मांग पर पूर्व विधायक छन्नी साहू ने शराब दुकान हटाने के लिए मोर्चा संभाल लिया। उन्होंने महिलाओं के साथ मिलकर थाने के सामने देर रात तक धरना प्रदर्शन किया और प्रशासन पर दबाव बनाया।आखिरकार आबकारी अधिकारी और अनुविभागीय अधिकारी मौके पर पहुंचे और आंदोलनकारियों की मांग को उचित मानते हुए लिखित आश्वासन दिया कि नए वित्तीय वर्ष में शराब दुकान को अन्य स्थान पर स्थानांतरित किया जाएगा।

न्यूज गैलरी

शिवपुर में दो दिवसीय श्री हनुमान जयंती महोत्सव का भव्य आयोजन

नगरी/नवप्रदेश। ग्राम शिवपुर (सिहावा) में वर्ष 2026 के पावन अवसर पर श्री हनुमान जयंती महोत्सव को लेकर दो दिवसीय भव्य धार्मिक आयोजन का शुभारंभ होने जा रहा है। श्री हनुमते नमः एवं जय श्रीराम के जयघोष के साथ आयोजित इस महोत्सव में श्रद्धा, भक्ति और सांस्कृतिक कार्यक्रमों की अनुपम छटा देखने को मिलेगी। आयोजन स्थल श्री हनुमान मंदिर प्रांगण शिवपुर को आकर्षक विद्युत सजावट, रंग-बिरंगी रोशनी एवं भव्य तोरण द्वारों से सजाया जा रहा है, जिससे पूरा क्षेत्र भक्तिमय वातावरण में सराबोर रहेगा। आयोजन समिति द्वारा दी गई जानकारी के अनुसार, दिनांक 02 अप्रैल 2026, गुरुवार को प्रातः 09 बजे से श्री हनुमंत मनोकामना ज्योति कलश स्थापना, वेदी पूजन एवं भव्य मानस गान सम्मेलन का शुभारंभ किया जाएगा।

नगरी में बड़ी धूमधाम से मनाया महावीर जयंती

नगरी/नवप्रदेश। नगरी में महावीर जयंती के पावन अवसर पर जैन समाज के लोगों के द्वारा मंदिर बौद्ध महावीर भगवान के पूजा अर्चना किया जयंती के पावन अवसर पर नगर पंचायत नगरी में जैन समाज द्वारा भव्य शोभायात्रा का आयोजन किया गया। यह शोभायात्रा जैन मंदिर से प्रारंभ होकर बस स्टैंड होते हुए बजरंग चौक पहुंची, जहां जनप्रतिनिधियों एवं नगरवासियों द्वारा इसका भव्य स्वागत किया गया। इसके पश्चात रैली महावीर चौक, वार्ड क्रमांक 11 पहुंची। वहीं वीर स्तंभ में छाबड़ा द्वारा ध्वज चढ़ाया गया महावीर जयंती के पावन महावीर चौक में पूर्व पार्षद एवं वर्तमान नगर पंचायत अध्यक्ष की निधि से निर्मित महावीर स्तंभ पर प्रतिवर्ष की भांति इस वर्ष भी ध्वजारोहण किया गया। इस अवसर पर नगर पंचायत अध्यक्ष द्वारा विधि-विधान के साथ ध्वज चढ़ाया गया तथा महावीर स्तंभ की पूजा-अर्चना की गई। ध्वजारोहण के पश्चात पुष्प वर्षा कर वातावरण को भक्तिमय बना दिया गया।कार्यक्रम में बड़ी संख्या में जैन समाज के लोग, नगर पंचायत नगरी के जनप्रतिनिधि, भारतीय जनता पार्टी के जिला अध्यक्ष प्रकाश बैस नागेंद्र शुक्ला महेंद्र नेताम दिनेश्वरी नेताम प्रतिमा देवांगन रूपेंद्र साहू वार्ड पार्षद अश्विनी निषाद अंबिका ध्रुव एवं कार्यकर्ता उपस्थित रहे।

कर्मा जयंती समारोह में शामिल हुए नपाध्यक्ष निखिलकांत साहू

महासमुंद/नवप्रदेश। ग्राम छपोराडीह, सिंघनपुर एवं सिंघी में आयोजित कर्मा जयंती समारोह में नगर पालिका अध्यक्ष निखिलकांत साहू शामिल हुए। इस दौरान उन्होंने माता कर्मा की पूजा-अर्चना कर क्षेत्रवासियों की सुख-समृद्धि और खुशहाली की कामना की।कार्यक्रम को संबोधित करते हुए नपाध्यक्ष श्री साहू ने माता कर्मा के जीवन और उनके आदर्शों पर प्रकाश डालते हुए कहा कि माता कर्मा ने न केवल साहू समाज, बल्कि संपूर्ण मानव जाति को सही मार्ग दिखाया है। उन्होंने कहा कि हमें उनके बताए मार्ग पर चलते हुए समाज सेवा और सामाजिक उत्थान के लिए सदैव तत्पर रहना चाहिए।

40 पौव्वा देशी प्लेन शराब जब्त

महासमुंद/नवप्रदेश। बागबाहरा पुलिस ने सब्जी मंडी के पास से दो लोगों के कब्जे से देशी प्लेन शराब बरामद की है। मामले में आरोपियों के विरूद्ध आबकारी एक्ट की धारा के तहत कार्रवाई की गई। पुलिस ने बताया कि सब्जी मंडी के पास कच्ची रोड बागबाहरा से हीरा लाल नेताम (37) एवं रूपलाल यादव (25) के कब्जे से 40 पौवा देशी प्लेन शराब व स्कूटी बरामद किया। मामले में आरोपियों के खिलाफ धारा 34(2) आबकारी एक्ट के तहत कार्रवाई की गई।

मोबाइल लूटकर युवक से मारपीट

महासमुंद/नवप्रदेश। एक युवक से दो लोगों ने मारपीट कर मोबाइल लूट लिया। मामले की रिपोर्ट पर कोतवाली पुलिस ने अज्ञात के विरूद्ध जुर्म दर्ज कर विवेचना में लिया है।पुलिस को वार्ड-02 खल्लारी माता फिंगेश्वर हाल निवास नदी मोड़ घोड़ारी बाजार पारा निवासी चंद्रशेखर कोसले ने पुलिस को बताया कि 28 मार्च की दोपहर करीब 05.54 बजे महासमुंद बस स्टैंड में बस से उतरकर पैदल घोड़ारी की ओर जा रहा था, तभी महानदी हॉस्पिटल के सामने पीछे से आ रहे ऑटो को रोका, जिसमें दो व्यक्ति सवार थे, उसने ऑटो वाले को घोड़ारी नदी मोड़ जाने बोला, जिस पर उसने ऑटो में बैठाया। खरोरा शहीद स्मामरक के पास तालाब के किनारे ले जाकर ऑटो चालक ने वाहन को रोक दिया और पूछने पर कहा कि दो मिनट रूककर चलेंगे कहकर तालाब में शिव मंदिर के पास चले गए और उसे भी अपने पास बुलाया। जब वह शिव मंदिर के पास गया तो वे दोनों व्यक्ति गांजा पीने लगे। इसी दौरान एक व्यक्ति मुझसे मोबाइल मांगा, मना किया तब उक्त व्यक्ति ने मोबाइल लूटकर मारपीट की। बाद दोनों ने उसे शिव मंदिर से कुछ दूर तालाब किनारे ले जाकर छोड़ दिया। उन्होंने एक व्यक्ति से मोबाइल मांगकर घटना की जानकारी पिता को दी। रिपोर्ट पर अज्ञात के विरूद्ध 296, 3(5), 309(6), 351(3) बीएनएस के तहत जुर्म दर्ज किया गया है।

6.86 क्विंटल गांजा समेत 4.61 करोड़ की जब्ती, 13 तस्कर गिरफ्तार, 6 छत्तीसगढ़ का निवासी

10 घंटे में नशे पर पुलिस की बड़ी सर्जिकल स्ट्राइक

■ **चार थाना क्षेत्रों में 5 प्रकरण, 13 तस्कर गिरफ्तार, देशभर में फैले नेटवर्क पर बड़ा प्रहार**

महासमुंद। जिले में नशे के खिलाफ चलाए जा रहे ऑपरेशन निश्चय के तहत महासमुंद पुलिस ने एक ही दिन में 10 घंटे के भीतर बड़ी कार्रवाई करते हुए अंतर्राज्यीय तस्करी नेटवर्क को करारा झटका दिया है। पुलिस ने चार थाना क्षेत्रों में पांच अलग-अलग प्रकरण दर्ज कर कुल 685.890 किलो गांजा (करीब 6.86 क्विंटल) और 700 नग नशीली टैबलेट जब्त की है। इस कार्रवाई में 13 तस्करों को गिरफ्तार किया गया है, जिनमें 6 आरोपी छत्तीसगढ़ और 7 अन्य राज्यों के निवासी हैं।

पुलिस ने इस कार्रवाई में 4 करोड़ 61 लाख 67 हजार 506 रुपये की कुल संपत्ति जब्त की है, जिसमें गांजा की कीमत 3.42 करोड़ रुपये और वाहन व अन्य सामग्री की कीमत लगभग 41.40 लाख रुपये शामिल है।

ऐसे हुई ताबड़तोड़ कार्रवाई

महासमुंद पुलिस, एंटी नारकोटिक्स टास्क फोर्स तथा बसना, कोमाखान, सिंघोड़ा व महासमुंद पुलिस की संयुक्त टीम ने अलग-अलग थाना क्षेत्रों में एक साथ कार्रवाई करते हुए तस्करी के हर तरीके को विफल कर दिया। तस्कर पिकअप, कार, ट्रक, बाइक और यहां तक कि ट्रेन के जरिए भी नशे की सप्लाई कर रहे थे।

थाना वार कार्रवाई का विवरण

कोमाखान थाना –एनएच-353 टेमरी नाका पर नाकाबंदी के दौरान ट्रक क्रमांक सीजी 04 एनजे 9286 से 25 किलो गांजा जब्त किया गया। चालक ने अपना नाम विव मोहित साहू (27) और पुष्पेन्द्र साहू (21) मध्यप्रदेश का रहने वाला बताया। इसी थाने की टीम ने डिजायर कार क्रमांक जेएच 01 एफजेड 4071 से 200 किलो गांजा बरामद किया। इस कार में उत्तर प्रदेश के 3 आरोपी सवार थे। पकड़े गए गांजे की कीमत 1.08 करोड़ रुपये बताई गई है।

बसना थाना

पैकर्स एंड मूवर्स एंड पैकर्स कंपनी के बोलेरो पिकअप में रायगढ़ से घरेलू सामान हैदराबाद ले जाने के लिए निकले थे। लेकिन बीच में ओडिशा से सामान के नीचे 454.890 किलो गांजा छिपाकर ले जा रहे थे। पिकअप चालक इमरान (37) राजस्थान का रहने वाला है।

पुलिस ने आरोपी से एक मोबाइल और 10 हजार नगदी समेत 2.38 करोड़ रुपये का गांजा बरामद किया है।

सिंघोड़ा थाना

नेशनल हाईवे 53 रेहटीखोल से बाइक सीजी 11 एजेड 3766 में सवार बलौदा जिला जांजगीर-चांपा निवासी देवचरण रात्रे (46) और पेटूपाली बरगढ़ ओडिशा निवासी किशोर राउतिया (25) बैग में 6 किलो गांजा ले जा रहे थे। जब्त गांजे की कीमत 3 लाख रुपये बताई गई है। पुलिस ने आरोपी से दो मोबाइल भी जब्त किया है।

सिटी कोतवाली महासमुंद

रेलवे स्टेशन के पास रेड कार्रवाई में पुलिस ने 700 नग नशीली दवाई जब्त की है। पुलिस 5 आरोपियों को गिरफ्तार किया है। राकेश कुमार (32), मनोज कुमार सोनबेर (33), सद्दाम कुरेशी (32), रिंकू चंद्राकर (34) और कामेश चंद्राकर (30) सभी महासमुंद निवासी के खिलाफ एनडीपीएस एक्ट के तहत कार्रवाई की है।

नेटवर्क पर बड़ा प्रहार

इस कार्रवाई में बिलासपुर पुलिस और रायपुर कमिश्नर क्राइम ब्रांच का भी सहयोग मिला। पुलिस ने तस्करी नेटवर्क के लॉजिस्टिक कोऑर्डिनेटर तक को गिरफ्तार कर एंड-टू-एंड कार्रवाई की है।

पिछले 3 महीने का रिकॉर्ड

जिले के पुलिस ने 63 प्रकरण दर्ज कर : 4054.350 किलो गांजा (40.54 क्विंटल) जब्त कर 165 आरोपी को गिरफ्तार किया है। इनमें 48 छत्तीसगढ़ से117 अन्य राज्यों से हैं।

नशे के खिलाफ पुलिस की सख्ती रहेगी जारी

महासमुंद पुलिस ने स्पष्ट किया है कि नशे के कारोबार में लिप्त लोगों के खिलाफ आगे भी इसी तरह सख्त कार्रवाई जारी रहेगी। जिले में हर स्तर पर निगरानी बढ़ाई गई है और अंतर्राज्यीय नेटवर्क को जड़ से खत्म करने की दिशा में लगातार अभियान चलाया जा रहा है। महासमुंद पुलिस की यह कार्रवाई न केवल जिले बल्कि पूरे प्रदेश में नशे के खिलाफएक मजबूत संदेश है कि तस्करी के हर हथकंडे पर पुलिस की नजर है और किसी भी कीमत पर इसे बर्दाश्त नहीं किया जाएगा।

593 दुकानों में राशन संकट, किसान कांग्रेस ने किया सरकार पर हमला

■ **लाखों हितग्राही रहे वंचित, जांच और कार्रवाई की मांग तेज**

महासमुंद/नवप्रदेश। जिले में मार्च माह के दौरान सार्वजनिक वितरण प्रणाली में बड़ी लापरवाही सामने आई है। सरकारी राशन की आपूर्ति बाधित होने से हजारों-लाखों हितग्राही प्रभावित हुए हैं। इस मुद्दे को लेकर किसान कांग्रेस महासमुंद के जिला अध्यक्ष मानिक साहू ने राज्य और केंद्र सरकार पर तीखा निशाना साधा है।

उन्होंने आरोप लगाया कि खाद्य नागरिक आपूर्ति निगम (नान) की निष्क्रियता के चलते जिले की सैकड़ों उचित मूल्य दुकानों तक राशन नहीं पहुंच सका। नतीजतन गरीब परिवारों को पूरे महीने राशन के लिए भटकना पड़ा और कई लोगों को उधार लेकर गुजारा करना पड़ा।

मानिक साहू के अनुसार जिले में कुल 593 राशन दुकानों का नेटवर्क है, लेकिन इनमें से बड़ी संख्या में दुकानों तक अनाज नहीं पहुंचा। वहीं लगभग 375 दुकानों में शक्कर की आपूर्ति भी ठप रही, जिससे वितरण व्यवस्था की गंभीर खामियां उजागर हुई हैं।

उन्होंने बताया कि यह समस्या नई नहीं है। 25 मार्च को सर्वर सुधार के नाम पर राशन वितरण बंद कर दिया गया, जबकि इससे पहले नवंबर माह में भी इसी तरह की स्थिति बनी थी। उन्होंने इसे ÷प्रशासनिक असफलता और संवेदनहीनता÷ करार दिया।

किसान कांग्रेस ने राज्य सरकार पर योजनाओं के केवल प्रचार-प्रसार का आरोप लगाया, वहीं केंद्र सरकार की मुफ्त राशन योजना पर भी सवाल खड़े किए। साहू ने कहा कि जमीनी हकीकत में गरीबों तक समय पर राशन नहीं पहुंच पा रहा है। उन्होंने मांग की है कि इस पूरे मामले की उच्चस्तरीय जांच कर जिम्मेदार अधिकारियों पर सख्त कार्रवाई की जाए। साथ ही चेतावनी दी कि यदि जल्द सुधार नहीं हुआ, तो किसान कांग्रेस और आम जनता आंदोलन के लिए मजबूर होगी।

देवपुर पंचायत के आश्रित ग्रामों में टीन शेड निर्माण के लिए भूमिपूजन

नगरी/नवप्रदेश। ग्राम पंचायत देवपुर के अंतर्गत आने वाले आश्रित ग्राम बिरनपुर एवं बोधसेमरा में टीना शेड निर्माण कार्य के लिए विधिवत भूमिपूजन संपन्न हुआ। इस अवसर पर क्षेत्र के जनप्रतिनिधियों एवं ग्रामवासियों की उल्लेखनीय उपस्थिति रही, जिससे कार्यक्रम का वातावरण उत्साहपूर्ण बना रहा।

कार्यक्रम में सभापति एवं जनपद सदस्य प्रेमलता नागवंशी, सरपंच आत्माराम नेताम, सचिव डीगम्बर साहू, राइसमिल संचालक मिथलेश साहू, सिरसिदा सरपंच नरसिंग मरकाम, पूर्व सरपंच आरती ध्रुव, भानेन्द्र सुरेशा, कार्तिक राम साहू, सुभाष पटेल, प्रताप सुरेशा, ईश्वरी कोसरे, तिलक मरकाम, बंशी साहू, शंकर सेन एवं बड़ी संख्या में ग्रामीणजन उपस्थित रहे।

इस अवसर पर जिला पंचायत अध्यक्ष अरुण सार्वा ने संबोधित करते हुए कहा कि टीना शेड का निर्माण ग्राम के विभिन्न सामाजिक एवं सार्वजनिक कार्यों के लिए अत्यंत उपयोगी सिद्ध होगा। उन्होंने बताया कि जिला पंचायत ग्रामीण क्षेत्रों के समग्र विकास के लिए निरंतर प्रयासरत है। साथ ही उन्होंने यह भी कहा कि वर्तमान में केंद्र एवं राज्य स्तर पर एक ही सरकार होने के कारण विकास कार्यों को तेजी से आगे बढ़ाया जा रहा है।कार्यक्रम के अंत में उपस्थित जनप्रतिनिधियों एवं ग्रामीणों ने निर्माण कार्य के शीघ्र एवं गुणवत्तापूर्ण पूर्ण होने की कामना की।

ग्राम उमरगांवम में त्रिस्तरीय मानस सम्मेलन का समापन

नगरी/नवप्रदेश। चैत्र नवरात्रि एवं त्रिस्तरीय मानस सम्मेलन समिति द्वारा रामनवमी पर्व पर मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान् श्री श्रीरामचंद्र जी जन्मोत्सव धूमधाम के साथ मनाई गई। जिसमें ग्राम पंचायत उमरगांव के सभी लोंगों के द्वारा राम भजन में श्रीरामचंद्र जी जयकारे, जय जय श्रीराम जी की जयकारे लगाई गई। सभी लोग मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान् श्रीरामचन्द्र जी की राम रक्षा स्तोत्र पाठ , हनुमान चालीसा, सुन्दर कांड पाठ, मानसगान तथा सोहर गीत में ग्राम के सभी बच्चे, बुढे, जवान, महिला, पुरुष सभी नाचते,थीरते रहे। मानस सम्मेलन में राज्य स्तरीय ख्याति प्राप्त 18 मानस मण्डलियों ने हिस्सा लिया।

संघर्ष को मिली नई उड़ानः पोस्टमास्टर का बेटा बना सब-इंस्पेक्टर

धमधा/नवप्रदेश। धमधा के राजपुर गांव के होनहार युवक धर्मेंद्र साहू ने अपनी मेहनत और लगन से सफलता की नई मिसाल पेश की है। सब-इंस्पेक्टर पद पर चयनित होने के बाद जब वे पहली बार अपने गृह ग्राम पहुंचे, तो पूरे गांव ने उनका भव्य स्वागत किया।

धर्मेंद्र साहू के पिता प्रेमलाल साहू पेशे से पोस्टमास्टर हैं। वर्षों तक उन्होंने दूसरों तक खुशियों के

संदेश पहुंचाए, लेकिन आज उनके अपने घर में सबसे बड़ी खुशी आई है। बेटे के कंधों पर सजे दो सितारों ने पिता के संघर्ष और समर्पण को साकार कर दिया।

गांव पहुंचने पर धर्मेंद्र का स्वागत किसी त्योहार से कम नहीं था। गांव की सड़कों को सजाया गया था और जैसे ही वे गांव की सीमा में पहुंचे, ग्रामीणों ने फूलों की वर्षा, गाजे-बाजे और देशभक्ति गीतों के साथ उनका गर्मजोशी से अभिनंदन किया।

इस अवसर पर बड़ी संख्या में ग्रामीण, युवा और परिजन उपस्थित रहे। सभी ने धर्मेंद्र की सफलता पर गर्व व्यक्त करते हुए इसे क्षेत्र के युवाओं के लिए प्रेरणा बताया।

धर्मेंद्र साहू की इस उपलब्धि ने यह साबित कर दिया कि यदि इरादे मजबूत हों और मेहनत सच्ची हो, तो कोई भी लक्ष्य असंभव नहीं है।

हाड़ाबंद में महिला दिवस पर जागरुकता का संदेश

खाना बनाना सिर्फ महिलाओं का काम नहींः डॉ. एकता

महासमुंद/नवप्रदेश। ग्राम पंचायत हाड़ाबंद में अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस के अवसर पर जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में बड़ी संख्या में ग्रामीण महिलाओं की सहभागिता रही।

कार्यक्रम की मुख्य अतिथि समाज सेविका डॉ. एकता लंगेह ने अपने संबोधन में कहा कि आज भी ग्रामीण महिलाएं विकास की मुख्यधारा से पूरी तरह नहीं जुड़ पाई हैं। उन्होंने कहा कि सुबह से शाम तक घर के कामों में उलझाकर महिलाओं को चारदीवारी तक सीमित कर दिया जाता है। यह सोच बदलने की जरूरत है।

उन्होंने स्पष्ट रूप से कहा कि खाना बनाना सिर्फ महिलाओं का काम नहीं है, बल्कि परिस्थितियों के अनुसार पुरुषों को भी घर के कामों में समान भागीदारी निभानी चाहिए।डॉ. लंगेह ने नशे के दुष्प्रभावों पर भी प्रकाश डालते हुए कहा कि नशा परिवार, समाज और देश–तीनों के लिए घातक है, इसलिए इससे दूर रहना चाहिए। साथ ही उन्होंने बच्चों को मोबाइल से दूर रखने और नियमित रूप से स्कूल भेजने की अपील की। कार्यक्रम के दौरान ग्रामीण महिलाओं ने अपनी समस्याएं मुख्य अतिथि के समक्ष रखीं, जिस पर डॉ. लंगेह ने आवेदन लेकर उनके समाधान का आश्वासन दिया।

कार्यक्रम की अध्यक्षता ग्राम पंचायत हाड़ाबंद की सरपंच श्रीमती ममता साहू ने की। विशेष अतिथि अधिवक्ता टी. दुर्गा राव ने महिलाओं को जागरूक करते हुए घरेलू हिंसा और महिला प्रताड़ना के खिलाफआवाज उठाने तथा आत्मनिर्भर बनने की प्रेरणा दी।

सामाजिक कार्यकर्ता हेमलता राजपूत ने ÷नारी शक्ति÷ का संदेश देते हुए महिलाओं को एकजुट होकर आगे बढ़ने का आह्वान किया। कार्यक्रम में स्कूली बच्चों द्वारा रंगारंग सांस्कृतिक प्रस्तुतियां दी गईं, जिसने सभी का मन मोह लिया। कार्यक्रम को सफल बनाने में प्रिय ठाकुर, राजेश, हेमवती यादव, गुड्डी सिन्हा, मिलवन्तीन यादव सहित गांव की महिलाओं, पंचगण और मितानिन दीदियों का विशेष योगदान रहा।

कचहरी चौक में 2 अप्रैल को श्री हनुमान जन्मोत्सव पर विभिन्न धार्मिक कार्यक्रम

महासमुंद/नवप्रदेश। सिद्ध श्री संकट मोचन हनुमान मंदिर कचहरी चौक महासमुंद में प्रतिवर्षानुसार इस वर्ष 18 वे वर्ष श्री हनुमान जन्मोत्सव दिनांक 02 अप्रैल 2026 को धूमधाम से मनाया जाएगा उक्त जानकारी सिद्ध श्री संकट मोचन हनुमान मंदिर के भरत सिंह ठाकुर अधिवक्ता ने देते हुए बताया कि इस अवसर श्री हनुमान जन्मोत्सव के पावन पर्व पर मंदिर में प्रातः 08 ध्वज पूजन ध्वजारोहण हवन पूजन आरती व प्रसाद वितरण 12 बजे से मंदिर प्रांगण में आम भंडारा का आयोजन रखा जाएगा रात्रि 08 बजे सवा लाख बाती की महाआरती पश्चात प्रसाद वितरण किया जाएगा

मंदिर समिति के संतोष शुक्ला चंद्रशेखर साहू सुशील चंद्राकर सुरेंद्र स्वामी जगमोहन चंद्राकर बद्रीप्रसाद माहेश्वरी सत्यनारायण तिवारी भूपेंद्र चंद्राकर भरत सिंह ठाकुर अनुप उपासे सौरभ बाफना संजय साहू प्रशांत श्रीवास्तव कुलवंत सिंह बंटी हेमंत साहू घनश्याम सोनी जितेंद्र [illegible] धरम भार्गव धीरेन्द्र लोनाहद्ध अजय साहू मदन प्रकाश शर्मा पुजारी कुंदन वैष्णव पुजारी सहित सभी सदस्यों ने धार्मिक कार्यक्रम में अधिक से अधिक संख्या में उपस्थित होकर पुण्यलाभ अर्जित करने की अपील की है।

राजनैतिक कटाक्षः सत्ता की 'चाशनी' और राजनीति के 'बंटी-बबली'

■ **कुरुद के उदय और 78 साल के इतिहास के बीच, 'अवसरवाद' के नए चेहरों पर तीखा प्रहार**

कुरूद/नवप्रदेश। धमतरी तरी कांग्रेस में श्रीमती तारिणी नीलम चंद्राकर की नियुक्ति और 71 दिनों के महामंथन ने जहाँ एक ओर संगठन को 'शक्ति' दी है, वहीं दूसरी ओर सत्ता के गलियारों में मंडराने वाले उन 'बंटी-बबली' किरदारों की नींद भी उड़ा दी है, जो कल तक किसी और चौखट पर माथा टेकते थे और आज 'नए पावर सेंटर' की आरती उतारने की जुगत में हैं।

सत्ता के साथ 'कदमताल' का हुनर

सियासत में कुछ लोग विचारधारा से नहीं, बल्कि 'वजन' से चलते हैं। धमतरी की गलियों में चर्चा आम है कि जब कुरुद का गौरव बहाल हो रहा था और 8 महिला योद्धाओं की फौज तैयार हो रही थी, तब ये 'बंटी-बबली' जोड़ी अपना राजनैतिक बायोडाटा अपडेट करने में व्यस्त थी।

अंदाज निरालाः इनका काम संगठन को मजबूत करना नहीं, बल्कि सत्ता की मलाई के करीब रहना है।

बदलता रंगः कल जो 'खाकी' या 'भगवा' के गुणगान में कसीदे पढ़ते थे, आज वे कांग्रेस की नई कार्यकारिणी के जयकारों में सबसे आगे खड़े दिखना चाहते हैं।

निष्ठा बनाम अवसरवाद-धमतरी कांग्रेस के 78 साल के इतिहास में जब तारिणी चंद्राकर जैसी जमीन से जुड़ी नेत्री ने कमान संभाली, तो उम्मीद थी कि 'सफेदपोश' चाटुकारिता का अंत होगा। लेकिन राजनीति के ये 'बंटी-बबली' हर सरकार और हर अध्यक्ष के 'खास' बनने की कला में माहिर हैं।

तंजः इन्हें संगठन के संघर्ष से मतलब नहीं, इन्हें तो बस उस 'प्रोटोकॉल' से मतलब है जो सत्ता के साथ मुफ्त मिलता है। कुरुद की मिट्टी का असली नेतृत्व जहाँ पसीना बहा रहा है, वहीं ये जोड़ी 'फोटो-अप' के नए एंगल तलाश रही है।

> **संगठन के लिए 'रेड अलर्ट'**
>
> *71 दिनों का जो महामंथन हुआ, वह शायद इन्हीं जैसे 'बिन पेंदी के लोटों' को बाहर रखने के लिए था। तारिणी चंद्राकर की 'टीम-8' और 9 ब्लॉक लड़ाकों के बीच इन 'बंटी-बबली' जैसे किरदारों की घुसपैठ संगठन की जड़ों में दीमक की तरह हो सकती है। सत्ता की चमक देखकर चश्मा बदलने वाले ये किरदार कभी किसी के सगे नहीं हुए। आज कुरुद का सूरज उगा है, तो ये धूप सेंकने आ गए हैं; कल बादल छाएंगे, तो ये सबसे पहले छाता लेकर दूसरी ओर खड़े नजर आएंगे।*

न्यूज गैलरी

प्रधान आरक्षक धनंजय यादव को COP OF THE MONTH के रूप में चयनित कर किया गया सम्मान

भाटापारा/नवप्रदेश। सुहेला, हथबंद क्षेत्र में लिफ्ट देने के बहाने अकेली महिलाओं से लूटपाट करने वाले शातिर आरोपी को पकड़ने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने वाले प्रधान आरक्षक धनंजय यादव को पुलिस अधीक्षक श्रीमती भावना गुप्ता द्वारा प्रशस्ति पत्र एवं प्रतीक चिन्ह देकर सम्मानित किया गया है।इसके अलावा पलारी क्षेत्र में आग की लपटों के बीच कूदकर 03 वर्षीय बच्ची की जान बचाने वाले आरक्षक जियन वर्मा को भी सम्मानित किया गया है। पुलिस अधीक्षक श्रीमती भावना गुप्ता के कुशल निर्देशन में जिले में उत्कृष्ट एवं साहसिक कार्य, अपराध विवेचना एवं अपराधियों की धरपकड़ में प्रशंसनीय एवं अपना विशेष योगदान देने वाले 2 अधिकारी कर्मचारियों को माह मार्च-2026 में COP OF MONTH के रूप में चुना गया है। प्रधान आरक्षक क्र. 110 धनंजय यादव थाना सुहेला*- थाना सुहेला एवं हथबंद क्षेत्र में एक शातिर आरोपी द्वारा मोटरसाइकिल में लिफ्ट देने के बहाने अकेली महिलाओं से लूटपाट की घटनाओं को अंजाम दिया जाता था। आरोपी द्वारा लिफ्ट देकर महिलाओं को सुनसान इलाके में ले जाकर धारदार हथियार दिखाते हुए सोने चांदी के जेवर एवं नगदी लूट लिया जाता था। आरोपी के विरुद्ध थाना सुहेला एवं हथबंद में कुल 04 अपराध पंजीबध्द किए गए थे। धनंजय यादव द्वारा कथक लगन, मेहनत एवं प्रयास कर, मजबूत एवं प्रभावी सूचना तंत्र का परिचय देते हुए ना केवल आरोपी का पता लगाया बल्कि आरोपी को रंगे हाथ गिरफ्तार करने में भी अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाया गया, जिसके फ्लस्वरुप प्रधान आरक्षक धनंजय यादव को माह 03/2026 के लिए COP OF THE MONTH के रूप में सम्मानित किया गया।

'गांव-गांव में माता कर्मा जयंती की धूम''

भाटापारा/नवप्रदश। विधायक इन्द्र साव ने ग्राम मोपर, जोगीद्वीप गुर्रा, कोसमंदा, करहुल, किरवई एवं मटिया में आयोजित भक्त माता कर्मा जयंती एवं आदर्श विवाह समारोह में शामिल होकर समाजजनों को शुभकामनाएं दीं। इस अवसर पर बड़ी संख्या में साहू समाज के लोग उपस्थित रहे और पूरे वातावरण में भक्ति एवं उत्साह का माहौल देखने को मिला।कार्यक्रम को संबोधित करते हुए विधायक साव ने कहा कि माता कर्मा जी का जीवन त्याग, भक्ति और सेवा का अद्वितीय उदाहरण है। उन्होंने कहा कि माता कर्मा, भगवान श्रीकृष्ण की परम भक्त थीं। उनकी सच्ची श्रद्धा और निष्कपट प्रेम के कारण भगवान स्वयं उनके द्वारा बनाए गए खिचड़ी का भोग स्वीकार करने पहुंचे थे। यह कथा हमें सिखाती है कि सच्चे मन से की गई भक्ति में अपार शक्ति होती है और ईश्वर सच्चे भक्तों के प्रेम से बंध जाते हैं।

इतवारी-शालीमार के मध्य चलेगी साप्ताहिक 'समर स्पेशल' ट्रेन

भाटापारा/नवप्रदश। गर्मियों में छुट्टियों की अतिरिक्त भीड़ को ध्यान में रखते हुए और उनकी सुविधा के लिए, दक्षिण पूर्व मध्य रेलवे द्वारा नेताजी सुभाष चंद्र बोस इतवारी - शालीमार - नेताजी सुभाष चंद्र बोस इतवारी के मध्य 2 अप्रैल से 25 जून तक साप्ताहिक 'समर स्पेशल' ट्रेन चलाई जा रही है। उपरोक्त संबंध में प्राप्त जानकारी अनुसार गाड़ी संख्या 08865 (नेताजी सुभाष चंद्र बोस इतवारी से शालीमार)दिनांक - 02 अप्रैल से 25 जून 2026 तक (प्रत्येक गुरुवार) को नेताजी सुभाष चंद्र बोस इतवारी स्टेशन से शाम 17:10 बजे रवाना होगी तथा गोंदिया 19:00 बजे डोंगरगढ़ 20:08 बजे , राजनांदगांव 20:35 बजे दुर्ग 21:40 बजे , रायपुर 22:25 बजे , भाटापारा 23:20 बजे बिलासपुर आगमन 00:35 बजे, चांपा 01:35 बजे रायगढ़ 02:32 बजे झारसुगुड़ा 04:05 बजे , राउरकेला 05:40 बजे , चक्रधरपुर 07:15 बजे , टाटानगर जंक्शन 08:00 बजे , खड्गपुर 10:45 बजे , संतरागाछी जंक्शन 13:00 एवं शालीमार 14:00 बजे पहुंचेगी । इसी प्रकार विपरीत दिशा से गाड़ी संख्या 08866 (शालीमार से नेताजी सुभाष चंद्र बोस इतवारी) दिनांक - 03 अप्रैल से 26 जून 2026 तक (प्रत्येक शुक्रवार) को शालीमार स्टेशन से शाम 18:00 बजे रवाना होगी,तथा संतरागाछी ,खड्गपुर ,टाटानगर ,चक्रधरपुर ,राउरकेला, झारसुगुड़ा रायगढ़,चांपा होते अगले दिन बिलासपुर सुबह 07:25 बजे पहुंचेगी तथा भाटापारा सुबह 08:14 बजे पहुंचकर रायपुर ,दुर्ग,राजनांदगांव ,डोंगरगढ़ गोंदिया आगमन 13:15 होते हुए नेताजी सुभाष चंद्र बोस इतवारी 15:35 बजे पहुंचेगी।

बालोद में आगजनी पर काबू

पार्षद की तत्परता और आरक्षक के सहयोग से टला बड़ा हादसा

बालोद/नवप्रदेश। ट्रांसपोर्ट नगर के पीछे कबाड़ी दुकान के पास लकड़ियों में लगी आग ने मंगलवार दोपहर 3 से 4 बजे के बीच इलाके में हड़कंप मचा दिया। आग तेजी से फैल रही थी, लेकिन समय रहते स्थानीय प्रयासों और प्रशासनिक सहयोग से स्थिति पर काबू पा लिया गया।

तत्परता से बची बड़ी अनहोनी

घटना की जानकारी मिलते ही वार्ड क्रमांक 12 के पार्षद सुमित शर्मा तुरंत मौके पर पहुंचे और राहत कार्यों को सक्रिय रूप से संभाला। वहीं बालोद थाना के आरक्षक मोहन कोकिला ने भी मौके पर पहुंचकर प्रभावी सहयोग किया, जिससे आग पर नियंत्रण पाने में बड़ी मदद मिली।

फायर ब्रिगेड पहुंची, संयुक्त प्रयास से बुझी आग

> **जमरूआ से आती है फायर ब्रिगेड, शहर में अब तक नहीं तय जगह**
>
> वर्तमान में फायर ब्रिगेड स्टेशन जमरूआ में स्थित है, जहां से वाहन को मौके तक पहुंचने में समय लगता है। स्थानीय लोगों का कहना है कि शासन-प्रशासन द्वारा अब तक बालोद शहर में फायर स्टेशन के लिए स्थायी जगह तय नहीं की जा सकी है, जिससे आपातकालीन स्थिति में देरी की समस्या बनी रहती है।

घटना की सूचना पर फायर ब्रिगेड की टीम भी मौके पर पहुंची और स्थानीय लोगों, जनप्रतिनिधियों व पुलिस के साथ मिलकर आग बुझाने का काम किया। संयुक्त प्रयासों के चलते आग पर काबू पा लिया गया और बड़ा नुकसान होने से बच गया।

> **उठी मांग—बालोद शहर में बने स्थायी फायर स्टेशन**
>
> घटना के बाद एक बार फिर बालोद शहर में फायर ब्रिगेड स्टेशन स्थापित करने की मांग तेज हो गई है। लोगों का कहना है कि समय रहते व्यवस्था नहीं हुई तो भविष्य में बड़ा हादसा हो सकता है। जनप्रतिनिधियों, पुलिस और आम नागरिकों की सतर्कता से बड़ा नुकसान टल गया, लेकिन यह घटना प्रशासन के लिए एक गंभीर चेतावनी बनकर सामने आई है।

स्थानीय लोगों का भी मिला सहयोग

आग बुझाने के दौरान शाहरुख खान, गोविंदा टावरी, मेम भाई, कुलपत साहू, श्री देवांगन सहित कई स्थानीय लोगों ने सक्रिय भूमिका निभाई। जिससे राहत कार्य तेज हुआ।

धूमधाम से मनाया गया भगवान महावीर स्वामी का जन्मकल्याणक महोत्सव

भाटापारा/नवप्रदश। जैन धर्म के 24वें तीर्थंकर भगवान महावीर स्वामी जी का जन्म कल्याणक महोत्सव सकल जैन समाज द्वारा बड़े ही हर्षोल्लास से मनाया गया।हिंदू पंचांग के अनुसार चैत्र मास के त्रयोदशी के दिन महावीर स्वामी का जन्म बिहार के कुंडग्राम में हुआ था।

भगवान महावीर स्वामी ने आत्मज्ञान की तलाश में 30 वर्ष की उम्र में ही अपना घर-बार छोड़ दिया था। उन्होंने 12 वर्ष तक कठोर तपस्या की और दीक्षा ग्रहण की। तप के पश्चात ही भगवान महावीर को कैवल्य ज्ञान की प्राप्ति हुई और वो तीर्थंकर कहलाए और सभी को जियो और जीने दो का संदेश दिया। इस परिपेक्ष्य में दिगंबर जैन समुदाय एवं श्वेताम्बर जैन समुदाय द्वारा इस बार 2 दिन महावीर जन्म उत्सव मनाया गया 30 मार्च के दिगंबर परंपरा अनुसार दिगंबर मंदिर में 31 मार्च के श्वेताम्बर परंपरा अनुसार श्वेताम्बर मंदिर में यह पर्व बड़े ही धूमधाम से मनाया गया।

जैन समाज अध्यक्ष पीयूष जैन ने बताया कि श्री दिगंबर जैन परिवार पंचायती मंदिर में सकल दिगंबर जैन समाज ने 30 मार्च को सुबह भगवान महावीर स्वामी का मस्तकाभिषेक एवं शांति धारा सम्पन्न हुई जिसमें पुण्यार्जक बनने का सौभाग्य क्रमशः गौरव,सौरव,वैभव गदिया परिवार ,विकास भंसाली परिवार एवं जीवनलाल संतोष सिंघई परिवार को प्राप्त हुआ।एवं उसके पश्चात संगीतमय सामूहिक पूजन विनोद जैन के मधुर स्वर में संपन्न हुई।दोपहर के भव्य बाइक रैली सकल जैन समाज द्वारा निकाली गई , रात्रि में भव्य आरती एवं महावीर स्वामी जी को पालना झुलाने का कार्यक्रम संपन्न हुआ।

थाना प्रभारियों एवं बीट आरक्षकों ने संभाली कमान गांवों और मोहल्लों में पहुंचकर युवाओं को किया जागरूक

गरियाबंद/नवप्रदश। गरियाबंद पुलिस कप्तान के दिशा -निर्देश में जिले के समस्त थाना क्षेत्रों में सुरक्षा और जन-जागरूकता हेतु एक विशेष अभियान चलाया जा रहा है। इसी कड़ी में आज समस्त थाना प्रभारियों एवं बीट आरक्षकों ने अपने-अपने आवंटित बीट क्षेत्रों का सघन भ्रमण किया। इस दौरान पुलिस टीम ने सीधे आमजन और युवाओं से संवाद कर उन्हें सुरक्षा के विभिन्न पहलुओं के प्रति सचेत किया।

बीट आरक्षकों द्वारा प्रत्येक ग्राम और वार्ड स्तर पर बेरोजगार युवक-युवतियों की जानकारी एकत्रित की जा रही है। इसका मुख्य उद्देश्य युवाओं की संख्या और उनकी शैक्षणिक योग्यता के आधार पर भविष्य में उन्हें कौशल विकास योजनाओं या प्रतियोगी परीक्षाओं के लिए उचित मार्गदर्शन प्रदान करना है।

33 विप्र महिलाओं का सम्मान

■ **नगर की अभिलाषा झा शिखर सम्मान से सम्मानित**

भाटापारा/नवप्रदश। वर्ल्ड ब्राह्मण फेडरेशन छ.ग. एवं सर्व युवा ब्राह्मण परिषद छ.ग. द्वारा छत्तीसगढ़ की विभिन्न विधा में ख्यातिलब्ध विप्र नारी शक्तिओ का महिला शिखर सम्मान किया गया।

कार्यक्रम का शुभारंभ लक्ष्मी वर्मा (सांसद राज्यसभा), मीनल चौबे (महापौर, रायपुर), शालिनी पाण्डेय (भाजपा प्रवक्ता एवं पूर्व अध्यक्ष बाल आयोग), अर्चना झा (डिप्टी कमिश्नर ऑफ़िसर, रायपुर) एवं सविता शर्मा (सहायक परियोजना अधिकारी, समग्र शिक्षा, जांजगीर) द्वारा किया गया।इस अवसर पर श्रीमती लक्ष्मी वर्मा ने संबोधित करते हुए महिला शक्ति को जागरूक करने एवं रोजगार के विभिन्न अवसरों की जानकारी दी। मीनल चौबे ने नारी की शक्ति, उनके कार्यों एवं चुनौतियों पर प्रकाश डाला। शालिनी पाण्डेय ने नारी को ÷नारायणी÷ बताते हुए परिवार और राष्ट्र की एकता में उनकी भूमिका को रेखांकित किया।

प्रगतिशील सतनामी समाज का पूरे प्रदेश में संगठन विस्तार किया गया

भटगांव /नवप्रदेश। सारंगढ़ प्रगतिशील सतनामी समाज का प्रदेश संगठन के निर्देश पर पूरे प्रदेश में संगठन विस्तार किया गया। जहां सारंगढ़ बिलाईगढ़ जिला प्रभारी मोहन बंजारे के निर्देशन में एवं निर्वाचन अधिकारी डमरू प्रसाद मनहर, युवा प्रकोष्ठ प्रदेशाध्यक्ष

प्रदीप श्रृंगी, प्रदेश कार्यकारिणी सदस्य यादराम हिरवानी के उपस्थिति में जिला अध्यक्ष एवं पदाधिकारियों का मनोनयन किया गया जिसमें

सर्वसम्मति से सारंगढ़ बिलाईगढ़ जिला के प्रगतिशील सतनामी समाज के जिला अध्यक्ष गिरवर निराला को बनाया गया। जहां उनके जिलाध्यक्ष बनने पर सामाजिक बंधुओं इष्ट मित्रों और भाजपा नेताओ ने उनके बधाई एवं शुभकामनाएं दिये।

अध्यक्ष ज्योति ने प्रस्तुत किया नगर पालिका कुरूद का प्रथम बजट

■ **25 लाख के लाभ के बजट के साथ साथ जनसुविधाएं और नगर विकास है प्रमुख लक्ष्य - ज्योति**

कुरूद/नवप्रदेश। नगर पालिका कुरूद द्वारा सभाकक्ष में सोमवार 30 मार्च 2026 को परिषद की सामान्य की उक्त बैठक में नगरपालिका के छटवा परिषद बैठक के रुप में अध्यक्ष ज्योति भानु चन्द्राकर की अध्यक्षता मे संपन्न हुई। प्रस्तुत बजट में नगरवासियों के सुविधाओं को ध्यान में रखते हुए एवं नगर विकास कार्यों को आगे बढ़ाने शासन के नियमानुसार हर दो माह में परिषद बैठक करने का सौभाग्य प्राप्त भी नगरपालिका कुरूद ने किये है !

अध्यक्ष ज्योति भानु चन्द्राकर ने बजट के एजेंडा सहित आदर्श समृद्धि नगर विकास के लिए शासन को प्रस्ताव भेजने, कुरूद नगरपालिका अंतर्गत विधुत बचत करने नगर मे 2 मेगावाट का सोलर बिजली उत्पादन हेतु प्लांट संयंत्र लगाने शासन से स्वीकृति-सब्सिडी प्रस्ताव, नगर विकास कार्यों के निविदाओं का अनुमोदन सहित कुल 12 बिंदुओं में प्रस्ताव लाये थे, परिषद के सदस्यों के चर्चा उपरांत पिछले बजट मे नगरपालिका कुरूद ने 5 लाख ? लाभ बजट से प्रगति प्राप्त करते हुए इस बार वित्तीय वर्ष के लिए 25 लाख लाभ का बजट सर्वसम्मति से पारित किया गया, इसी प्रकार अध्यक्ष महोदया एवं परिषद के सदस्यों ने कुरूद नगरपालिका को आदर्श समृद्धि नगर में शामिल करने के लिए राज्य शासन के लिए धन्यवाद ज्ञापित किये ।

पेज 1 का शेष...

खून से लिखी गई शांति की कहानी...

समर्पण को दर्शाती है। इन वीरों के त्याग और कर्तव्यनिष्ठा ने क्षेत्र में आम नागरिकों के जीवन को सुरक्षित बनाने तथा शांति और विकास की दिशा में आगे बढ़ने का मार्ग प्रशस्त किया है। आईजी सुंदरराज पी ने शहीदों की वीरता को नमन करते हुए कहा कि बस्तर रेंज की धरती पर शांति, सुरक्षा और विकास की स्थापना का मार्ग वीर जवानों के सर्वोच्च बलिदान से प्रशस्त हुआ है। दुर्गम जंगलों, कठिन भौगोलिक परिस्थितियों और निरंतर सुरक्षा चुनौतियों के बीच हमारे सुरक्षा बलों ने असाधारण साहस और कर्तव्यनिष्ठा का परिचय दिया है। विशेष रूप से सुकमा, दंतेवाड़ा व बीजापुर जैसे क्षेत्रों में लंबे समय तक चली कठिन परिस्थितियों के बीच जवानों ने अपने कर्तव्य का निर्वहन करते हुए शांति स्थापित करने के लिए अदम्य साहस दिखाया। दक्षिण बस्तर के इन जिलों के घने जंगल, सीमित संचार साधन, कठिन भौगोलिक स्थितियाँ और माओवादी हिंसा की चुनौतियां लंबे समय तक सुरक्षा बलों के सामने बड़ी परीक्षा बनकर खड़ी रहीं।

34 नक्सलियों का सरेंडर...

स्तर के चंदर और रूपी शामिल है। पुलिस आत्मसमर्पण कर चुके नक्सलियों से जानकारी जुटाकर अब इलाके में छिपे बाकी नक्सलियों से संपर्क शुरू कर रही है। पुलिस उन्हें समझाकर मुख्यधारा में लाने की कोशिश कर रही है।

31 मार्च नक्सलवाद के...

सहयोग नहीं मिलने की जो बात कही गई है, उसे झुठलाने की भूपेश बघेल जी की कोशिश दरअसल सच्चाई से मुंह मोड़ने जैसा है।उन्होंने आरोप लगाया कि भूपेश सरकार के समय न तो स्पष्ट रणनीति दिखी और न ही दृढ़ इच्छाशक्ति, जिसके कारण नक्सलवाद के खिलाफ लड़ाई कमजोर पड़ी। मुख्यमंत्री ने कहा कि आज जब निर्णायक कार्रवाई हो रही है, तब पिछली विफलताओं पर पर्दा डालने के लिए ऐसे बयान दिए जा रहे हैं।

नक्सलवाद मुक्त बस्तरः विकास-पर्यटन...

क्षेत्र की सांस्कृतिक पहचान को संरक्षित करते हुए पर्यटन को बढ़ावा दिया जाएगा।

नक्सलवाद छत्तीसगढ़ के लिए कोढ़ जैसा था

मंत्री राजेश अग्रवाल ने कहा कि नक्सलवाद छत्तीसगढ़ के लिए किसी कोढ़ से कम नहीं था। उन्होंने बताया कि इस संघर्ष में 1400 से अधिक जवान और अधिकारियों ने शहादत दी है। साथ ही झीरम घाटी हमला में शहीद हुए नेताओं को भी श्रद्धांजलि दी गई।

सरगुजा में नक्सलवादः सड़क पर...

के दशक में ही नक्सलियों की आमद शुरू हो चुकी थी, लेकिन 1998 में पहली बार संगठित रूप से माओवादी कम्युनिस्ट सेंटर और अन्य नक्सली संगठनों ने सरगुजा क्षेत्र में अपनी पकड़ बनानी शुरू की। साल 2000 में जब मध्यप्रदेश से अलग होकर छत्तीसगढ़ राज्य बना, उसी समय नक्सलवाद तेजी से फैल गया। नक्सलवाद पर अंकुश बलरामपुर में बतौर एसपी शिवराम प्रसाद कल्लूरी की तैनाती के बाद हुई। उनके कार्यकाल में माओवादी संगठन पर कड़ा प्रहार हुआ।

खौफ के जंगल से विकास...

दोपहर 3 बजे तक इस मुठभेड़ में 7 नक्सली मारे गए, जिनमें महिला नक्सली भी शामिल हैं। घटनास्थल से 6 शव बरामद कर लिए गए। इस मुठभेड़ में दो आम नागरिकों की भी जान चली गई।

बस्तरवासियों, टेक्नोलॉजी बेस्ड...

शाह की अध्यक्षता में जनवरी 2024 की बैठक में एक चर्चा होती है कि, देश में 75 फीसदी नक्सलवाद हमारे छत्तीसगढ़ में था। उस बैठक में यह निर्देश दिए गए कि, सीआरपीएफ, बीएसएफ और पुलिस इस बात की गणना बतायेगे कि कैसे नक्सलवाद का समूल नाश और उन्मूलन किया जाएगा, यह अपनी रिपोर्ट में दें।

दूसरी बैठक में बनाया गया रोड मैप

गृहमंत्री विजय शर्मा ने कहा कि दूसरी बैठक 24 अगस्त 2024 में इन रिपोर्ट के आधार पर केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने यह घोषणा कि जो नक्सली लोगों की हत्याएं करते हैं, उन्हें 31 मार्च 2026 तक देश से नक्सलवाद को समाप्त करने की घोषणा की थी। उस समय सभी के मन में यह आया था कि यह कैसे होगा। मेरे मन में भी यह बात आई थी और मैंने उनसे पूछा भी था कि, यह कैसे होगा। तब केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने दिल्ली में रोडमैप बताया था। जिसमें उन्होंने सभी संस्थाओं की रिपोर्ट का जिक्र किया था। जिसमें उन्होने बताया था कि कैसे इन योजनाओं पर काम करके हम नियत समय पर लक्ष्य को हासिल कर पाएंगे।

नक्सली मामले में राजनीति मत कीजिए, पूर्व सीएम भूपेश बोले- बयान झूठ, सबूत दो

रायपुर/नवप्रदेश। नक्सलवाद के खात्मे और गृहमंत्री शाह के आरोपों पर पलटवार करते हुए पूर्व सीएम भूपेश बघेल ने बयान दिया। सोशल मीडिया एक्स पर ट्वीट कर कहा कि नक्सली मामले में बोलते हुए केंद्रीय गृहमंत्री अमित शाह ने लोकसभा में जो कुछ कहा वह सरासर झूठ है । जिन पांच साल हमारी सरकार रही उसमें नक्सल प्रभावित राज्यों के मुख्यमंत्रियों की बैठकें हुईं। इन बैठकों में राज्यों के मुख्य सचिव और पुलिस महानिदेशक भी मौजूद रहे, लेकिन पर इन बैठकों में केंद्र सरकार ने यह आपत्ति कभी नहीं की थी कि कोई राज्य नक्सलियों को बचा रहा है। भूपेश बघेल ने कहा कि मैं अमित शाह को चुनौती देता हूं कि हमारी सरकार की कार्रवाइयों पर केंद्र सरकार की किसी आपत्ति का कोई प्रमाण हो तो उसे सार्वजनिक करें। अगर तब आपत्ति नहीं की तो आज यह सब क्यों कहा आपने?

भूपेश बघेल ने कहा कि आप नक्सलियों से लड़ रहे हैं, तो हम भी उनसे लड़ रहे थे। आप अपनी पीठ बेशक थपथपाइए अमित शाह जी, लेकिन हमारी पीठ पर पैर रखकर ऊंचा उठने की कोशिश मत कीजिए... गिर जाएंगे...। पूर्व सीएम भूपेश बघेल ने कहा कि अगर हमारी सरकार ने बस्तर के सुदूर इलाकों तक कैंप न बनाए होते तो आज जो ऑपरेशन आप कर सके वो हरगिज संभव नहीं होती। याद रखिए कि भाजपा से बड़ी पीड़ा हमने झेली है। हमने अपने वरिष्ठ नेताओं को नक्सली हमले में गंवाया है। उसी नक्सली हमले में जिसकी जांच भाजपा नेताओं ने नहीं होने दी। भूपेश ने कहा कि कहा कि यदि केंद्र के पास कोई ठोस प्रमाण था तो उसे पहले ही सार्वजनिक किया जाना चाहिए था। उन्होंने कहा कि उनकी सरकार के दौरान भी लगातार नक्सल विरोधी अभियान चलाए गए। बस्तर के सुदूर इलाकों में सुरक्षा कैंप स्थापित किए गए, जिनसे आज के ऑपरेशन संभव हो पाए। नक्सलवाद जैसे गंभीर मुद्दे पर राजनीतिक बयानबाजी से बचना चाहिए। प्रदेश कांग्रेस नेताओं ने भी गृह मंत्री के बयान को 'राजनीतिक' बताते हुए कहा कि अलग-अलग समय पर शाह खुद छत्तीसगढ़ की नक्सल नीति की सराहना कर चुके हैं।

नेता प्रतिपक्ष डॉ. चरणदास महंत ने नक्सलवाद समाप्ति के सरकारी दावों पर दागे तीखे सवाल

रायपुर/नवप्रदेश। छत्तीसगढ़ विधानसभा नेता प्रतिपक्ष डॉ चरणदास महंत ने सरकार के नक्सलवाद समाप्ति के दावों को आड़े हाथों लेते हुए कहा कि कांग्रेस पार्टी खुद चाहती है कि प्रदेश से यह अभिशाप खत्म हो, क्योंकि नक्सलवाद के कारण कांग्रेस ने अपने शीर्ष नेतृत्व की पूरी एक पीढ़ी खोई है। उन्होंने सरकार से पूछा कि अगर सरकार के अनुसार नक्सलवाद वास्तव में समाप्त हो गया है, तो क्या वह संवेदनशील मुद्दों पर कदम उठाने को तैयार है। महंत ने कहा कि सुरक्षा की समीक्षा होगी। क्या बस्तर के संवेदनशील क्षेत्रों में तैनात जनप्रतिनिधियों की सुरक्षा हटाई जाएगी? यदि भय खत्म हो गया है, तो रमन सिंह जैसे नेताओं को दी जा रही भारी-भरकम सुरक्षा का क्या औचित्य है? बस्तर के अंदरूनी इलाकों में आज भी जो सैकड़ों लैंडमाइन्स सक्रिय हैं, उनसे आम जनता और जवानों को सुरक्षा की गारंटी कौन देगा? क्या अब सत्ता में बैठे बड़े नेता और देश के गृहमंत्री बस्तर के दौरों के लिए हेलीकॉप्टर के बजाय सड़क मार्ग का उपयोग करेंगे? नेता प्रतिपक्ष डॉ चरणदास महंत का मानना है कि हवाई दावों से बस्तर की जनता को गुमराह नहीं किया जा सकता। जब तक जमीन पर स्थिति नहीं बदलती, तब तक ये सवाल खड़े रहेंगे।

न्यूज गैलरी

अवैध खनन मामले में 13 ट्रैक्टर और 1 हाईवा जब्त

रायपुर/नवप्रदेश। सारंगढ़-बिलाईगढ़ जिले में अवैध खनिज उत्खनन और परिवहन के खिलाफ जिला प्रशासन ने कार्रवाई का बड़ा अभियान चलाया। बिलाईगढ़ ने एसडीएम प्रफुल्ल रजक के नेतृत्व में अलग-अलग स्थानों पर दबिश देकर कुल 13 ट्रैक्टर और 1 हाईवा जब्त किया गया है। जानकारी के अनुसार, ग्राम बेलटिकरी में पत्थर का अवैध उत्खनन करते हुए 6 ट्रैक्टर पकड़े गए, जिन्हें बिलाईगढ़ थाना की अभिरक्षा में सौंपा गया। वहीं सरसीवां क्षेत्र के पेंड्रावन में रेती का अवैध परिवहन करते 6 ट्रैक्टर जब्त किए गए। इसी क्रम में भटगांव क्षेत्र में कार्रवाई करते हुए 1 हाईवा और 1 ट्रैक्टर को भी पकड़ा गया। जांच के दौरान सभी वाहनों के पास पीएम आवास निर्माण से संबंधित या अन्य कोई वैध दस्तावेज नहीं पाए गए। जिला प्रशासन ने स्पष्ट किया है कि अवैध खनन और परिवहन पर सख्त निगरानी रखी जा रही है और दोषियों के खिलाफ आगे भी कड़ी कार्रवाई जारी रहेगी।

गांजा और बटनदार चाकू के साथ दो आरोपी गिरफ्तार

रायपुर/नवप्रदेश। नशे के खिलाफ चलाए जा रहे अभियान के तहत एण्टी क्राइम एंड साइबर यूनिट और विधानसभा थाना क्षेत्र पुलिस की संयुक्त टीम ने बड़ी कार्रवाई करते हुए दो आरोपियों को गांजा और अवैध हथियार के साथ गिरफ्तार किया है। पुलिस को 31 मार्च 2026 को सूचना मिली थी कि ग्राम छपोरा स्थित पुलिया के पास दो युवक दोपहिया वाहन में गांजा लेकर बिक्री की फिराक में घूम रहे हैं। वरिष्ठ अधिकारियों के निर्देश पर टीम ने मौके पर पहुंचकर घेराबंदी की। पुलिस को देखते ही आरोपी भागने की कोशिश करने लगे, लेकिन टीम ने उन्हें पकड़ लिया। पूछताछ में आरोपियों ने अपने नाम हिमांशु वर्मा उर्फ करण उर्फ टोब्बेल (20 वर्ष) और कोमल वर्मा उर्फ फिरंगी (24 वर्ष), निवासी नरदहा, रायपुर बताए। तलाशी के दौरान उनके बैग से 3.070 किलोग्राम गांजा और 2 बटनदार चाकू बरामद किए गए। इसके साथ ही आरोपियों के कब्जे से एक मोटरसाइकिल (CG 04 केएच 1021) और 2 मोबाइल फोन भी जब्त किए गए। जब्त सामग्री की कुल कीमत लगभग 2,23,500 रुपये आंकी गई है।

305 लीटर महुआ शराब और 1050 किलो लाहन जब्त, 5 जेल भेजे गए

रायपुर/नवप्रदेश। रायगढ़ जिले में अवैध शराब के निर्माण, संग्रहण और बिक्री के खिलाफ आबकारी विभाग ने बड़ा अभियान चलाते हुए ताबड़तोड़ कार्रवाई की है। सहायक आयुक्त आबकारी के मार्गदर्शन में बीते दो-तीन दिनों में 6 अलग-अलग प्रकरण दर्ज कर 305.200 लीटर महुआ शराब और 1050 किलोग्राम महुआ लाहन जब्त किया गया। जब्त सामग्री का अनुमानित मूल्य 1,13,540 रुपये है। जिले के विभिन्न क्षेत्रों में दबिश देकर 5 आरोपियों को गिरफ्तार किया गया। थाना पुसौर क्षेत्र के ग्राम लोहरसिंग से देवराज टंडन के पास से 6 लीटर और जकेला से शेख नसीरूद्दीन के कब्जे से 6 लीटर शराब बरामद हुई। कोतरारोड थाना अंतर्गत ग्राम कुरमापाली से राजकुमार चौहान के पास से 12 लीटर महुआ शराब जब्त की गई। वहीं तमनार क्षेत्र के ग्राम लालपुर से अजय राठिया के पास से 15 लीटर और आमघाट से अमित एक्का के कब्जे से 9.200 लीटर शराब बरामद हुई। सभी आरोपियों के खिलाफ छत्तीसगढ़ आबकारी अधिनियम के तहत गैर-जमानती अपराध दर्ज कर न्यायिक रिमांड पर जेल भेज दिया गया है। इसके साथ ही आबकारी टीम ने अवैध भट्ठियों पर भी कार्रवाई करते हुए चक्रधर नगर के भगोरा नाला और पुसौर के कसाईपाली नाला किनारे दबिश देकर भारी मात्रा में शराब और लाहन जब्त किया। उक्त मामलों में आरोपियों की तलाश जारी है। आबकारी विभाग ने स्पष्ट किया है कि अवैध शराब के कारोबार के खिलाफ अभियान लगातार जारी रहेगा और दोषियों पर सख्त कार्रवाई की जाएगी।

खेलो इंडिया ट्राइबल गेम्स-2026: सरगुजा में कुश्ती स्पर्धा का शानदार समापन, पुरूष वर्ग में हिमाचल प्रदेश व महिला वर्ग में असम रहा ओवरऑल चैंपियन

खिलाड़ियों ने कुशल तकनीक और रणनीति से जीते पदक

रायपुर/नवप्रदेश। छत्तीसगढ़ में आयोजित खेलो इंडिया ट्राइबल गेम्स-2026 अंतर्गत आज सरगुजा जिला मुख्यालय अम्बिकापुर के गांधी स्टेडियम में पिछले चार दिनों से जारी कुश्ती स्पर्धा का शानदार समापन आज हुआ। पूरे आयोजन के दौरान विभिन्न राज्यों से आए खिलाड़ियों के बीच जबरदस्त प्रतिस्पर्धा देखने को मिली। खिलाड़ियों ने अपनी कुशल तकनीक एवं रणनीति का प्रदर्शन कर पदक अपने नाम किए।

समापन अवसर पर टीम चैंपियनशिप परिणाम घोषित किए गए। पुरूष वर्ग में हिमाचल प्रदेश ओवरऑल चैंपियन रहा, वहीं जम्मू कश्मीर फर्स्ट रनरअप, महाराष्ट्र एवं झारखण्ड सेकंड रनरअप बने। महिला वर्ग में असम ओवरऑल चैंपियन रहा, वहीं झारखण्ड फर्स्ट रनरअप, कर्नाटक एवं तेलंगाना सेकंड रनरअप रहे।

ये रहे आज के पदक विजेता-

आज आयोजित स्पर्धाओं में महिला सीनियर 57 किलोग्राम भारवर्ग में तेलंगाना की नागलक्ष्मी ने गोल्ड, कर्नाटक की शालीना सिद्धि ने सिल्वर, कर्नाटक की अमूल्या भीमसेन कुन्दरगी ने कांस्य पदक जीता। महिला सीनियर 68 किलोग्राम भारवर्ग में कर्नाटक के प्रिंसिता पेड्रू फर्नान्डिस सिद्दी को गोल्ड, मिजोरम के एलिजाबेथ रोहलुपुल्ल को सिल्वर, गुजरात के चावड़ा लीलाबेन मैयाभाई एवं राजस्थान की बालकेश कुमारी मीना को कांस्य पदक प्राप्त हुआ।

पुरूष सीनियर फ्रीस्टाइल 57 किलोग्राम भारवर्ग में ओड़िसा के अजीत भुयां को गोल्ड, महाराष्ट्र के पारस सुभाष बिड़कर को सिल्वर, महाराष्ट्र के विकी रामचन्द्र उइके एवं हिमाचल प्रदेश के अब्दुल खान को कांस्य पदक प्राप्त हुआ। पुरूष ग्रीको रोमन सीनियर 77 किलोग्राम में झारखंड के अभिषेक मुंडा ने गोल्ड, हिमाचल प्रदेश के अर्फ़ान ने सिल्वर, तेलंगाना के जादव चरण एवं जम्मू-कश्मीर के इंजमाम ने कांस्य पदक प्राप्त किया। पुरूष फ्रीस्टाइल सीनियर 86 किलोग्राम में हिमाचल प्रदेश के सुमित ठाकुर को गोल्ड, जम्मू-कश्मीर के बहादुर खान को सिल्वर, हिमाचल प्रदेश के शब्बीर खान को कांस्य पदक प्राप्त किया। पुरूष ग्रीको रोमन सीनियर 130 किलोग्राम में मध्यप्रदेश के शिवा भलावी को गोल्ड, जम्मू कश्मीर के दिलेर खान को सिल्वर, तेलंगाना के कर्रा राजू को कांस्य पदक प्राप्त हुआ।

खेलो इंडिया ट्राइबल गेम्स में कर्नाटक की मनीषा जोंस सिद्दी ने जीता गोल्ड

रायपुर/नवप्रदेश। 'खेलो इंडिया ट्राइबल गेम्स' के प्रथम ऐतिहासिक संस्करण में कर्नाटक की बेटी मनीषा जोंस सिद्दी ने अपनी प्रतिभा का लोहा मनवाते हुए कुश्ती के 76 किलोग्राम भारवर्ग में स्वर्ण पदक जीतकर राज्य का नाम रोशन किया है। अभावों के बीच पली-बढ़ी मनीषा की यह जीत केवल एक पदक नहीं, बल्कि उनके वर्षों के कठिन परिश्रम और अटूट संकल्प की विजय है।

पिता के निधन के बाद माँ बनीं संबल: मनीषा का खेल जीवन चुनौतियों से भरा रहा है। उन्होंने बताया कि जब वह पाँचवीं कक्षा में थीं, तभी उनके पिता का देहांत हो गया था। इसके बावजूद, उनकी माँ ने हार नहीं मानी और अकेले दिन-रात मेहनत करके मनीषा के सपनों को पंख दिए। पूर्व में कई राष्ट्रीय प्रतियोगिताओं में सिल्वर और ब्रोंज मेडल जीत चुकीं मनीषा के करियर का यह पहला गोल्ड मेडल है।

स्पोर्ट्स हॉस्टल और परिवार का मिला साथ: अपनी सफलता को साझा करते हुए मनीषा ने कर्नाटक के डिवाइस स्पोर्ट्स हॉस्टल की भूमिका को महत्वपूर्ण बताया। उन्होंने कहा, ÷हॉस्टल के कोच और साथी खिलाड़ियों ने मुझे हमेशा प्रेरित किया। मेरा बड़ा भाई मेरा मार्गदर्शक रहा है, वहीं छोटा भाई, जो खुद एक राज्य स्तरीय एथलीट है, वह मेरी सबसे बड़ी हिम्मत है।

ट्राइबल गेम्स: एक नई पहचान का मंच: मनीषा ने केंद्र सरकार और आयोजकों का आभार व्यक्त करते हुए कहा कि 'खेलो इंडिया ट्राइबल गेम्स' जैसे मंच से जनजातीय समुदाय के बच्चों को अपनी विशेष पहचान के साथ आगे बढ़ने का मौका मिला है। उन्होंने यहाँ की व्यवस्थाओं की सराहना करते हुए कहा मैच के दौरान सुरक्षा, भोजन और यातायात की व्यवस्था बेहतरीन थी। छत्तीसगढ़ के लोगों का व्यवहार और यहाँ का माहौल खिलाड़ियों के लिए अत्यंत सुखद है।

लक्ष्य: अंतरराष्ट्रीय मंच पर तिरंगा लहराना: स्वर्ण पदक की चमक के साथ मनीषा की निगाहें अब भविष्य की बड़ी चुनौतियों पर हैं। छत्तीसगढ़ की धरती पर मिली इस सफलता से उत्साहित मनीषा अब अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भारत का प्रतिनिधित्व करने की तैयारी में जुटी हैं। उनका अंतिम लक्ष्य विश्व पटल पर स्वर्ण पदक जीतकर देश का मान बढ़ाना है।

खेलो इंडिया ट्राइबल गेम्स महिला फुटबॉल में छत्तीसगढ़ और झारखंड फाइनल में

रायपुर/नवप्रदेश। खेलो इंडिया ट्राइबल गेम्स-2026 के अंतर्गत स्वामी विवेकानंद एथलेटिक्स स्टेडियम कोटा में खेले गए महिला फुटबॉल प्रतियोगिता के सेमीफाइनल मुकाबले रोमांच और उत्कृष्ट खेल प्रदर्शन से भरपूर रहे। पहले सेमीफाइनल में छत्तीसगढ़ और अरुणाचल प्रदेश के बीच बेहद कांटे का मुकाबला देखने को मिला। निर्धारित समय तक दोनों टीमें 2-2 की बराबरी पर रहीं। इसके बाद मैच का फैसला पेनल्टी शूटआउट से हुआ, जिसमें छत्तीसगढ़ ने शानदार प्रदर्शन करते हुए अरुणाचल प्रदेश को 6-5 से हराकर फाइनल में अपनी जगह पक्की की। वहीं दूसरे सेमीफाइनल में झारखंड ने गुजरात के खिलाफ एकतरफा जीत दर्ज की। झारखंड की टीम ने आक्रामक खेल दिखाते हुए गुजरात को 9-0 से पराजित किया। पहले हाफ के अंत तक ही झारखंड 4-0 की मजबूत बढ़त बना चुकी थी, जिसे दूसरे हाफ में और मजबूत करते हुए बड़ी जीत हासिल की। झारखंड की टीमें अब फाइनल में आमने-सामने होंगी, जहां खिताब के लिए दर्शकों को रोमांचक और कड़ा मुकाबला देखने को मिलेगा।

उद्योग मंत्री ने तिलक नगर में बाउंड्रीवाल निर्माण कार्य का किया भूमिपूजन

रायपुर/नवप्रदेश। छत्तीसगढ़ के वाणिज्य, उद्योग, श्रम, सार्वजनिक उपक्रम व आबकारी मंत्री श्री लखनलाल देवांगन ने कहा कि पत्रकारबंधु एक ऐसा दर्पण होते हैं, जो समाज को सच का आईना दिखाने का कार्य करते हैं। उन्होने कहा कि निष्पक्षता एवं पारदर्शिता पत्रकारिता का मूलमंत्र है, समाचार पत्रों में जो छपता है, मीडिया में जो दिखता है, आमजन मानस उसे ही सच मानकर चलता है, अतः यह आवश्यक है कि समाचारों में निष्पक्षता, पारदर्शिता व निर्भीकता होनी ही चाहिये। उन्होने कहा कि प्रेस क्लब कोरबा एक ऊर्जावान संस्था है, जो पत्रकारिता व पत्रकारबंधुओं के हितों की रक्षा के लिये निरंतर कार्य कर रही है।

इस आशय के उद्गार आज मंगलवार को उद्योग मंत्री श्री देवांगन ने कोरबा के तिलक भवन स्थित प्रेस क्लब में आयोजित भूमिपूजन-लोकार्पण कार्यक्रम के दौरान कही। नगर पालिक निगम कोरबा द्वारा वार्ड क्र. 35 खरमोरा डाईट बिल्डिंग तिलक नगर पत्रकार कालोनी के समीप एन.टी.पी.सी. के सीएसआर मद से 15 लाख रूपये की लागत से बाउण्ड्रीवाल का निर्माण कार्य कराया जाना हैं, जिसका वर्चुअल भूमिपूजन आज उद्योग मंत्री श्री लखनलाल देवांगन के मुख्य आतिथ्य एवं महापौर श्रीमती संजूदेवी राजपूत की अध्यक्षता में तिलक भवन में आयोजित कार्यक्रम के दौरान उनके हाथों किया गया। इसी प्रकार वार्ड क्र. 24 तिलक भवन प्रेस क्लब में पार्षद श्री पंकज देवांगन के पार्षद मद से एलईडी प्रोजेक्टर, स्मार्ट टी.व्ही., साउण्ड सिस्टम व स्क्रीन स्थापना आदि का कार्य कराया गया है, जिसका लोकार्पण भी आज उद्योग मंत्री श्री देवांगन के करकमलों से सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर उद्योग मंत्री श्री देवांगन ने दिये गये अपने उद्बोधन में आगे कहा कि मुझे प्रसन्नता है।

रायगढ़ में भू-अर्जन मुआवजे का ऑनलाइन भुगतान

रायपुर/नवप्रदेश। छत्तीसगढ़ में सुशासन और डिजिटल सशक्तिकरण की दिशा में रायगढ़ जिला प्रशासन की पहल किसानों के लिए वरदान साबित हो रही है। भू-अर्जन मुआवजा भुगतान की पारंपरिक चेक प्रणाली को समाप्त कर ऑनलाइन भुगतान व्यवस्था लागू किए जाने से अब किसानों को उनकी राशि सीधे बैंक खातों में मिल रही है। इससे प्रक्रिया न केवल तेज और पारदर्शी हुई है, बल्कि किसानों का भरोसा भी मजबूत हुआ है। यह व्यवस्था 26 सितंबर 2025 से रायगढ़ अनुविभाग में शुरू की गई थी। 30 मार्च 2026 तक 463 किसानों को कुल 15 करोड़ 49 लाख 71 हजार 225 रुपये की राशि उनके बैंक खातों में ऑनलाइन अंतरित की जा चुकी है।

पीएम आवास निर्माण में देश में अव्वल होने पर डिप्टी सीएम शर्मा ने जताया हर्ष

पीएम आवास योजना से पक्के घरों के सपनों के साथ आजीविका, सम्मान और आत्मनिर्भरता भी हो रहे सुनिश्चित

रायपुर/नवप्रदेश। छत्तीसगढ़ राज्य ने प्रधानमंत्री ग्रामीण आवास योजना के अंतर्गत चालू वित्तीय वर्ष में ऐतिहासिक उपलब्धियाँ हासिल करते हुए पूरे देश में अपनी विशिष्ट पहचान स्थापित की है। राज्य ने न केवल सर्वाधिक आवास निर्माण पूर्ण कर राष्ट्रीय स्तर पर पहला स्थान प्राप्त किया है, बल्कि मध्यप्रदेश एवं महाराष्ट्र जैसे बड़े राज्यों को भी पीछे छोड़ दिया है। इस उपलब्धि पर उप मुख्यमंत्री श्री विजय शर्मा ने हर्ष जताते हुए प्रदेशवासियों एवं हितग्राहियों को शुभकामनाएँ दी।

उन्होंने बताया कि पंचायत एवं ग्रामीण विकास विभाग द्वारा योजना के प्रभावी क्रियान्वयन के तहत छत्तीसगढ़ ने 'एसएनए स्पर्श' के माध्यम से देश में सर्वाधिक व्यय कर उत्कृष्ट वित्तीय प्रबंधन का भी उदाहरण प्रस्तुत किया है। वर्ष 2016 में योजना के प्रारंभ से अब तक एक ही वित्तीय वर्ष में सर्वाधिक आवास निर्माण का रिकॉर्ड भी इसी वर्ष दर्ज किया गया है, जो राज्य की कार्यकुशलता और प्रतिबद्धता को दर्शाता है।

उप मुख्यमंत्री श्री शर्मा ने बताया कि आवास से आजीविका' के अभिनव प्रयास के अंतर्गत निर्माण सामग्री की आपूर्ति से हजारों महिलाओं को रोजगार मिला है। जिसमें रोजगार पाकर 9000 से अधिक बिहान दीदियाँ ÷लखपति दीदी÷ बनकर आत्मनिर्भरता की नई मिसाल कायम कर रही हैं। इसके साथ ही इस वर्ष 6000 से अधिक राजमिस्त्रियों को आरसेटी के माध्यम से प्रशिक्षण प्रदान किया गया, जो देश में सर्वाधिक है।

उल्लेखनीय है कि इन प्रशिक्षित राजमिस्त्रियों में 1400 महिलाएँ एवं 400 से अधिक आत्मसमर्पित नक्सली भी शामिल हैं, जो मुख्यधारा में जुड़कर विकास की नई कहानी लिख रहे हैं। पीएम आवास ग्रामीण के हितग्राहियों को स्थायी आजीविका से जोड़ने हेतु महात्मा गांधी नरेगा के माध्यम से बड़े पैमाने पर व्यक्तिगत कार्य भी कराए गए हैं।

नाम-परिवर्तन

मैं शपथकर्ता सन्नी चौहान पिता श्री अजय चौहान उम्र 32 वर्ष, निवासी चौहान रेसीडेंसी राजीव नगर मुक्तिधाम मार्ग आजाद चौक भिलाई पोस्ट-सुपेला भिलाई तह. व जिला दुर्ग छ.ग. 490023 का हूँ। जो कि निम्नलिखित शपथपूर्वक कथन करता हूँ:- यह कि, मेरा नाम व पता उपतोक्तानुसार हैं। यह कि, मैं अपने नाबालिग पुत्री नाम शायरा चौहान (SAIRAH CHOUHAN) से बदलकर नाम अनिका चौहान (ANIKA CHOUHAN) करवाना चाहता हूँ। यह कि मैं अपने पुत्री का नाम बदलकर, यदि कोई, गैर कानूनी काम करता हूँ तो उसके लिए मैं स्वयं जिम्मेदार रहूँगा। मेरी पत्नी आंवल चौहान को हमारे नाबालिग पुत्री के नाम बदलने में कोई आपत्ति नहीं हैं। मैं यह शपथ पत्र अपने पूरे होशोहवास में रहकर हस्ताक्षर कर रहा हूँ तथा सक्षम अधिकारी के समक्ष प्रस्तुत कर रहा हूँ।

शपथकर्ता
सन्नी चौहान पिता श्री अजय चौहान
निवासी चौहान रेसीडेंसी राजीव नगर मुक्तिधाम मार्ग आजाद चौक भिलाई पोस्ट-सुपेला भिलाई
तह. व जिला दुर्ग (छ.ग.)

न्यायालय अनुविभागीय अधिकारी (रा.) दुर्ग जिला - दुर्ग (छ.ग.)

उद्घोषणा

रा.प्र.क्र.202603100400273 /अ-02/ वर्ष 2025-26

एतद् द्वारा सर्वसाधारण को सूचित किया जाता है कि आवेदक श्री/श्रीमती रीना नायक पिता/पति लक्ष्मण नायक निवासी सेक्टर 05 भिलाई द्वारा नीचे वर्णित ÷अनुसूची ÷ में उल्लेखित ग्राम, खसरा, रकबा भूमि के दर्शित प्रयोजन अनुसार छत्तीसगढ़ शासन के राजस्व एवं आपदा प्रबंधन विभाग मंत्रालय, महानदी भवन, नवा रायपुर अटलनगर के द्वारा जारी अधीसूचना दिनांक 22.12.2025 के अनुसार छत्तीसगढ़ भू राजस्व संहिता (व्यपवर्तित भूमि के लिए भू-राजस्व का निर्धारण तथा पुनर्निर्धारण) नियम 2025 में दिये गये निर्धारित प्ररूप-एक में भूमिस्वामी द्वारा भूमि उपयोग के व्यपवर्तन तथा स्वनिर्धारण की सूचना व घोषणा पत्र छ.ग.भू.रा. संहिता 1959 यथासंशोधित 2022 की धारा 59/172 के तहत् इस न्यायालय में अन्य दस्तावेजों सहित प्रस्तुत किया गया है।

अनुसूची

ग्राम/प.ह.नं.जहां भूमि स्थित है	आवेदि.भू. खसरा नं.	रकबा हे. वर्गमीटर	प्रयोजन
ग्राम जुनवानी प.ह.न. 43 तह. व जिला दुर्ग	105/8	0.0100	आवासीय

अतएव उपरोक्त उपर वर्णित भूमि के व्यपर्वतन / पुर्ननिर्धरण के संबंध में जिस किसी भी व्यक्ति, संस्था, शासकीय विभाग, सार्वजनिक या अर्धसार्वजनिक उपक्रम को किसी भी प्रकार की कोई आपत्ति हो तो वे उद्घोषणा जारी होने की तिथि से 07 दिवस के भीतर लिखित आपत्ति अथवा दावा स्वयं अथवा अपने अधिकृत व्यक्ति/अधिवक्ता के माध्यम से इस न्यायालय में उपस्थित होकर प्रस्तुत कर सकते हैं। नियत अवधि में दावा आपत्ति के पश्चात् दावा आपत्ति प्राप्त होने पर कोई विचार नहीं किया जावेगा।

यह उद्घोषणा आज दिनांक 27.03.2026 को मेरे हस्ताक्षर व न्यायालय की पदमुद्रा से जारी किया गया।

मुहर

अनुविभागीय अधिकारी
दुर्ग, जिला दुर्ग

न्यायालय नायब तहसीलदार दुर्ग तह. व जिला दुर्ग (छ.ग.)

उद्घोषणा

एतद् द्वारा सर्व साधारण को सूचित किया जाता है कि आवेदक परसराम राउत पिता स्व. कन्हैया राउत निवासी ग्राम कोकड़ी, पोस्ट-पाउवारा तहसील व जिला दुर्ग (छ.ग.) के द्वारा मौजा कोकड़ी प.ह.न. 55 रा.नि.मं. उतई स्थित भूमि खसरा नं. 108/1, 114, 735, रकबा क्रमशः 0.13, 0.75, 0.05 हे. कुल खसरा नं. 03 कुल रकबा 0.9300 हे. भूमि भूमिस्वामी आवेदक एवं आवेदक की माता विटावन पति कन्हैया राउत के नाम से राजस्व अभिलेख में दर्ज है। आवेदक के माता विटावन पति कन्हैया की मृत्यु दिनांक 10/04/1999 को हो चुकी है। आवेदक के माता विटावन की दो पुत्री भगैया बाई एवं भगवंतीन एवं आवेदक परसराम (पुत्र), है। आवेदक के माता विटावन पति कन्हैया का नाम विलोपित कर उसके स्थान पर भगैया बाई तथा भगवंतीन का नाम दर्ज किये जाने एवं शेषप्रवष्टि यथावत् रखे जाने फौती/नामांतरण आवेदन न्यायालय के समक्ष आवेदन प्रस्तुत किया है।

अतएव इस संबंध में जिस किसी व्यक्ति, अथवा संस्था को किसी प्रकार का उजर या दावा हो तो वह नियत पेशी दिनांक 08.04.2026 तक स्वयं अथवा अपने विधिमान्य अभिकर्ता के माध्यम से इस न्यायालय में उपस्थित होकर लिखित में आपत्ति आवेदन पेश कर सकते हैं। समयावधि पश्चात् आपत्ति प्रस्तुत होने पर कोई विचार नही किया जावेगा।

आज दिनांक 20.03.2026 को यह उद्घोषणा मेरे स्वयं के हस्ताक्षर एवं न्यायालय की मुहर के साथ जारी किया गया।

मुहर

नायब तहसीलदार
दुर्ग (छ.ग.)

NAME CHANGE

It is Informed to the general public that, I RAMASHANKAR SINGH S/O LATE NAGINA SINGH, Resident of Azad Market Ward 62, station Maroda, Bhilai, Distt. Durg (C.G.) 490006 have changed my old name Ramshankar singh, in the all Documents. So in future I sould be recognized by my new name in the Documents that is Ramashankar Singh in all Government & other documents.

RAMASHANKAR SINGH
S/O LATE NAGINA SINGH
Resident of Azad Market Ward 62, station Maroda, Bhilai, Distt. Durg (C.G.)

नाम-परिवर्तन

मैं शपथकर्ता मोहम्मद जीशान पिता श्री एम डी निहाल उम्र 20 वर्ष, निवासी मकान क ई डब्ल्यू एस 1000 हाउसिंग बोर्ड कॉलोनी टाटीबांध रायपुर छ.ग. 492099 का हूँ। जो कि निम्नलिखित शपथपूर्वक कथन करता हूँ यह कि, मेरा नाम व पता उपतोक्तानुसार है। यह कि, मेरे आधार कार्ड में मेरा नाम एम. डी. डीशान (M.D. DISAN) दर्ज हैं। यह कि मेरे शैक्षणिक दस्तावेज में मेरा नाम एमडी जीशान (MD JISHAN) दर्ज हैं। यह कि एम.डी. डीशान (M.D. DISAN) एवं एमडी जीशान (MD JISHAN) दोनों नाम एक ही लड़का का नाम है. जो मेरा स्वंम का ही नाम है। यह कि मैं अपने आधार कार्ड एवं भविष्य के समस्त दस्तावेजों में अपना पूरा एवं सही नाम मोहम्मद जीशान (MOHAMMAD JISHAN) दर्ज करवाना चाहता हूँ जिसके संबंध में यह शपथपत्र छत्तीसगढ़ राजपत्र में प्रकाशित किये जाने हेतु श्रीमान सक्षम अधिकारी महोदय के समक्ष प्रस्तुत है।

शपथकर्ता
मोहम्मद जीशान
पिता श्री एम डी निहाल
निवासी मकान क ई डब्ल्यू एस 1000 हाउसिंग बोर्ड कॉलोनी टाटीबांध रायपुर (छ.ग.) 492099

नाम-परिवर्तन

मैं शपथकर्ती राजकुमारी जाटवर पति श्री धरम लाल जाटवर उम्र 36 वर्ष, निवासी मकान क्र 164 हरदीडीह, कचंदा जैजेपुर तह. व जिला जांजगीर-चांपा छ.ग. 495690 की हूँ। जो कि निम्नलिखित शपथपूर्वक कथन करती हूँ:- यह कि, मेरा नाम व पता उपतोक्तानुसार है। यह कि; मेरे पुत्र के आधार कार्ड में मेरे पुत्र का नाम सचिव कुमार जाटवर (SACHIV KUMAR JATWAR) दर्ज है। यह कि मेरे पुत्र के शैक्षणिक दस्तावेज में पुत्र का नाम सचिन कुमार (SACHIN KUMAR) दर्ज है। यह कि मेरे पुत्र का नाम सचिव कुमार जाटवर (SACHIV KUMAR JATWAR) एवं सचिन कुमार (SACHIN KUMAR) दोनों नाम एक ही लड़का का नाम है, जो मेरे पुत्र का ही नाम है। यह कि मैं अपने पुत्र के आधार कार्ड एवं भविष्य के समस्त दस्तावेजो में पुत्र का पूरा एवं सही नाम सचिन कुमार (SACHIN KUMAR) को दर्ज करवाना चाहती हूँ जिसके संबंध में यह शपथपत्र छत्तीसगढ़ राजपत्र में प्रकाशित किये जाने हेतु श्रीमान सक्षम अधिकारी महोदय के समक्ष प्रस्तुत है।

शपथकर्ती
राजकुमारी जाटवर
पति श्री धरम लाल जाटवर
निवासी मकान क्र 164 हरदीडीह, कचंदा जैजेपुर तह. व जिला जांजगीर-चांपा (छ.ग.) 495690

कार्यालय नगर पंचायत पलारी, जिला- बालोद (छ.ग.)

- मैनुअल पद्धति निविदा आमंत्रण सूचना -

क्रमांक /1306/लो.नि.वि./न.पं./2026 पलारी, दिनांक 30/03/2026

एकीकृत पंजीयन प्रणाली अंतर्गत सक्षम श्रेणी में पंजीकृत ठेकेदार से निर्माण कार्य, बोरखनन तथा सामग्री प्रदाय हेतु फर्मो/प्रदायकर्ता से वित्तीय वर्ष 2026-27 के लिये मैनुअल निविदा पंजीकृत डाक / स्पीड पोस्ट से आमंत्रित की जाती हैं -

क्र.	कार्य का विवरण	अनु. लागत (लाख में)	निविदा प्रपत्र प्राप्त करने की अंतिम तिथि
1	आपातनिधि अंतर्गत संधारण एवं मरम्मत कार्य	9.00	10.04.2026 सायं 5:00 बजे तक
2	जोनल कार्य (निकाय निधि एवं अन्य मद अंतर्गत लघुस्तरीय निर्माण एवं मरम्मत, सिविल कार्य)	9.50	
3	बोर खनन कार्य (150 एम.एम. डाया)	8.00	
4	किराया भंडार/टेंट सामाग्री प्रदाय कार्य	6.00	
5	स्टेशनरी/फ्लेक्स/बेनर व अन्य सामग्री छपाई कार्य	5.00	

उपरोक्त कार्यों के निविदा की सामान्य शर्ते, धरोहर राशि, विस्तृत निविदा विज्ञप्ति, कार्यालयीन अवधि में कार्यालय से प्राप्त की जा सकती हैं, साथ ही यह जानकारी विभागीय वेबसाईड www.uad.cg.gov.in में भी देखी व डाउनलोड की जा सकती हैं।

नगर पंचायत के करों का भुगतान समय पर करें ।

मुख्य नगर पालिका अधिकारी
नगर पंचायत पलारी

खेल के साथ पर्यटन का संगम, छत्तीसगढ़ की मेहमाननवाजी ने जीता दिल

रायपुर/नवप्रदेश। खेलो इंडिया ट्राइबल गेम्स-2026 के रंग में इस समय पूरा छत्तीसगढ़ सराबोर नजर आ रहा है। खेल प्रतियोगिताओं के साथ-साथ राज्य की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत और प्राकृतिक सौंदर्य भी देशभर से आए खिलाड़ियों को अपनी ओर आकर्षित कर रहा है। अंडमान-निकोबार से आए वेटलिफ्टिंग के खिलाड़ियों के लिए सिरपुर और बारनवापारा के भ्रमण ने उनकी छत्तीसगढ़ की यात्रा को और यादगार बना दिया। छत्तीसगढ़ पर्यटन मंडल ने आज खिलाड़ियों को ऐतिहासिक नगरी सिरपुर का भ्रमण कराया, जहां उन्होंने प्राचीन मंदिरों, बौद्ध विहारों और पुरातात्विक धरोहरों के माध्यम से राज्य के

गौरवशाली इतिहास को करीब से जाना। सिरपुर की ऐतिहासिक विरासत ने खिलाड़ियों को खासा प्रभावित किया और उन्होंने इसकी समृद्ध संस्कृति की सराहना की। बारनवापारा अभयारण्य के

छत्तीसगढ़ की आत्मीयता और मेहमाननवाज़ी ने सभी खिलाड़ियों का दिल जीत लिया। अंडमान-निकोबार से आए खिलाड़ियों ने राज्य सरकार एवं छत्तीसगढ़ पर्यटन मंडल के प्रति आभार व्यक्त करते हुए कहा कि यह अनुभव उनके जीवन की अविस्मरणीय स्मृतियों में शामिल रहेगा।

भ्रमण और प्रकृति की सुरम्य वादियों ने सभी खिलाड़ियों को मंत्रमुग्ध कर दिया। घने जंगल, शांत वातावरण और हरियाली से भरपूर इस क्षेत्र में खिलाड़ियों ने सुकून के पल बिताए। बारनवापारा स्थित छत्तीसगढ़ पर्यटन मंडल के हरेली इको रिसोर्ट में उन्होंने स्थानीय स्वादिष्ट व्यंजनों का भी आनंद लिया। अंडमान-निकोबार के खिलाड़ियों की इस रोमांचक यात्रा का सबसे आकर्षक हिस्सा रहा बाँबू राफ्टिंग, जिसमें खिलाड़ियों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया और प्राकृतिक जलधाराओं के बीच रोमांच का अनुभव किया। यह गतिविधि उनके लिए न केवल मनोरंजक रही, बल्कि टीम भावना को भी और मजबूत करने वाली साबित हुई। खेलो इंडिया ट्राइबल गेम्स के माध्यम से छत्तीसगढ़ न केवल खेल प्रतिभाओं को मंच प्रदान कर रहा है, बल्कि अपनी सांस्कृतिक विरासत, पर्यटन स्थलों और आतिथ्य की उत्कृष्टता को भी राष्ट्रीय स्तर पर नई पहचान दिला रहा है। यह आयोजन राज्य की बहुआयामी सकारात्मक छवि को और सुदृढ़ करने की दिशा में महत्वपूर्ण कदम साबित हो रहा है।

न्यूज गैलरी

दिव्यांग चंदूलाल से सुरक्षा घेरे हटा की मुलाकात, सुनी समस्या किया समाधान

रायपुर/नवप्रदेश। चंदखुरी निवासी दिव्यांग चंदूलाल वर्मा के जीवन में आज एक भावुक और अद्भुत पल आया, और वह हुआ जो चंदूलाल ने सोचा नहीं था। जिसका उन्हें कई दिनों से इंतजार था। मुख्यमंत्री के मिलने के कुछ समय के भीतर ही उनकी मांग पूरी हो गई। वाकया यह था मुख्यमंत्री विष्णु देव साय आज कायस्थ मंगल भवन के लोकार्पण कार्यक्रम में शामिल होने पहुंचे थे। तभी कार्यक्रम के समाप्ति के पश्चात् पहली पंक्ति में चंदूलाल वर्मा बैठे हुए थे। मुख्यमंत्री से मिलना चाह रहे थे, ग्रुप फोटो होते साथ वे मंच की ओर बढ़ने लगे। तभी सुरक्षा के दृष्टिकोण से उन्हें रोक दिया गया, तभी मुख्यमंत्री की नजर उन पर पड़ी और उन्होंने सुरक्षाकर्मियों को वर्मा को मंच में बुलाने का निर्देश दिया। तत्काल उन्हें मुख्यमंत्री से मिलाया गया, और मिलते साथ चंदूलाल ने अपनी व्यथा बताते हुए कहा कि वे पहले राजमिस्त्री का काम करते थे लेकिन शुगर की बीमारी के चलते उनके पैरों में समस्या आई एवं डायबिटिक फूट के कारण चलने में तकलीफहोने लगी। तब से वे कुछ काम नहीं कर पा रहे हैं। उन्हें बैटरी ट्राईसिकल की आवश्यकता है। मुख्यमंत्री ने बड़ी संवेदनशीलता से उनकी बातें सुनी और तत्काल उन्हें आर्थिक सहायता राशि दी और अधिकारियों को ट्राईसिकल देने के निर्देश दिए। मुख्यमंत्री के निर्देश का तत्काल पालन हुआ और जल्द प्रक्रिया पूर्ण की गई। नगर पंचायत अध्यक्ष प्रतीक बैस ने चंदूलाल को मोटराईज्ड ट्राईसिकल दिया।

छत्तीसगढ़ में बढ़ती साइबर ठगी सरकार की विफलताः कांग्रेस

रायपुर/नवप्रदेश। छत्तीसगढ़ में साइबर ठगी की घटनाएं लगातार बढ़ रही हैं, जो राज्य की कानून व्यवस्था और डिजिटल सुरक्षा तंत्र पर गंभीर सवाल खड़े करती हैं। प्रदेश कांग्रेस के प्रवक्ता सत्यप्रकाश सिंह ने कहा कि राज्य सरकार साइबर अपराध पर नियंत्रण पाने में पूरी तरह असफल साबित हो रही है। हाल ही में राजधानी रायपुर में फर्जी साइबर कॉल सेंटर का बड़ा खुलासा हुआ है, जिसमें अंतरराष्ट्रीय गिरोह द्वारा बीमा पॉलिसी मैच्योरिटी और लोन के नाम पर विदेश में बैठे लोगों के साथ भी करोड़ों रुपये की ठगी की जा रही थी। यह गिरोह विदेश ही नहीं देशभर के लोगों को फोन कर प्रोसेसिंग फीस, टैक्स और अन्य शुल्क के नाम पर रकम ऐंठता था। इस तरह के गिरोह पूरे छत्तीसगढ़ में अंतरराष्ट्रीय स्तर पर साइबर ठगी के नेटवर्क से जुड़े हुए हैं फर्जी कॉल सेंटर बनाकर देश देश-विदेश के लोगों को ठगने का जो काम रायपुर राजधानी में बैठकर संचालित किया जा रहा था यह स्पष्ट बताता है कि छत्तीसगढ़ अब साइबर अपराधियों का सुरक्षित ठिकाना बनता जा रहा है। एक तरफसरकार डिजिटाइजेशन की बात करती है और ताजा नेशनल साइबर क्राईम रिर्पोटिंग पोर्टल के आंकड़े बताते हैं कि छत्तीसगढ़ में जब से यह सरकार बनी है 70000 से ज्यादा शिकायतें सामने आई है,जिसमें राजधानी रायपुर में 17000 से ज्यादा शिकायतें मिली है, जिसमें प्रदेश की जनता का लगभग 800 करोड रुपए का नुक्सान इन ठगों के द्वारा साइबर अपराध के माध्यम से किया गया है! प्रदेश कांग्रेस प्रवक्ता सत्यप्रकाश सिंह ने कहा कि राज्य में साइबर अपराध रोकने के लिए प्रभावी निगरानी तंत्र न होने की वजह से मात्र तीन प्रतिशत लोगों को ही अपनी धनराशि वापस मिली है और यह आंकड़े बताते हैं कि छत्तीसगढ़ में हर 20 मिनट में एक साइबर ठगी की शिकायत सामने आ रही है!

राज्य खाद्य आयोग के अध्यक्ष संदीप शर्मा ने ली अंतर्विभागीय बैठक

रायपुर/नवप्रदेश। छत्तीसगढ़ राज्य खाद्य आयोग के अध्यक्ष संदीप शर्मा ने आज नवा रायपुर स्थित आयोग कार्यालय में अंतर्विभागीय बैठक ली। बैठक मे वर्ष 2025-26 के दौरान 21 जिलों में किए गए निरीक्षण एवं खाद्य विभाग, महिला एवं बाल विकास विभाग, स्कूल शिक्षा विभाग तथा आदिम जाति एवं अनुसूचित जनजाति विभाग के अधिकारियों द्वारा उचित मूल्य दुकानों, आंगनबाड़ी केन्द्रों, विद्यालयों में मध्यान्ह भोजन एवं शासकीय आश्रम/छात्रावासों में पाई गई कमियों की विस्तृत समीक्षा की गई। अध्यक्ष संदीप शर्मा ने ट्राइबल विभाग द्वारा संचालित बालक छात्रावासों में भोजन की गुणवत्ता एवं सामग्री आपूर्ति में सुधार के निर्देश दिए गए तथा कन्या छात्रावासों की स्थिति तुलनात्मक रूप से बेहतर बताई गई। ट्राइबल विभाग द्वारा 21 जिलों की अनुशंसाओं के पालन प्रतिवेदन तथा पूर्व वर्षों के प्रतिवेदन समय पर प्रस्तुत नहीं किए जाने पर उन्होंने नाराजगी जताते हुए शीघ्र प्रतिवेदन प्रस्तुत करने के निर्देश दिए।

चुनाव में अधिग्रहित वाहनों का किराया भुगतान, अंतिम तिथि 8 अप्रैल तक बढ़ी

रायपुर/नवप्रदेश। विधानसभा निर्वाचन-2023, लोकसभा निर्वाचन-2024 एवं उप विधानसभा निर्वाचन-2024 के दौरान रायपुर जिले के अंतर्गत विभिन्न विधानसभा क्षेत्रों में निर्वाचन कार्य हेतु अधिग्रहित वाहनों के किराया भुगतान के संबंध में महत्वपूर्ण सूचना जारी की गई है। विधानसभा क्षेत्र क्रमांक 45 तिल्दा, 47 धरसीवा, 48 रायपुर ग्रामीण, 49 रायपुर नगर पश्चिम, 50 रायपुर नगर उत्तर, 51 रायपुर नगर दक्षिण, 52 आरंग एवं 53 अभनपुर में निर्वाचन कार्य सम्पन्न करने हेतु अधिगृहित की गई स्कूल बसें, विश्वविद्यालय की बस तथा छोटी वाहन के स्वामियों/चालकों को किराया राशि प्राप्त करने हेतु पूर्व में 30 मार्च 2026 तक का समय निर्धारित किया गया था।

स्वास्थ्य सेवाओं को सुदृढ़ और प्रभावी बनाने की दिशा में ऐतिहासिक पहल

मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय ने 370 नई एम्बुलेंस को दिखाई हरी झंडी

रायपुर/नवप्रदेश। प्रदेश में आपातकालीन स्वास्थ्य सेवाओं को और अधिक सुदृढ़ और प्रभावी बनाने की दिशा में आज एक ऐतिहासिक पहल की गई। मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय ने 300 बेसिक लाइफ सपोर्ट एवं 70 एडवांस्ड लाइफसपोर्ट एम्बुलेंसों को हरी झंडी दिखाकर प्रदेश के सभी जिलों के लिए रवाना किया। इसके साथ ही 108 एम्बुलेंस की समस्त सेवाएं प्रदेशभर में तत्काल प्रभाव से प्रारंभ हो गई हैं, जिससे आपातकालीन परिस्थितियों में नागरिकों को त्वरित एवं गुणवत्तापूर्ण चिकित्सा सहायता सुनिश्चित होगी। इस पहल के अंतर्गत पहली बार प्रदेश में 5 नियोनेटल ‹रू एम्बुलेंसों की शुरुआत की गई है, जो नवजात शिशुओं की आपातकालीन देखभाल के क्षेत्र में एक मील का पत्थर साबित होगी। यह सेवा राज्य की नवजात सुरक्षा के प्रति प्रतिबद्धता को दर्शाती है तथा गंभीर स्थिति में नवजात शिशुओं को सुरक्षित रूप से उच्च स्तरीय उपचार केंद्रों तक पहुंचाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगी। मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय ने कार्यक्रम को संबोधित करते हुए कहा कि प्रदेश की स्वास्थ्य सेवाएं निरंतर सुदृढ़ हो रही हैं और पिछले दो वर्षों में इस क्षेत्र में व्यापक परिवर्तन देखने को मिला है। उन्होंने कहा कि प्रदेश की जनता का भरोसा सरकारी अस्पतालों में लगातार बढ़ा है, जहां उन्हें समय पर उपचार मिल रहा है। उप-स्वास्थ्य केंद्रों, प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्रों और सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्रों के निर्माण एवं उन्नयन के कारण अब लोगों को छोटे-छोटे इलाज के लिए दूर शहरों की ओर नहीं जाना पड़ रहा है। मुख्यमंत्री साय ने कहा कि हमारी सरकार का लक्ष्य है कि शहरी क्षेत्रों में 15 मिनट और ग्रामीण क्षेत्रों में 30 मिनट के भीतर एम्बुलेंस सेवा उपलब्ध कराई जाए, ताकि हर जरूरतमंद मरीज तक समय पर स्वास्थ्य सहायता पहुंच सके। उन्होंने कहा कि 108 एम्बुलेंस सेवा का यह विस्तार आम जनता के विश्वास को और सशक्त करेगा कि संकट की घड़ी में सरकार पूरी संवेदनशीलता और तत्परता के साथ उनके साथ खड़ी है।

तरबूज निर्यात के विदेशी रास्ते बंद किसानों को आर्थिक नुकसान

ईराक सहित कई देशों में प्रदेश की तरबूज की मांग, लेकिन युद्ध से निर्यात बंद, किसानों को करोड़ों का हो रहा नुकसान

रायपुर/नवप्रदेश। खाड़ी देशों में युद्ध के कारण प्रदेश से तरबूज निर्यात बंद होने से किसानों को हो रहे करोड़ो के नुकसान पर सरकार से आर्थिक मदद की मांग करते हुये प्रदेश कांग्रेस के वरिष्ठ प्रवक्ता धनंजय सिंह ठाकुर ने कहा कि प्रदेश से तरबूज इराक सहित खाड़ी देशों तक निर्यात होती थी। चालू सीजन में खाड़ी देशों में युद्ध और तनाव के कारण रास्ते बंद हो गये। जिससे प्रदेश से तरबूजों की निर्यात नहीं हो पा रही है। जिसका किसानों को भारी आर्थिक नुकसान हो रहा है। किसान तनाव में है। यहाँ स्थानीय स्तर पर ज्यादा तरबूज आने के कारण दाम गिर गये है। खपत नहीं हो रही है। इससे किसानों को 300 करोड़ से अधिक नुकसान होने की आशंका है। प्रदेश में 10 हजार एकड़ से अधिक में तरबूज की फ़सल लगी है।

प्रदेश कांग्रेस के वरिष्ठ प्रवक्ता धनंजय सिंह ठाकुर ने कहा कि सरकार को तरबूज उत्पादक किसानों की निर्यात समस्या का समाधान करना चाहिए। निर्यात बाधित होने से किसानों को आर्थिक क्षति पहुँच रही है। उससे किसान कर्ज में आ जाएंगे, अगली फसल लगाने की स्थिति में नहीं रहेंगे, आर्थिक संकट से जूझेंगे, ऐसे कठिन समय में सरकार उन्हें आर्थिक मदद भी करे। मध्यान भोजन, आंगनबाड़ी केंद्र सुपोषण अभियान में तरबूज देने की व्यवस्था करे ताकि फसल का नुकसान न हो किसानो हताश न हो।

झारखंड की पहलवान पूनम ने 9 साल के खिताबी सूखे को किया समाप्त

रायपुर/नवप्रदेश। कुश्ती जैसे खेल में जहां फिटनेस और ताकत सबसे बड़ी जरूरत होती है, वहां चोटिल कंधे के साथ मैट पर उतरना अपने आप में बड़ा जोखिम है। लेकिन झारखंड की 19 वर्षीय पहलवान पूनम ऑरन ने इस जोखिम को चुनौती में बदला और दर्द के बावजूद मुकाबले दर मुकाबले जीत हासिल करते हुए पहले खेलो इंडिया ट्राइबल गेम्स 2026 में स्वर्ण पदक अपने नाम कर लिया। फाइनल में भी पूनम बाएं कंधे पर पट्टी बांधकर उतरीं। हर मूव के साथ दर्द साफनजर आ रहा था, लेकिन उन्होंने हिम्मत नहीं हारी और अंत तक लड़ते हुए मुकाबला अपने पक्ष में किया।

पूनम ने महिलाओं की 50 किग्रा वर्ग के फाइनल में तेलंगाना की के. गीता को हराकर स्वर्ण पदक जीता। अपने करियर का पहला स्वर्ण पदक जीतने के बाद पूनम ने साई मीडिया से कहा, ÷हार कैसे मान लेती सर? जब नौ साल से हार नहीं मानी, तो अब कैसे मान लेती। मेरी यह चोट बहुत पुरानी है। छह साल पहले मेरा कंधा उतर गया था। बीच में ठीक हुआ, लेकिन फिर ट्रेनिंग के दौरान दोबारा चोट लग गई। इसके बावजूद मैंने वापसी की और अब मैंने यहां पर गोल्ड जीता है उन्होंने कहा,''अपने करियर की शुरुआत से ही मैं चोटों से जूझ रही हूँ, लेकिन मैंने कभी हार नहीं मानी। गोल्ड मेडल जीतना किसी सपने के सच होने जैसा लगता है। नौ साल तक गोल्ड न जीत पाने के दर्द के मुकाबले यह चोट कुछ भी नहीं है।' झारखंड के चतरा जिले के सुइयाबार गांव की रहने वाली पूनम के लिए यह जीत किसी सपने के सच होने जैसी है। साल 2017 में जब उन्होंने कुश्ती की शुरुआत की थी, उसी दौरान एक गंभीर चोट ने उन्हें करीब एक साल तक मैट से दूर कर दिया।

निस्तारी पानी का संकट गहरा रहा, तालाबों को भरने गंगरेल बांध के गेट खोलने ज्ञापन

रायपुर/नवप्रदेश। गर्मी बढ़ने के साथ - साथ ग्रामीण इलाकों में निस्तारी पानी का संकट गहराने लगा है । तालाब सूख चले हैं और भूगर्भीय जल स्त्रोत गिरने से ट्यूबवेलों / हेडपंपो ने पेयजल की भी समस्या खड़ी करना शुरू कर दिया है । इसके परिपेक्ष्य में महानदी मुख्य नहर पर चल रहे रेलवे क्रासिंग निर्माण कार्य को रूकवा गंगरेल का पट खोल प्राथमिकता के आधार पर तालाबों को भरने पानी देने की मांग मुख्यमंत्री विष्णु देव साय व मुख्य सचिव विकासशील को मेल से ज्ञापन भेज की गयी है । साथ ही क्षेत्रीय सांसद बृजमोहन अग्रवाल को? भी ज्ञापन की प्रति भेज संसदीय क्षेत्र के ग्रामों में निस्तारी

पानी की समस्या के मद्देनजर इस संबंध में अविलंब आवश्यक पहल का आग्रह किया गया है। रायपुर जिला जल उपभोक्ता संस्था संघ के अध्यक्ष रहे भूपेन्द्र शर्मा ने प्रेषित ज्ञापन में जानकारी दी है कि बैशाख व जेठ मास में भीषण गर्मी पड़ती है और बैशाख माह शुरू होने में महज 02 दिन बाकी है । गहराते निस्तारी पानी व भूगर्भीय जल स्त्रोत के नीचे चले जाने की वजह से बढ़ रहे पेयजल की संकट के मद्देनजर अविलंब गंगरेल का पट खुलवा तालाबों को भरवाने का आग्रह किया गया है ताकि निस्तारी पानी की समस्या दूर होने के साथ - साथ भूगर्भीय जल स्त्रोत बढ़ने से पेयजल की समस्या भी कमतर हो सके । ज्ञापन में महानदी मुख्य नहर पर चल रहे रेलवे क्रासिंग निर्माण कार्य को फिलहाल रूकवा प्राथमिकता के आधार पर निस्तारी पानी दिलवाने का आग्रह किया गया है। बंगोली सिंचाई उपसंभाग के अधीन आने वाले सिंचाई पंचायतों के अध्यक्ष रहे थानसिंह साहू , गोविंद चंद्राकर , चिंताराम वर्मा आदि ने भी तालाबों को भरने अविलंब गंगरेल से पानी देने की मांग की है ।

राज्यपाल से रेडियो संगवारी टीम ने की सौजन्य मुलाकात

रायपुर/नवप्रदेश। राज्यपाल रमेन डेका से आज लोक भवन में रेडियो संगवारी की टीम ने सौजन्य मुलाकात की। इस दौरान टीम ने रेडियो संगवारी की परिकल्पना, उद्देश्यों तथा आगामी योजनाओं के बारे में विस्तार से जानकारी दी।टीम के संस्थापक राहुल शर्मा ने बताया कि रेडियो संगवारी टीम द्वारा प्रदेश की समृद्ध लोक परंपराओं को नई पीढ़ी तक पहुँचाने के लिए विभिन्न कार्यक्रमों की रूपरेखा तैयार की जा रही है। राज्यपाल ने इस पहल की सराहना करते हुए कहा कि छत्तीसगढ़ की सांस्कृतिक विरासत अत्यंत समृद्ध है और ऐसे प्रयास इसे संरक्षित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। उन्होंने रेडियो संगवारी टीम को शुभकामनाएं देते

हुए भविष्य के लिए मार्गदर्शन भी प्रदान किया। इस अवसर पर रेडियो संगवारी टीम के डॉ. हेमंत सिरमौर, सु या सिरमौर, शिवनंदन सरोज, तिलका साहू सहित अन्य सदस्य उपस्थित रहे।

दनौट कया-कमतरा सड़क के लिए 18.72 करोड़ मंजूर, 13.4 किमी सड़क बनेगा

रायपुर/नवप्रदेश। राज्य शासन ने रायगढ़ जिले में दनौट कया-कमतरा मार्ग के उन्नयन के लिए 18 करोड़ 71 लाख 96 हजार रुपए स्वीकृत किए हैं। इस राशि से 13.4 किमी सड़क के उन्नयन के साथ ही 60 मीटर लंबा पुल भी बनाया जाएगा। उप मुख्यमंत्री तथा लोक निर्माण मंत्री अरुण साव के अनुमोदन के बाद राज्य शासन ने मंत्रालय से राशि स्वीकृति के संबंध में प्रमुख अभियंता को परिपत्र जारी कर दिया है। उप मुख्यमंत्री साव ने कार्य में प्रयुक्त की जाने वाली सामग्रियों एवं संपूर्ण कार्य की गुणवत्ता सुनिश्चित करने के कड़े निर्देश दिए हैं। कार्य की गुणवत्ता में कमी पाये जाने पर उत्तरदायित्व का निर्धारण करते हुए नियमानुसार कार्यवाही की जाएगी। लोक निर्माण विभाग ने प्रमुख अभियंता को कार्य की निविदा समय-सीमा में करने, निर्माण कार्य प्राक्कलन व कार्य संपादित करने में मितव्ययिता सुनिश्चित करने के निर्देश दिए हैं।

केआईटीजी 2026: मेजबान महिलाएं हॉकी में कांस्य के लिए भिड़ेंगीं

कप्तान किरण ने छत्तीसगढ़ को फुटबॉल फाइनल में पहुंचाया

■ मिडफील्ड की कमान से लेकर गोलकीपिंग के कमाल तक

रायपुर/नवप्रदेश। कप्तान किरण पिस्दा की शानदार दोहरी भूमिका से प्रेरित होकर छत्तीसगढ़ की महिला फुटबॉल टीम ने खेलो इंडिया ट्राइबल गेम्स के पहले संस्करण के फाइनल में जगह बना ली है, जबकि राज्य की महिला हॉकी टीम ने भी कांस्य पदक मुकाबले में पहुंचकर अपनी उम्मीदें बरकरार रखी हैं। भारतीय अन्तर्राष्ट्रीय खिलाड़ी किरण ने मंगलवार को स्वामी विवेकानंद कोटा स्टेडियम में अरुणाचल प्रदेश के खिलाफ खेले गए सेमीफाइनल में शानदार प्रदर्शन करते हुए मैच

की स्टार रहीं। उनके हरफनमौला खेल की बदौलत छत्तीसगढ़ ने निर्धारित समय के बाद 2-2 की बराबरी रहने पर पेनल्टी शूटआउट में 4-3 से रोमांचक जीत दर्ज की। टूर्नामेंट में अब तक करीब 20 गोल कर चुकीं किरण ने एक बार फिर आक्रामक भूमिका निभाते हुए 18वें मिनट में गोल कर मेजबान टीम को 2-0 की बढ़त दिलाई।

हालांकि अरुणाचल प्रदेश ने 41वें और 86वें मिनट में गोल कर स्कोर 2-2 से बराबर कर दिया और मैच को शूटआउट में पहुंचा दिया। इसके बाद किरण ने साहसिक फैसला लेते हुए नियमित गोलकीपर योगिता की जगह खुद दस्ताने पहनकर गोलपोस्ट संभालने का निर्णय लिया। उनका यह निर्णय कप्तानी की मिसाल बन गया, जब उन्होंने दो शानदार बचाव किए और खुद एक पेनल्टी भी सफलतापूर्वक गोल में बदली, जिससे टीम को फाइनल का टिकट मिला। अंतिम पेनल्टी के गोल के साथ ही मेजबान टीम ने मैदान पर जश्न मनाना शुरू कर दिया।

अपने प्रदर्शन पर किरण ने साई मीडिया से कहा, ÷मैं अपनी टीम को हर हाल में फाइनल में पहुंचाना चाहती थी। मुझे गोलकीपर के रूप में अच्छा करने का भरोसा था। मैंने पहले भी अपनी राज्य टीम के लिए यह भूमिका निभाई है। मेरी मेहनत सफल रही और हम फाइनल में हैं। यह हम सभी के लिए गर्व का क्षण है।÷ अब फाइनल में छत्तीसगढ़ का सामना झारखंड और गुजरात के बीच होने वाले दूसरे सेमीफाइनल के विजेता से होगा। उल्लेखनीय है कि ग्रुप चरण में मेजबान टीम गुजरात को 2-1 से हरा चुकी है, जिसमें किरण ने भी एक गोल किया था। वहीं, इंटरनेशनल हॉकी स्टेडियम में चल रही प्रतियोगिता में छत्तीसगढ़ की महिला हॉकी टीम 1 अप्रैल को पड़ोसी राज्य मध्य प्रदेश के खिलाफ कांस्य पदक के मुकाबले में उतरेगी। सेमीफाइनल में मेजबान टीम को ओडिशा से 1-5 से हार का सामना करना पड़ा था, लेकिन अब कप्तान कुजूर अश्विन के मार्गदर्शन में टीम पदक जीतने के लिए तैयार है।

कलेक्टर के निर्देश पर नए बोर खनन पर रोक

रायपुर/नवप्रदेश। गर्मी के मौसम में पेयजल की कमी को देखते हुए कलेक्टर डॉ. गौरव सिंह के निर्देश पर रायपुर जिले में नवीन बोर खनन पर अस्थायी रोक लगाने का आदेश जारी किया गया है। छत्तीसगढ़ पेयजल अधिनियम 1986 के तहत जिले को 1 अप्रैल 2026 से 15 जुलाई 2026 तक जलाभाव वाला क्षेत्र घोषित किया गया है। इस अवधि में बिना अनुमति कोई भी व्यक्ति या संस्था नया बोर/नलकूप नहीं खोद सकेगी, चाहे वह पेयजल के लिए हो या किसी अन्य उपयोग के लिए।

इस नियम के अपवाद स्वरूप कुछ शासकीय विभाग जैसे लोक स्वास्थ्य यांत्रिकी को पूरे जिले में तथा नगर निगम और नगर पंचायतों को अपने क्षेत्र में केवल पेयजल के लिए बोर खनन हेतु अनुमति लेने की आवश्यकता नहीं होगी।

भारतीय नौसेना प्रोजेक्ट 17-A के तहत नवीनतम उन्नत स्टील्थ फ्रिगेट आईएनएस तारागिरी करेगी शामिल

आईएनएस तारागिरी के कमीशन होने से भारत की समुद्री क्षमताओं को एक बड़ा बढ़ावा मिलने वाला है। यह समारोह 3 अप्रैल, 2026 को विशाखापत्तनम में आयोजित किया जाएगा। भारत के रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह इस समारोह की अध्यक्षता करेंगे। प्रोजेक्ट 17 एआई कार्यक्रम के तहत चौथे युद्धपोत के रूप में, तारागिरी न केवल एक और नया जुड़ाव है, बल्कि यह स्टील्थ, टिकने की क्षमता और युद्धक क्षमता में एक पीढ़ीगत छलांग का भी प्रतीक है। 6,670 टन वज़न वाला यह युद्धपोत भारतीय नौसेना के लिए अब तक बनाए गए सबसे उन्नत स्वदेशी फ्रिगेट में से एक है। मुंबई में मझगांव डॉक शिपबिल्डर्स लिमिटेड द्वारा निर्मित यह जहाज़ भारत के घरेलू रक्षा निर्माण इकोसिस्टम की परिपक्वता को दर्शाता है-एक ऐसा इकोसिस्टम जिसमें अब 200 से अधिक स्वस्थ्य शामिल हैं।

गुप्त संचालन, गति और बहु-क्षेत्रीय युद्ध के लिए निर्मित

तारागिरी की विशिष्टता इसकी गुप्त संचालन क्षमता और युद्ध में एकीकरण पर विशेष बल है। इस फ्रिगेट का रडार क्रॉस-सेक्शन काफी कम है, जिससे यह विवादित जलक्षेत्रों में भी बिना पता चले संचालन कर सकता है - जो आधुनिक नौसैनिक युद्ध में एक महत्वपूर्ण लाभ है। इसका सुव्यवस्थित डिज़ाइन केवल सौंदर्यपूर्ण नहीं है; इसे रडार, ध्वनिक और अवरक्त स्पेक्ट्रम में पता लगने की संभावना को न्यूनतम करने के लिए इंजीनियर किया गया है। संयुक्त डीजल या गैस प्रणोदन प्रणाली से संचालित यह जहाज उच्च गति से हमला करने की क्षमता और लंबे समय तक तैनाती की क्षमता प्रदान करता है - जिससे हिंद महासागर के विशाल क्षेत्र में निरंतर संचालन संभव हो पाता है।

इसके हथियार प्रणाली में शामिल है:-
लंबी दूरी तक मार करने वाली सुपरसोनिक सतह-से-सतह मिसाइलें
त्वरित हवाई सुरक्षा के लिए मध्यम दूरी की सतह-से-हवा मिसाइलें
उन्नत पनडुब्बी-रोधी युद्ध प्रणालियां, जिनमें सोनार और हेलीकॉप्टर एकीकरण शामिल हैं

न्यूज गैलरी

आर्मी को पहली 2000 'प्रहार' मशीन गन मिल गई हैं...!

नई दिल्ली। अडानी डिफेंस एंड एयरोस्पेस ने इंडियन आर्मी की बॉर्डर फायरपावर बढ़ाने के लिए एक बहुत ही ज़रूरी कदम उठाया है। 28 मार्च को, मध्य प्रदेश के ग्वालियर में हुए एक खास इवेंट में, 2,000 'प्रहार' लाइट मशीन गन का पहला बैच ऑफिशियली इंडियन आर्मी को सौंप दिया गया। ग्वालियर के 'स्मॉल आर्म्स कॉम्प्लेक्स' में बने इस 7.62एमएम कैलिबर के हथियार की कुछ खास बातें ये हैं। यह मशीन गन हर मिनट 700 राउंड फायर कर सकती है।

बॉर्डर पर हर मिनट 700 गोलियों की बारिश होगी...!

इसकी फायर पावर 1,000 मीटर (1 किलोमीटर) की दूरी तक सटीक निशाना लगाने की है। सिर्फ 8 किलोग्राम वजन वाली इस मशीन गन की लंबाई 1,100 एमएम है, जिससे इसे ले जाना बहुत आसान है। इन मॉडर्न हथियारों का इस्तेमाल मुख्य रूप से भारत-चीन और भारत-पाकिस्तान बॉर्डर पर किया जाएगा। माना जा रहा है कि यह मशीन गन दूर-दराज के पहाड़ी इलाकों में पेट्रोलिंग करने वाले सैनिकों के लिए ज्यादा असरदार होगी। इस इवेंट में रक्षा मंत्रालय के डीजी ए. अंबरसु और अडानी डिफेंस एंड एयरोस्पेस के सीईओ आशीष राजवंशी शामिल हुए। इसे डिफेंस सेक्टर में 'आत्मनिर्भर' बनने की दिशा में भारत का उठाया गया एक अहम कदम माना जा रहा है। प्राइवेट सेक्टर की भागीदारी से, अब देश में ही भारतीय सेना के पास वर्ल्ड-क्लास हथियार उपलब्ध हैं।

एमएसई ने इक्विटी सेगमेंट के लिए मार्केट मेकर्स की नियुक्ति प्रक्रिया पूरी की

मुंबई/नवप्रदेश। एमएसई ने अपने इक्विटी सेगमेंट के लिए मार्केट मेकर्स नियुक्त करने की प्रक्रिया सफलतापूर्वक पूरी कर ली है। इस कदम से बाजार में लेनदेन की गहराई बढ़ने, कीमतों के सही निर्धारण में मदद मिलने और ट्रेडिंग के अनुभव को और बेहतर बनाने की उम्मीद है। एमएसई 1 अप्रैल 2026 से बाजार में लिक्विडिटी बढ़ाने के उपाय शुरू करेगा। इसका उद्देश्य बाजार में ज्यादा से ज्यादा लोगों को जोड़ना और ट्रेडिंग के लिए एक सक्रिय माहौल तैयार करना है। ये कदम एमएसई की उस प्रतिबद्धता को दर्शाते हैं, जिसके तहत वह सभी जुड़े हुए पक्षों के लिए एक पारदर्शी, कुशल और प्रतिस्पर्धी बाजार उपलब्ध कराने के लिए लगातार काम कर रहा है।

एयरटेल ने नेक्स्ट्रा में एक बिलियन अमेरिकी डॉलर के निवेश की घोषणा की

नई दिल्ली। भारती एयरटेल (एनएसईः भारतीएयरटेल) (एयरटेल) ने घोषणा की है कि अल्फा वेव ग्लोबल, कार्लाइल (नैस्डैकः सीजी) और एंकरेज कैपिटल अपने सहयोगी संस्थानों के माध्यम से नेक्स्ट्रा डेटा लिमिटेड (÷नेक्स्ट्रा÷) में एक बिलियन अमेरिकी डॉलर का निवेश करेंगे। नेक्स्ट्रा, एयरटेल की सहायक कंपनी है जो डेटा सेंटर के कारोबार में काम करती है। इस निवेश का उद्देश्य पूरे भारत में नेक्स्ट्रा के नेटवर्क का विस्तार करना और इसकी वृद्धि को तेज करना है। इस निवेश दौर में एयरटेल भी भागीदारी करेगी। इस समझौते के तहत अल्फा वेव ग्लोबल 435 मिलियन अमेरिकी डॉलर, कार्लाइल 240 मिलियन अमेरिकी डॉलर और एंकरेज कैपिटल 35 मिलियन अमेरिकी डॉलर का निवेश अपने सहयोगी संस्थानों के माध्यम से करेंगे। शेष रकम का निवेश एयरटेल द्वारा किया जाएगा। निवेशकों की अंतिम हिस्सेदारी डील पूरी होने के बाद होने वाले अंतिम समायोजनों पर निर्भर करेगी। नेक्स्ट्रा में एयरटेल का नियंत्रणकारी हिस्सा बना रहेगा।

वामपंथी उग्रवादियों को जानते हैं राहुल गांधी कांग्रेसी नेताओं का नक्सलियों से संबंधः रिजिजू

■ क्या कांग्रेस को अपने नेतृत्व से सवाल करना चाहिए?

नई दिल्ली। देश में नक्सलवाद के मुद्दे पर सियासत तेज हो गई है। केंद्रीय मंत्री किरेन रिजिजू ने कांग्रेस और उसके वरिष्ठ नेताओं पर गंभीर आरोप लगाए हैं। उन्होंने दावा किया कि कांग्रेस के कुछ नेताओं के वामपंथी उग्रवादियों और माओवादियों से संबंध रहे हैं। उनके इस बयान से राजनीतिक माहौल गरमा गया है और आरोप-प्रत्यारोप का दौर तेज हो गया है। किरेन रिजिजू ने कहा कि राहुल गांधी वामपंथी उग्रवादियों को जानते हैं और कांग्रेस के कुछ नेताओं ने ऐसे समूहों से संपर्क भी बनाए रखा था। उन्होंने यह भी कहा कि यह विडंबना है कि एक तरफ कांग्रेस सार्वजनिक रूप से उग्रवाद के खिलाफबात करती है, वहीं दूसरी तरफ उसके कुछ नेताओं पर ऐसे आरोप लग रहे हैं।

क्या राहुल गांधी का वामपंथी उग्रवादियों से संबंध है?

रिजिजू ने आरोप लगाया कि सोनिया गांधी की अगुवाई वाली राष्ट्रीय सलाहकार परिषद के समय कुछ लोग वामपंथी उग्रवादी विचारधारा से जुड़े थे। उन्होंने कहा कि राहुल गांधी इन लोगों को जानते हैं। हालांकि उन्होंने कोई ठोस सबूत सार्वजनिक नहीं किया, लेकिन उनके बयान ने राजनीतिक बहस को तेज कर दिया है। केंद्रीय मंत्री ने दावा किया कि कांग्रेस के कुछ नेताओं ने माओवादियों से मुलाकात भी की थी और उनसे संपर्क बनाए रखा था। उन्होंने इसे गंभीर मामला बताते हुए कहा कि यह देश की सुरक्षा से जुड़ा मुद्दा है। उनके अनुसार, यह स्थिति चिंताजनक है और इसकी जांच होनी चाहिए। रिजिजू ने कहा कि कांग्रेस के कार्यकर्ताओं को अपने नेतृत्व से सवाल करना चाहिए। उन्होंने कहा कि जब कई कांग्रेस नेताओं और कार्यकर्ताओं की नक्सलियों द्वारा हत्या की गई, तब पार्टी नेतृत्व की क्या भूमिका रही। उन्होंने कांग्रेस पर नकारात्मक राजनीति करने का आरोप भी लगाया और कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में देश सुरक्षित और स्थिर है।

क्या नक्सलवाद अब खत्म होने की कगार पर है?

इससे पहले केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने लोकसभा में कहा था कि देश नक्सलवाद से लगभग मुक्त होने की स्थिति में पहुंच चुका है। उन्होंने बताया कि छत्तीसगढ़ के बस्तर जैसे इलाके, जो पहले नक्सलवाद के गढ़ माने जाते थे, अब विकास की राह पर आगे बढ़ रहे हैं। सरकार ने 31 मार्च तक नक्सलवाद को खत्म करने का लक्ष्य भी रखा है।

कांग्रेस के नेता खुद नक्सलवादी बन गए

अमित शाह ने भारत में नक्सलवाद के लिए कांग्रेस और वामपंथी विचारधारा को जिम्मेदार ठहराया। अमित शाह ने कहा कि साल 1970 से लेकर 2004 तक 4 वर्ष को छोड़कर पूरे समय कांग्रेस का शासन रहा। इसी दौरान देश में नक्सलवाद की विचारधारा पनपी और फैली। अमित शाह ने कहा कि सत्ता के समर्थन के बिना नक्सलवाद का पनपना संभव ही नहीं था। अमित शाह ने कहा कि नक्सलियों के साथ रहते-रहते कांग्रेस के नेता खुद नक्सलवादी बन गए। इसका जवाब कांग्रेस को चुनाव में देना पड़ेगा।

बिहार भगदड़ः नालंदा के शीतला मंदिर में भगदड़ 9 लोगों की मौत

नालंदा। एक चौंकाने वाली घटना सामने आई है जिसमें मंगलवार सुबह बिहार के नालंदा में शीतला मंदिर में भगदड़ मचने से 9 भक्तों की मौत हो गई। इस घटना में कई लोग घायल हुए हैं और मरने वालों की संख्या बढ़ने की उम्मीद है। यह घटना दीपनगर पुलिस स्टेशन की सीमा के तहत शीतला मंदिर में हुई। मिली जानकारी के अनुसार, मंदिर में भारी भीड़ और प्लानिंग की कमी के कारण यह बड़ा हादसा हुआ। घटना के तुरंत बाद राहत और बचाव का काम शुरू किया गया। अब तक आठ भक्तों की मौत हो चुकी है। मघड़ा के शीतला मंदिर में हर मंगलवार को हजारों भक्त दर्शन के लिए आते हैं। इस मंगलवार को सुरक्षा व्यवस्था पूरी तरह से ध्वस्त दिखी। दर्शन के लिए भक्तों की भारी भीड़ थी और इसी बीच किसी वजह से भगदड़ मच गई। इस घटना का सही कारण अभी साफ नहीं है। घटना की जानकारी मिलते ही एम्बुलेंस और एसडीएम मौके पर पहुंच गए। घटना में 10 से 12 श्रद्धालु घायल हो गए, जिन्हें इलाज के लिए जिला अस्पताल में भर्ती कराया गया है और उनका इलाज चल रहा है। मंदिर परिसर को पूरी तरह खाली करा लिया गया है। मौके पर बड़ी संख्या में पुलिस तैनात कर दी गई है।

लंबे समय तक काम लिया तो पद स्थायी माना जाएगा, कर्मचारियों के हक में 'सुप्रीम' फैसला

नई दिल्ली। उच्चतम न्यायालय ने कर्मचारियों के हक में बड़ा फैसला सुनाया है। कोर्ट ने स्पष्ट किया है कि यदि किसी कर्मचारी से लंबे समय तक काम लिया जाता है, तो वह कार्य स्थायी माना जाएगा। शीर्ष अदालत के अनुसार, इतनी लंबी सेवा ही इस बात का प्रमाण है कि उस पद पर नियमित नियुक्ति की जरूरत थी। न्यायमूर्ति मनोज मिश्रा और न्यायमूर्ति मनमोहन की पीठ ने इलाहाबाद उच्च न्यायालय का फैसला रद्द कर दिया है। कोर्ट ने प्रभावित कर्मचारियों को वापस नौकरी पर रखने का आदेश दिया है। यह मामला कानपुर नगर निगम के स्विचमैन कर्मचारियों से जुड़ा है। ये कर्मचारी वर्ष 1993 से 2006 तक लगातार काम कर रहे थे। अदालत ने कहा कि जब कोई 12-13 साल तक निरंतर कार्य करता है, तो उसे अस्थायी कहना गलत है। उसे महज वैकल्पिक कर्मचारी मानकर अचानक नौकरी से नहीं निकाला जा सकता। पीठ के अनुसार, इतनी लंबी

कार्यावधि सिद्ध करती है कि वहां काम स्थायी था और नियमित पद मौजूद था। इस कानूनी लड़ाई में सबूतों को लेकर अहम मोड़ आया। नगर निगम ने कर्मचारियों की उपस्थिति का रिकॉर्ड पेश नहीं किया। सुप्रीम कोर्ट ने श्रम न्यायालय के निर्णय को सही ठहराया। कोर्ट ने कहा कि यदि संस्थान आदेश के बावजूद दस्तावेज नहीं दिखाता, तो कर्मचारी का दावा सच माना जाएगा। कानून में इसे प्रतिकूल अनुमान कहते हैं। इसका अर्थ है कि रिकॉर्ड न दिखाना संस्थान की अपनी गलती मानी जाएगी। सुप्रीम कोर्ट में दायर एक जनहित याचिका में कहा गया है कि गैर-योग्य कानूनी पेशेवर जमीन संबंधी विवादों का निपटारा कर रहे हैं। ऐसे में इस तरह के मामलों से निपटने के लिए राजस्व न्यायिक सेवा स्थापित की जाए। याचिका में यह भी मांग की गई कि ऐसे मामलों का निर्णय करने वाले सरकारी कर्मचारियों के लिए न्यूनतम कानूनी योग्यता और प्रशिक्षण मॉड्यूल निर्धारित करने के निर्देश दिए जाएं।

बहाली का आदेश जारी वेतन पर दोबारा विचार

सुप्रीम कोर्ट ने कर्मचारियों की बहाली का आदेश बरकरार रखा है। हालांकि, उनके पिछले बकाया वेतन पर एक तकनीकी पेंच है। अदालत का मानना है कि यह देखना जरूरी है कि नौकरी से हटने के बाद कर्मचारी कहीं और काम कर रहे थे या नहीं। इसी बिंदु पर निर्णय के लिए मामला पुनः उच्च न्यायालय भेज दिया गया है। इस फैसले से देशभर के संविदा कर्मचारियों को बड़ी राहत मिली है।

केरल में भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष नितिन नबीन ने जारी किया घोषणापत्र

तिरूवनंतपुरम। केरल में चुनाव के लिए सियासी रणभेरी बज चुकी है। आरोप-प्रत्यारोप, जनसभाओ और रोड शो से लेकर वादों तक का दौर जारी है। सभी सियासी दल चुनाव जीतने के लिए भविष्य का विजन जनता के सामने रख रहे हैं। इसी क्रम में आज भाजपा ने भी केरल के लिए भी अपना रोडमैप जारी कर दिया।

इस मौके पर तिरुवनंतपुरम में राष्ट्रीय अध्यक्ष नितिन नबीन भी मौजूद रहे। उनके साथ राज्य भाजपा अध्यक्ष राजीव चंद्रशेखर भी मौजूद थे। केरल के लिए घोषणा पत्र जारी करते हुए उन्होंने विपक्षी एलडीएफ और यूडीएफ पर भी निशाना साधा। उन्होंने कहा कि आज जब हम आपको घोषणापत्र देने जा रहे हैं,उसी समय हमें यह भी जानना चाहिए कि केरल की अपार प्राकृतिक और मानवीय क्षमता के बावजूद, एलडीएफ यूडीएफ के 17 वर्षों के कुशासन

के दौरान औद्योगिक विकास नगण्य रहा है, जिसके परिणामस्वरूप आर्थिक गतिरोध और राजकोषीय संकट उत्पन्न हुआ है। उन्होंने कहा कि एलडीएफ और यूडीएफ केरल की जनता के साथ मैच फिक्सिंग का खेल खेल रहे हैं। उनके 17 साल के शासन में जनता ने इसकी भारी कीमत चुकाई है। उन्होंने आपस में सत्ता हथियाने और केवल अपने परिवारों की मदद करने के लिए खेल में हेराफेरी की है और इसकी कीमत केरल को चुकानी पड़ी है। यह कोई रहस्य नहीं है कि चाहे पड़ोसी राज्य तमिलनाडु हो या अन्य राज्य, कम्युनिस्ट और कांग्रेस हमेशा एक ही दल में रहे हैं। यूपीए सरकार में भी वे गठबंधन सहयोगी थे, लेकिन उन्होंने केरल के बारे में कभी नहीं सोचा। नितिन नवीन ने कहा कि हम 'नागरिक सर्वोपरि' की अवधारणा को साकार करेंगे। केरल के सभी 36 लाख लोगों को समान अधिकार, समान न्याय और विकास का समान अधिकार प्राप्त होगा। उन्होंने कहा कि हम आयुष्मान भारत योजना का विस्तार करेंगे ताकि हर मलयाली को चिकित्सा आपात स्थिति में एक महत्वपूर्ण सुरक्षा कवच मिल सके।

रुपए में 14 साल में सबसे बड़ी गिरावट, फिस्कल ईयर 2025-26 में डॉलर के मुकाबले कीमत 10% कम हुई

■ डॉलर के मुकाबले रुपये की कीमत 9.88 परसेंट कम

मुंबई। फाइनेंशियल ईयर 2025-26 में डॉलर के मुकाबले भारतीय रुपये की वैल्यू 9.88 परसेंट गिर गई है। यह पिछले 14 सालों में डॉलर के मुकाबले सबसे बड़ी गिरावट है। इससे पहले, फाइनेंशियल ईयर 2011-22 में रुपया 12.4 परसेंट गिरा था, जब करंट अकाउंट डेफिसिट बढ़कर 4.2 परसेंट हो गया था। हालांकि, फाइनेंशियल ईयर 2025-26 में गिरावट के पीछे मुख्य कारण विदेशी फंड की निकासी, कच्चे तेल की बढ़ती कीमतें और दुनिया भर में डॉलर का मजबूत होना था।

ग्लोबल फाइनेंशियल मार्केट में उतार-चढ़ाव और लिक्विडिटी

की कमी ने 2025-26 में रुपये पर और दबाव डाला। मार्केट एक्सपर्ट्स के मुताबिक, 1 अप्रैल से डॉलर के मुकाबले दूसरी एशियाई करेंसी में भी तेज गिरावट आई है। मौजूदा फिस्कल ईयर में यूएस डॉलर के मुकाबले जापानी येन 6 परसेंट, फिलीपीन पेसो 5.74 परसेंट और साउथ कोरियन वॉन 2.88 परसेंट कमजोर हुआ है। साउथ कोरियन बैंक शिनहान बैंक में इंडिया हेड ऑफ ट्रेजरी सुनल सोढानी ने कहा कि बाहरी झटकों और कैपिटल आउटफ्लो की वजह से 2025-26 में रुपया कमजोर हुआ।

यूएस टैरिफऔर वेस्ट एशियन टेंशन का दबाव

सुनल सोढानी के मुताबिक, फिस्कल ईयर 2025-26 पर असर डालने वाले फैक्टर्स 2011-12 से अलग हैं। 2025-26 में करेंसी डेप्रिसिएशन तब शुरू हुआ जब यूएस ने इंडिया पर टैरिफ लगाए, जिससे डॉलर की डिमांड में तेज बढ़ोतरी हुई। फिर, इज़राइल और यूएस के ईरान पर हमले के बाद वेस्ट एशिया में तनाव बढ़ गया। इस स्थिति की वजह से कच्चे तेल की कीमतों में तेज़ी से बढ़ोतरी हुई और रुपये पर दबाव बढ़ गया।

मेरी बातें खराब लगेंगी, अश्विन के प्रीडिक्शन पर शमी का जवाब

नई दिल्ली। 28 मार्च से आईपीएल का 19वां सीजन शुरू हो चुका है। इसके साथ ही प्रीडिक्शन का दौर भी शुरू हो गया। इसी क्रम में टीम इंडिया के पूर्व गेंदबाज रविचंद्रन अश्विन ने ऋषभ पंत की कप्तानी वाली टीम लखनऊ सुपर जायंट्स को लेकर भविष्यवाणी की थी। यूट्यूब पर बोलते हुए अश्विन ने कहा था कि लखनऊ सुपर जायंट्स की टीम टॉप 4 में फिनिश नहीं कर पाएगी। अब उनकी इस भविष्यवाणी पर पहली बार इस टीम से खेलने वाले मोहम्मद शमी ने प्रतिक्रिया दी। शमी ने एक निजी पॉडकास्ट में अश्विन की भविष्यवाणी पर जवाब दिया। मोहम्मद शमी से जब उनकी टीम लखनऊ सुपर जायंट्स को लेकर की गई अश्विन की भविष्यवाणी पर सवाल पूछा तो उन्होंने कहा कि ऐसी बात मत पूछा करो मैं बोलूंगा तो बातें बुरी लगेंगी। लोगों को खराब लग जाती हैं। किसी के रेट करने से या फिर किसी के नंबर दे देने से वो महान नहीं बन जाता। आईपीएल 2026 की बात करें तो लखनऊ सुपर जायंट्स की टीम पिछले सीजन की तुलना में ज्यादा बैलेंस नजर आ रही है। आईपीएल 2025 में लखनऊ की टीम 7वें नंबर पर रही थी। 14 मैच में लखनऊ ने 6 मुकाबला जीता था जबकि 8 में उसे हार का सामना करना पड़ा था। लेकिन इस बार टीम मजबूत नजर आ रही है। बल्लेबाजी पहले से ही इस टीम की ताकत थी, लेकिन इस बार गेंदबाजी में भी दमखम दिख रहा है।

साउथ सिनेमा की 'धुरंधर 2' ने उड़ाई धूल, केजीएफ-2 का रिकॉर्ड टूटा

मुंबई। आदित्य धर के डायरेक्शन में बनी 'धुरंधर 2' बॉक्स ऑफिस पर अच्छा कर रही है। पहले दिन से ही इस फिल्म ने बॉक्स ऑफिस पर रिकॉर्ड तोड़ना शुरू कर दिया था। उसके बाद 'धुरंधर 2' ने कई फिल्मों के रिकॉर्ड तोड़े। अब 'धुरंधर 2' ने साउथ सिनेमा को धूल चटा दी है। 'धुरंधर 2' ने '**केजीएफ-2**' का भी रिकॉर्ड तोड़ दिया है। 'धुरंधर 2' ने अपने दूसरे सोमवार को 25.30 करोड़ रुपये की ज़बरदस्त कमाई की है। पहले दिन ही फिल्म ने पेड प्रीव्यू मिलाकर कुल 145 करोड़ रुपये का बिज़नेस किया। 'धुरंधर 2' ने भारत में 12 दिनों में 872 करोड़ रुपये कमाए हैं। अनुमान है कि यह फिल्म जल्द ही 900 करोड़ रुपये के आंकड़े तक पहुंच जाएगी। 'धुरंधर 2' ने साउथ की **केजीएफ-2** का रिकॉर्ड तोड़ दिया है। 'धुरंधर 2' ने 12 दिनों में 872 करोड़ कमाए हैं। जबकि KGF 2 का लाइफटाइम कलेक्शन

860 करोड़ है। अब 'धुरंधर 2' बाहुबली 2 और पुष्पा 2 के रिकॉर्ड तोड़ने की तैयारी में है।

'धुरंधर 2' की स्टार कास्ट

'धुरंधर' में एक भारतीय जासूस की कहानी दिखाई गई थी जो पाकिस्तान जाकर वहां की आतंकवादी गतिविधियों की जानकारी चुपके से भारत को देता था। 'धुरंधर 2' उसी फिल्म का सीक्वल है। इस फिल्म में रणवीर सिंह, संजय दत्त, सारा अर्जुन, आर माधवन, राकेश बेदी, अर्जुन रामपाल मुख्य भूमिका में हैं।

न्यूज गैलरी

प्रॉपर्टी टैक्स जमा करने की डेडलाइन 30 अप्रैल तक बढ़ी

रायपुर/नवप्रदेश। प्रॉपर्टी टैक्स जमा करने वाले लोगों को बड़ी राहत मिली है। नगरीय प्रशासन-विकास विभाग ने वित्तीय वर्ष 2025-26 के लिए संपत्ति कर भुगतान की अंतिम तारीख बढ़ाकर अब 30 अप्रैल 2026 कर दी है, जो पहले 31 मार्च थी। विभाग के आदेश के अनुसार सभी नगरीय निकायों को 30 दिनों का अतिरिक्त समय दिया गया है। राजस्व वसूली का लक्ष्य पूरा न होने और अन्य प्रशासनिक कारणों के चलते यह निर्णय लिया गया है। अब लोग 30 अप्रैल तक बिना किसी अतिरिक्त शुल्क के संपत्ति कर जमा कर सकेंगे। इसके बाद भुगतान करने पर 17%सरचार्ज देना होगा। डेडलाइन से पहले टैक्स जमा करने के लिए शहर में लोगों की भारी भीड़ देखने को मिली। 30 मार्च को सुबह 10 बजे से रात 9 बजे तक 8,768 संपत्ति करदाताओं ने नगर निगम में 9 करोड़ 58 लाख 61 हजार 442 रुपए जमा किए। नगर निगम के सभी 10 जोनों के राजस्व कार्यालयों में दिनभर लोगों की भीड़ बनी रही। निगम ने साफकिया है कि बकाया नहीं चुकाने वालों पर सख्ती जारी रहेगी। ऐसे में दुकानों और व्यवसायिक परिसरों को सील किया जा रहा है। घरों में नल कनेक्शन काटने की कार्रवाई भी जारी है।यह कार्रवाई सभी जोनों में लगातार चल रही है।

86 लाख के अवैध लेन-देन का खुलासा

दुर्ग/नवप्रदेश। साइबर ठगी के लिए बैंक खातों (म्यूल अकाउंट) का उपयोग करने वाले 10 आरोपी गिरफ्तार हो गया है। भारत सरकार के गृह मंत्रालय के अधीन संचालित भारतीय साइबर अपराध समन्वय केंद्र के समन्वय पोर्टल के माध्यम से प्राप्त जानकारी के आधार पर थाना मोहन नगर क्षेत्र अंतर्गत कर्नाटक बैंक शाखा स्टेशन रोड, दुर्ग में संचालित कुल 111 बैंक खातों का विश्लेषण किया गया। जांच में पाया गया कि इन खातों का उपयोग देश के विभिन्न स्थानों से साइबर ठगी की राशि को प्राप्त करने हेतु किया जा रहा था, जिसमें कुल लगभग 86,33,247/- रुपये का अवैध लेन-देन पाया गया। प्रकरण में अपराध क्रमांक 07/2025 धारा 317(2), 317(4), 318(4), 61(2) बीएनएस के तहत अपराध पंजीबद्ध कर विवेचना में लिया गया। जांच के दौरान खाताधारकों की पहचान कर 10 आरोपियों को हिरासत में लेकर पूछताछ की गई, जिनके विरुद्ध पर्याप्त साक्ष्य पाए जाने पर दिनांक 30.03.2026 को विधिवत गिरफ्तार किया गया। आरोपियों को न्यायालय के समक्ष प्रस्तुत किया गया है। दुर्ग पुलिस ने आम नागरिकों से अपील की है कि अपने बैंक खाते, एटीएम कार्ड या अन्य वित्तीय साधन किसी अन्य व्यक्ति को उपयोग हेतु उपलब्ध न कराएं। ऐसा करना दंडनीय अपराध है। किसी भी संदिग्ध गतिविधि की सूचना तत्काल पुलिस को दें। आरोपी का नाम 1. मधु साहू, उम्र 45 वर्ष 2. ज्योति गौतम, उम्र 28 वर्ष 3. फरहद खान, उम्र 56 वर्ष 4. भूपेश गोहिल, उम्र 51 वर्ष 5. अजय कुमार उर्फ मोनू, उम्र 29 वर्ष 6. मसीर आलम, उम्र 27 वर्ष 7. नवीन भागवत, उम्र 24 वर्ष 8. भूपेंद्र कुमार टंडन, उम्र 36 वर्ष 9. संतोष बिसाई, उम्र 28 वर्ष 10. हीरा सिंह, उम्र 55 वर्ष है।

नहर में लाश मिली, शिनाख्त करने में जुटी पुलिस

कोरबा/नवप्रदेश। राताखार इलाके में अज्ञात व्यक्ति का शव नहर में तैरता हुआ मिला। जोड़ा पुल के नीचे शव देखे जाने से क्षेत्र में हड़कंप मच गया। स्थानीय लोगों ने नहर में शव को उतराता देख पुलिस को सूचना दी। मौके पर पहुंची पुलिस टीम ने स्थानीय लोगों की मदद से शव को नहर से बाहर निकाला। प्रारंभिक जांच में मृतक की शिनाख्त नहीं हो पाई है। शव की स्थिति संदिग्ध प्रतीत हो रही है, जिससे हत्या या दुर्घटना की आशंका जताई जा रही है। कोरबा सीएसपी प्रतीक चतुर्वेदी ने बताया कि शव को पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया गया है। मृतक की उम्र लगभग 45 वर्ष बताई जा रही है। मामले की गहनता से जांच के लिए आसपास के सीसीटीवी फुटेज खंगाले जा रहे हैं। जिले के सभी थाना-चौकियों और व्हाट्सएप ग्रुप पर भी शव की जानकारी साझा की गई है ताकि पहचान हो सके।

मेडिकल स्टोर में नकदी चोरी, 6 घंटे के अंदर शातिर गिरफ्तार

राजनांदगांव/नवप्रदेश। बसंतपुर पुलिस ने सृष्टि कॉलोनी स्थित मेडिकल स्टोर में हुई चोरी का 6 घंटे के भीतर खुलासा कर दिया है। पुलिस ने इस मामले में एक आदतन अपराधी और दो नाबालिगों को गिरफ्तार किया है। चोरी की गई बाइक, मोबाइल और सीसीटीवी कैमरा बरामद कर लिया गया है। जानकारी के मुताबिक डालेश कुमार श्री धनवंतरी मेडिकल स्टोर्स में काम करते हैं। उन्होंने 29 मार्च की रात चोरी की रिपोर्ट दर्ज कराई थी। डालेश ने बताया कि रात करीब 3 बजे जब उनकी नींद खुली, तो कमरे का दरवाजा खुला था और उनका मोबाइल गायब था। जांच करने पर पता चला कि मेडिकल स्टोर से सीसीटीवी कैमरा, गल्ले में रखे 10,000 रुपए कैश और बाहर खड़ी पल्सर बाइक भी चोरी हो गई थी। पुलिस ने पुलिस ने कुछ संदिग्धों को चिन्हित किया और अजय उर्फ बोचकू यादव और दो नाबालिगों को हिरासत में लेकर पूछताछ की। उन्होंने चोरी की वारदात कबूल कर ली, जिसके बाद पुलिस ने उनके पास से चोरी का सारा सामान बरामद कर लिया। मुख्य आरोपी अजय उर्फ बोचकू यादव (21) क्षेत्र का आदतन अपराधी है। पुलिस रिकॉर्ड के अनुसार, उसके खिलाफ बलात्कार (पॉक्सो एक्ट), आगजनी, मारपीट, चोरी और आर्म्स एक्ट सहित लगभग 8 गंभीर मामले पहले से दर्ज हैं।

आज दक्षिणमुखी हनुमान मंदिर में भव्य भजन का आयोजन

भाटापारा/नवप्रदश। नगर के दक्षिण मुखी हनुमान मंदिर, जेसीस कन्वेंट स्कूल, महावीर धर्मशाला प्रांगण में हनुमान जन्मोत्सव के अवसर पर आज बुधवार 1 अप्रैल को भव्य भजन संध्या का आयोजन किया गया है, जिसमें नगर के उत्कृष्ट भजन गायको हरगोपाल शर्मा, प्रकाश शर्मा, तंजीव अरोरा, कोमल शर्मा, लोकेश जोशी, गिरधर व्यास, संटी उपाध्याय, दीपक केशरवानी, गोलू टोडर, मुरारीलाल शर्मा एवं अन्य भजन गायको के द्वारा शानदार एवं सुमधुर भजनों की प्रस्तुति दी जाएगी। मंदिर प्रांगण में शानदार मंच व्यवस्था एवं पांडाल व्यवस्था की तैयारी जोर-शोर से जारी है। मंदिर के पुजारी प्रकाश शर्मा ने नागरिकों से अनुरोध किया है कि वे 2 अप्रैल को हनुमान जयंती के अवसर पर भंडारा प्रसादी का आयोजन किया जा रहा है जिसमें सभी भक्तजन भगवान की प्रसादी ग्रहण करने सादर आमंत्रित है।

आज से बिक्री का नया नियम, कांच की जगह प्लास्टिक बोतलों में मिलेगी शराब

कीमतों में राहत के संकेत, पियक्कड़ों की चांदी, 800 दुकानों में व्यवस्था

रायपुर/नवप्रदेश। छत्तीसगढ़ में आज 1 अप्रैल से शराब बिक्री के नियमों में बड़ा बदलाव लागू हो गया है। अब राज्यभर में कांच की बोतलों की जगह प्लास्टिक बोतलों में शराब उपलब्ध कराई जाएगी। आबकारी विभाग के इस फैसले का असर सीधे उपभोक्ताओं और शराब कारोबार पर पड़ेगा।

800 से ज्यादा दुकानों पर लागू नई व्यवस्था: नई व्यवस्था आज से प्रदेश की 800 से अधिक सरकारी शराब दुकानों पर लागू हो गई है। प्लास्टिक बोतलें हल्की होने के कारण इनके टूटने का खतरा नहीं रहेगा और परिवहन भी पहले की तुलना में आसान होगा। इसके साथ ही पैकेजिंग लागत घटने से शराब की कीमतों में प्रति पेटी 50 से 60 रुपए तक कमी आने की संभावना जताई जा रही है।

कंपनियों पर बोतल वापसी की जिम्मेदारी

आबकारी विभाग के विशेष सचिव देवेंद्र भारद्वाज के अनुसार, नए नियम के तहत प्लास्टिक बोतलों का उपयोग करने वाली कंपनियों को उनकी वापसी और कलेक्शन की पूरी जिम्मेदारी उठानी होगी। इसके लिए बैंक पॉलिसी और कड़े प्रावधान तय किए गए हैं।

वेस्ट मैनेजमेंट पर सख्ती

आबकारी विभाग ने सभी जिलों के कलेक्टरों को प्लास्टिक वेस्ट मैनेजमेंट 2023 का सख्ती से पालन सुनिश्चित कराने के निर्देश दिए हैं। इस्तेमाल की गई प्लास्टिक बोतलों को दोबारा शराब की पैकेजिंग में उपयोग नहीं किया जाएगा, बल्कि इन्हें रिसाइकिल कर फर्नीचर, पाइप और टाइल्स जैसे उत्पादों में बदला जाएगा।

डिपॉजिट सिस्टम लागू

प्लास्टिक कचरे के बेहतर प्रबंधन के लिए सरकार ने डिपॉजिट सिस्टम भी लागू किया है। इसके तहत उपभोक्ताओं को इस्तेमाल की गई बोतल लौटाने पर 1, 2 या 4 रुपए तक की राशि वापस मिल सकती है। दुकानों के पास विशेष डस्टबिन भी लगाए जाएंगे, ताकि प्लास्टिक कचरा इधर-उधर न फैले।

स्टॉक को लेकर शुरुआती स्थिति

वेयरहाउस इंचार्ज अनिल बंजारे के मुताबिक, अभी प्लास्टिक बोतलों का पूरा स्टॉक बाजार में नहीं पहुंचा है और 2 अप्रैल तक इसकी आपूर्ति पूरी होने की संभावना है। कुल मिलाकर, आज से लागू यह नई व्यवस्था जहां उपभोक्ताओं को कीमत में राहत दे सकती है, वहीं पर्यावरण संरक्षण के लिए सख्त नियमों के साथ संतुलन बनाने की कोशिश भी की गई है।

अवैध परिवहन के 2 मामलों में 44 हजार और उत्खनन के 4 मामलों में 80 हजार का वसूला गया जुर्माना

कवर्धा में अवैध खनन पर कार्रवाई के दावे खोखले, मुरूम-मिट्टी का खेल जारी

कवर्धा/नवप्रदेश। कबीरधाम जिले में अवैध खनिज उत्खनन और परिवहन को लेकर प्रशासन सख्ती के दावे कर रहा है, लेकिन जमीनी हकीकत इन दावों से मेल नहीं खा रही। एक ओर खनिज विभाग कार्रवाई कर अर्थदंड वसूलने की बात कह रहा है, वहीं दूसरी ओर जिले के कई क्षेत्रों में मुरूम, मिट्टी और बजरी का अवैध उत्खनन खुलेआम जारी है।

जिला खनिज अधिकारी चिरंजीव कुमार के मुताबिक वित्तीय वर्ष 2025-26 में अवैध परिवहन के 2 मामलों में 44 हजार रुपये और अवैध उत्खनन के 4 मामलों में 80 हजार रुपये का अर्थदंड वसूला गया है। इसके अलावा पंडरिया और कुकदूर क्षेत्र में 15 प्रकरण दर्ज कर कार्रवाई की जा रही है। विभाग का दावा है कि नियमित निरीक्षण और निगरानी के जरिए अवैध गतिविधियों पर नियंत्रण किया जा रहा है। वहीं कवर्धा जिले में अवैध खनन पर नियंत्रण के दावे फिलहाल अधूरे नजर आ रहे हैं। सख्ती के दावों के बीच अवैध कारोबार बेखौफ जारी है। ऐसे में जरूरत है कि कागजी कार्रवाई से आगे बढ़कर जमीनी स्तर पर ठोस और लगातार कदम उठाए जाएं, ताकि इस पर प्रभावी रोक लगाई जा सके।

निगरानी पर उठ रहे सवाल

ग्रामीणों का कहना है कि अवैध खनन की जानकारी कई बार संबंधित अधिकारियों तक पहुंचाई गई, लेकिन ठोस कार्रवाई नहीं होने से यह कारोबार फल-फूल रहा है। लोगों का आरोप है कि यदि नियमित और कड़ी कार्रवाई हो, तो इस पर रोक लगाई जा सकती है, लेकिन वर्तमान में स्थिति जस की तस बनी हुई है।

राजस्व नुकसान और पर्यावरण संकट

अवैध खनन के चलते शासन को राजस्व का नुकसान हो रहा है, वहीं पर्यावरण पर भी इसका गंभीर असर पड़ रहा है। अनियंत्रित उत्खनन से भूमि क्षरण, जलस्तर में गिरावट और ग्रामीण सड़कों की हालत खराब हो रही है।

कानूनी प्रावधानों के बावजूद ढिलाई

खनिज अधिनियम के तहत सख्त प्रावधान होने के बावजूद कार्रवाई का दायरा सीमित नजर आता है। 15 प्रकरण दर्ज होना यह संकेत देता है कि अवैध गतिविधियां बड़े स्तर पर जारी हैं, लेकिन कार्रवाई उसी अनुपात में नहीं हो रही, जिससे विभाग की कार्यप्रणाली पर सवाल उठ रहे हैं।

जमीनी हकीकत अलग, कार्रवाई सीमित

स्थानीय स्तर पर स्थिति इसके उलट नजर आती है। पंडरिया, कुकदूर और आसपास के ग्रामीण इलाकों में मुरूम और मिट्टी का अवैध उत्खनन लगातार जारी है। दिन-रात ट्रैक्टर और डंपरों के जरिए खनिजों का परिवहन हो रहा है, लेकिन कार्रवाई गिनती की ही दिख रही है। कई स्थानों पर बिना अनुमति खदान संचालित होने की शिकायतें भी सामने आई हैं।

सूखा नशा व सिंथेटिक ड्रग्स के नेटवर्क का भंडाफोड़, 6 गिरफ्तार

रायपुर/नवप्रदेश। रायपुर कमिश्नरेट पुलिस ने सूखा नशा और सिंथेटिक ड्रग्स के खिलाफ बड़ी कार्रवाई करते हुए अंतर्राज्यीय नेटवर्क का पर्दाफश किया है। इस संयुक्त अभियान में पुलिस ने 6 आरोपियों को गिरफ्तार कर करीब 10 लाख रुपये मूल्य का मादक पदार्थ और अन्य सामान जब्त किया है।

पुलिस उपायुक्त (क्राइम एवं साइबर) स्मृतिक राजनाला और पुलिस उपायुक्त (सेंट्रल जोन) उमेश प्रसाद गुप्ता के संयुक्त मॉनिटरिंग में एंटी क्राइम एंड साइबर यूनिट , एएनटीएफ और थाना तेलीबांधा पुलिस ने यह कार्रवाई की।

'डेड ड्रॉप सिस्टम' से हो रही थी ड्रग्स सप्लाई: जांच में खुलासा हुआ कि आरोपी "Dead Drop System" के जरिए ड्रग्स की सप्लाई कर रहे थे। इसमें सुनसान जगहों पर नशे का सामान छिपाकर उसकी लोकेशन और वीडियो ग्राहकों को भेजी जाती थी। इस जटिल नेटवर्क को तोड़ने में पुलिस को अहम सफ्लता मिली है।

दिल्ली से संचालित हो रहा था सिंडिकेट: इस गिरोह का मास्टरमाइंड महेश खड़का और कुसुम हिन्दुजा हैं, जो दिल्ली में रहकर एमडीएमए ड्रग्स और पार्टी पिल्स का नेटवर्क चला रहे थे। दोनों पहले भी वर्ष 2024 में ड्रग्स मामले में जेल जा चुके हैं। पुलिस ने दोनों को दिल्ली के पंचशील विहार क्षेत्र से हिरासत में लेकर रायपुर लाकर गिरफ्तार किया।

रैपिडो राइडर्स और कोरियर का इस्तेमाल: गिरोह ड्रग्स सप्लाई के लिए कोरियर सेवा और रैपिडो बाइक राइडर्स का इस्तेमाल कर रहा था। दिल्ली से ड्रग्स पार्सल के जरिए रायपुर भेजी जाती थी, जहां स्थानीय आरोपी इसे रिसीव कर राइडर्स के माध्यम से ग्राहकों तक पहुंचाते थे।

ऐसे हुई गिरफ्तारी: 29 मार्च 2026 को सूचना के आधार पर पुलिस टीम ने तेलीबांधा क्षेत्र के काशीराम नगर में कार्रवाई करते हुए तीन रैपिडो राइडर्स–सौरभ डोंगरे, शुभम राठौर और सौरभ यादव–को एमडीएमए ड्रग्स के साथ पकड़ा। पूछताछ में मिली जानकारी के आधार पर कुणाल मंगतानी को भी गिरफ्तार किया गया। इसके बाद जांच आगे बढ़ाते हुए मास्टरमाइंड तक पहुंचकर उन्हें भी दबोच लिया गया।

शराब तस्कर को कोर्ट में सरेंडर करने से पहले पुलिस ने पकड़ा

जुआ खिलाने का सिंडिकेट भी चलाता था

रायपुर/नवप्रदेश। रायपुर के गंज इलाके में शराब और जुआ खिलाने का सिंडिकेट चलाने वाले आरोपी दीपक मुदलियार को पुलिस ने गिरफ्तार किया गया है। साथ ही आरोपी को कोर्ट के निर्देश पर जेल भेज दिया गया है।

क्राइम ब्रांच और गंज थाना पुलिस की संयुक्त कार्रवाई में दीपक को उस समय गिरफ्तार किया गया, जब वह गिरफ्तारी से बचने के लिए कोर्ट में आत्मसमर्पण करने की कोशिश कर रहा था। पुलिस को गुप्त सूचना मिली थी कि दीपक मुदलियार कानूनी कार्रवाई से बचने के लिए गुपचुप तरीके से आत्मसमर्पण की योजना बना रहा है। एसीपी कोतवाली के नेतृत्व में पुलिस टीम ने तत्काल रणनीति बदलते हुए कोर्ट परिसर के आसपास सादे कपड़ों में जाल बिछाया। जैसे ही आरोपी वहां पहुंचा, पुलिस ने घेराबंदी कर उसे धर दबोचा। इस त्वरित कार्रवाई से आरोपी के कोर्ट के जरिए बच निकलने के सभी रास्ते बंद हो गए।

कैबिनेट मंत्री गुरू खुशवंत साहेब ने किए महाकाल के दर्शन

उज्जैन। छत्तीसगढ़ शासन के कैबिनेट मंत्री गुरू खुशवंत साहेब ने उज्जैन पहुंचकर महाकालेश्वर मंदिर में भगवान श्रीमहाकालेश्वर के दर्शन किए। मंदिर पहुंचने पर श्री महाकालेश्वर मंदिर प्रबंध समिति द्वारा मंत्री गुरु खुशवंत साहेब का स्वागत एवं सम्मान किया गया। गुरु खुशवंत ने विधि-विधान से पूजन-अर्चन कर प्रदेश एवं देश की सुख-समृद्धि की कामना की।

विदा होकर सीधे परीक्षा देने कॉलेज पहुंची दुल्हन

तखतपुर/नवप्रदेश। छत्तीसगढ़ के तखतपुर के सरगांव क्षेत्र में एक अनोखा मामला सामने आया, जहाँ एक दुल्हन ने शादी के बाद विदा होकर ससुराल की जगह सीधे कॉलेज के परीक्षा हॉल पहुंचकर अपना शैक्षणिक दायित्व निभाया। यह घटना जिम्मेदारी, शिक्षा और संकल्प की प्रेरक मिसाल बनी हुई है।

सरगांव क्षेत्र के लोहदा गांव में शुक्रवार रात मानिकपुरी परिवार में बारात घठोलीपारा (कुकुसदा) से आई। शादी की रस्में देर रात तक चलती रहीं और शनिवार सुबह 7 बजे तक वैवाहिक कार्यक्रम पूरा नहीं हो पाया था। इसी बीच दुल्हन की बीए तृतीय वर्ष राजनीति विज्ञान की परीक्षा भी सुबह 7 बजे निर्धारित थी।

सीएसवीटीयू का बड़ा फैसला: पेड जर्नल्स पर लगाई रोक, अन्य प्लेटफॉर्म पर प्रकाशित शोध को मान्यता नहीं दी जाएगी

शोध की गुणवत्ता सुधारने सख्त नियम लागू, अब केवल अनपेड जर्नल्स मान्य

भिलाई/नवप्रदेश। छत्तीसगढ़ स्वामी विवेकानंद तकनीकी विश्वविद्यालय ने शोध कार्य की गुणवत्ता सुधारने के लिए बड़ा फैसला लागू कर दिया है। विश्वविद्यालय ने पेड (शुल्क लेकर प्रकाशित करने वाले) जर्नल्स में प्रकाशित रिसर्च पेपरों को मान्यता देने पर रोक लगा दी है। अब केवल मानक वाले अनपेड (निशुल्क) जर्नल्स में प्रकाशित शोध पत्र ही मान्य होंगे।

विश्वविद्यालय प्रशासन के अनुसार, पीएचडी उपाधि, फैकल्टी प्रमोशन और अन्य अकादमिक मूल्यांकन के लिए अब केवल उन्हीं जर्नल्स में प्रकाशित शोध पत्र स्वीकार किए जाएंगे, जिन्हें विश्वविद्यालय की मानक सूची में शामिल किया गया है। अन्य प्लेटफॉर्म पर प्रकाशित शोध को मान्यता नहीं दी जाएगी।

शोधार्थियों के लिए अनिवार्य शपथ पत्र: नए नियमों के तहत सभी शोधार्थियों को यह शपथ पत्र देना होगा कि उनका रिसर्च पेपर केवल मान्यता प्राप्त अनपेड जर्नल में ही प्रकाशित हुआ है। इसी आधार पर उनके शोध कार्य को स्वीकृति मिलेगी।

पेड जर्नल्स पर सख्ती क्यों?: अब तक कई मामलों में पैसे देकर निम्नस्तरीय जर्नल्स में शोध पत्र प्रकाशित कराए जा रहे थे। इन जर्नल्स में न तो सही तरीके से समीक्षा (रिव्यू) होती थी और न ही शोध की गुणवत्ता पर ध्यान दिया जाता था। इससे कमजोर और त्रुटिपूर्ण शोध भी आसानी से प्रकाशित हो जाते थे। विश्वविद्यालय ने इसी प्रवृत्ति पर रोक लगाने के लिए यह सख्त कदम उठाया है।

एमटेक अधूरा छोड़ने वालों को राहत

विश्वविद्यालय ने एमटेक बीच में छोड़ चुके छात्रों को भी अंतिम अवसर दिया है। ऐसे छात्रों को डिप्लोमा सरेंडर करना होगा, जिसके बाद वे अपनी डिग्री पूरी कर सकेंगे। एमटेक की पढ़ाई अब अधिकतम 4 वर्ष में पूरी करनी होगी। प्रदेश में करीब 1459 छात्र इस निर्णय से लाभान्वित हो सकते हैं।

इंजीनियरिंग प्रवेश नियमों में भी बदलाव

इंजीनियरिंग में प्रवेश के लिए विषयों की बाध्यता भी कम कर दी गई है। अब 12वीं में निर्धारित 14 विषयों में से कोई भी तीन विषय लेकर उत्तीर्ण छात्र प्रवेश के पात्र होंगे। इन विषयों में फिजिक्स, मैथ्स, केमिस्ट्री, कंप्यूटर साइंस, आईटी, बायोलॉजी, एग्रीकल्चर, बिजनेस स्टडीज और एंटरप्रेन्योरशिप जैसे विकल्प शामिल हैं।

विशेषज्ञ की प्रतिक्रिया

प्रभारी कुलसचिव अमित राजपूत ने कहा कि रिसर्च की गुणवत्ता बनाए रखने के लिए यह निर्णय लिया गया है। जर्नल पब्लिकेशन को लेकर नए मानक लागू किए गए हैं।

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक, मुद्रक व संपादक यशवंत धोटे* द्वारा मिनल पब्लिकेशन एंड प्रोडक्शन प्रा.लि. शेड नं. 74 सेक्टर-सी, उरला इंडस्ट्रीयल एरिया से मुद्रित कर रजबंधा मैदान प्रेस काम्पलेक्स रायपुर से प्रकाशित, समाचार संपादक-संदीप दीवान, RNI NO.CHHHIN/2012/41806
(पीआरबी एक्ट के तहत खबरों के लिए उत्तरदायी) फोन : 0771-3526755, 6262188999, Gmail: navpradesh@gmail.com